राष्ट्रीय दैनिक

प्रातःकिरण

दिल्ली एवं पटना से प्रकाशित

हर खबर पर पकड़

/Pratahkiran /Pratahkiran /Pratahkiran

11 रोहित शर्मा ने पाकिस्तानी फैन को लगाया ...

उद्धव की शिवसेना में फिर सेंध लगाएंगे शिंदे? 6 सांसदों के संपर्क में होने ... 12

वर्ष : 12 | अंक : 60 | पटना, सोमवार, 10 जून, 2024 | विक्रम संवत् 2081 | पेज : 12 | मूल्य ₹ : 03.00 | www.pratahkiran.com

मौसम

अधिकतम तापमान 31°C

न्यूनतम तापमान 25.0°C

हां	30%
नहीं	50%
कह नहीं सकते	10%

बाजार

सोना	59,340
चांदी	55,350
सेंसेक्स	63,327
निफ्टी	18,816

संक्षिप्त खबरें

मणिपुर की राज्यपाल ने मुख्यमंत्री से राज्य में संकट के मामले पर चर्चा की

इंफाल। मणिपुर की राज्यपाल अनुसुइया उइके ने शनिवार को नई दिल्ली में मुख्यमंत्री एन बीरेन सिंह से राज्य पर संकट के मामले पर चर्चा की। गौरतलब है कि असम की सीमा से लगा जिरीबाम जिला मणिपुर संकट का केंद्र बन गया है। संदिग्ध कुकी उग्रवादियों ने पिछले दिनों जिले में दो पुलिस स्टेशनों, सरकारी कार्यालयों और एक अलग समुदाय के घरों को जला दिया था। इंफाल जिरीबाम राजमार्ग पूरे राज्य के लिए बेहद महत्वपूर्ण है। इंफाल से माओ तक जाने वाले दूसरे राजमार्ग पर कुकी उग्रवादियों का नियंत्रण है और राजमार्ग में भटक कर आए 41 से अधिक लोग अभी भी लापता हैं।

दिग्गज उद्यमी रामोजी राव का राजकीय सम्मान के साथ अंतिम संस्कार

हैदराबाद। दिग्गज उद्यमी चेरुकुरी रामोजी राव का रविवार को रामोजी फिल्म सिटी के एमसीटी स्मृतिवनम में पूरे राजकीय सम्मान के साथ अंतिम संस्कार किया गया। श्री राव की अंतिम यात्रा सुबह साढ़े नौ बजे रामोजी फिल्म सिटी स्थित उनके आवास से शुरू हुई। उनके बड़े बेटे किरण प्रभाकर ने सुबह 11:30 बजे चिता को मुखाग्नि दी। वहां मौजूद परिवार के सदस्यों, पूर्व उप राष्ट्रपति एम वेंकैया नायडू, राजनेताओं, फिल्मी हस्तियों, स्टूडियो कर्मचारियों और कनिष्ठ कलाकारों सहित हजारों लोगों ने नम आंखों से श्री राव को अश्रुपूर्ण विदाई दी।

नरेन्द्र डिस्ट्रक्टिव एलाएंसः कांग्रेस ने शपथ ग्रहण से पहले नरेन्द्र मोदी पर साधा निशाना

नई दिल्ली। कांग्रेस ने प्रधानमंत्री पद के लिए नामित नरेन्द्र मोदी के शपथ ग्रहण से पहले रविवार को उन पर निशाना साधा और कहा कि वह नरेन्द्र डिस्ट्रक्टिव एलाएंस (एनडीए) के नेता के तौर पर शपथ लेंगे हालांकि वह सभी वैधता खो चुके हैं। कांग्रेस ने भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) नीत राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन जिसे एनडीए के नाम से जाना जाता है उसी पर नरेन्द्र डिस्ट्रक्टिव एलाएंस नाम गढ़ा है। कांग्रेस नेता जयराम रमेश ने कहा, 28 मई 2023 का वो दिन याद है ? जब नरेन्द्र मोदी सेनगोल के साथ नए संसद भवन में आए थे और जिसके लिए 15 अगस्त 1947 का एक अलग इतिहास गढ़ा गया था।

राष्ट्रपति मुर्मू ने राष्ट्रपति भवन में आयोजित समारोह में दिलाई पद एवं गोपनीयता की शपथ

नरेन्द्र मोदी ने लगातार तीसरी बार ली प्रधानमंत्री पद की शपथ

नई सरकार में मोदी सहित 72 ने ली शपथ, नयी में टीम में युवाओं और अनुभवी नेताओं का संतुलन

प्रात : किरण

नई दिल्ली/एजेंसी। भाजपा के वरिष्ठ नेता नरेन्द्र मोदी ने लगातार तीसरी बार प्रधानमंत्री पद की शपथ ली। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने राष्ट्रपति भवन में रविवार को आयोजित समारोह में उनको पद एवं गोपनीयता की शपथ दिलाई। इसी के साथ मोदी ने पंडित जवाहर लाल नेहरू के लगातार तीन बार प्रधानमंत्री बनने के रिकॉर्ड की बराबरी कर ली है। पंडित नेहरू वर्ष 1952, 1957 एवं 1962 का आम चुनाव जीतकर लगातार तीन बार प्रधानमंत्री बने थे। वहीं मोदी वर्ष 2014 एवं 2019 का आम चुनाव जीतकर क्रमशः पहली एवं दूसरी बार प्रधानमंत्री बने थे। अब उन्होंने तीसरी बार शपथ ली है।

30 कैबिनेट, पांच स्वतंत्र प्रभार और 36 राज्य मंत्रियों का शपथ ग्रहण : प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के मंत्रिमंडल में कुल 30 कैबिनेट मंत्री, पांच स्वतंत्र प्रभार वाले राज्य मंत्री और 36 राज्य मंत्रियों का शपथ ग्रहण पूरा हो गया। अब इन मंत्रियों का पोर्टफोलियो आने वाले दिनों में मिलेगा। मंत्रिमंडल में 20 से अधिक राज्यों के मंत्रियों को जगह दी गई है।

71 सदस्यीय टीम में युवाओं और अनुभवी नेताओं का संतुलन बनाने का प्रयास किया गया है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की कैबिनेट में अमित शाह, राजनाथ सिंह, नितिन गडकरी, शिवराज सिंह चौहान, गजेंद्र सिंह शेखावत, भूपेंद्र यादव, धर्मेंद्र प्रधान, प्रह्लाद सिंह, गिरिराज सिंह, पीयूष गोयल,एस जयशंकर, निर्मला सीतारमण अश्विनी वैष्णव समेत कई मंत्रियों ने कैबिनेट मंत्री के रूप में शपथ ली। धार से सांसद सावित्री ठाकुर, बिलासपुर से सांसद तोखन साहू और मुजफ्फरपुर से सांसद राज भूषण चौधरी ने राज्य मंत्री के रूप में शपथ ली। दुर्गा दास उइके, रक्षा खडसे, सुकांत मजूमदार ने राज्य मंत्री के रूप में शपथ ली। लुधियाना से लोकसभा चुनाव हारने वाले रवनीत सिंह बिट्टू और राज्यसभा सदस्य सतीश दुबे तथा संजय सेठ ने राज्य मंत्री के रूप में शपथ ली। बंडी संजय कुमार, कमलेश पासवान भागीरथ चौधरी ने राज्य मंत्री के रूप में शपथ ली। सुरेश गोपी, राज्यसभा सदस्य एल मुरुगन और अल्मोड़ा के सांसद अजय टम्टा ने राज्य मंत्री के रूप में शपथ ली। गोंडा से सांसद कीर्तिवर्धन सिंह, राज्यसभा सदस्य बी एल वर्मा और बनगांव से सांसद शांतनु ठाकुर ने राज्य मंत्री के रूप में शपथ ली। तेदेपा नेता पेम्मासानी चंद्रशेखर, आगरा के सांसद एसपी सिंह बघेल और बेंगलुरु उत्तर की सांसद शोभा करंदलाजे ने राज्य मंत्री के रूप में शपथ ली। उजियारपुर से सांसद नित्यानंद राय, अपना दल (एस) की नेता अनुप्रिया पटेल, तुमकुरु से सांसद वी सोमन्ना ने राज्य मंत्री के रूप में शपथ ली। कृष्ण पाल, आरपीआई (ए) नेता रामदास आठवले, जद (यू) नेता रामनाथ ठाकुर ने राज्य मंत्री के रूप में शपथ ली। संजय कुमार ने शपथ ली। सुरेश गोपी ने पहली बार केरल में कमल खिलाया है। उन्होंने राज्य मंत्री के तौर पर शपथ ली। अनुप्रिया पटेल, जयंत चौधरी ने मंत्री पद की शपथ ली। प्रताप राव जाधव ने भी मंत्री पद की शपथ ली। अर्जुन राम मेघवाल, जीतेंद्र सिंह, राव इंद्रजीत सिंह, सीआर पाटिल ने शपथ ली। चिराग पासवान ने पहली बार केंद्र में मंत्री पद की शपथ ली। जी किशन रेड्डी ने मोदी सरकार में कैबिनेट मंत्री की शपथ ली। मनसुख मांडवीय, हरदीप पुरी, किरेन रिजिजू ,अन्नपूर्णा देवी, ने मोदी सरकार में कैबिनेट मंत्री की शपथ ली। भ्ज्योतिरादित्य सिंधिया, जुएल ओराम ने मोदी सरकार में मंत्री पद की शपथ ली। प्रह्लाद जोशी, राममोहन नायडू वडॉक्टर वीरेंद्र खटीक ने मंत्री पद की शपथ ली। सबानंद सोनोवाल ने कैबिनेट मंत्री की शपथ ली. वो राज्यसभा सांसद हैं. असम के पूर्व मुख्यमंत्री रहे हैं. 2001 में असम से विधायक बने थे. 2004 में पहली बार लोकसभा पहुंचे। जेडीयू कोटे से राजीव रंजन सिंह उर्फ ललन सिंह ने भी कैबिनेट मंत्री की शपथ ली। जीतन राम मांझी ने मोदी सरकार में कैबिनेट मंत्री की शपथ ली। वो हम पार्टी के अध्यक्ष और बिहार के पूर्व मुख्यमंत्री रह चुके हैं। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे भी शपथ ग्रहण समारोह में शामिल होने पहुंचे हैं। एचडी कुमारस्वामी व मनोहर लाल खट्टर ने मोदी सरकार में ली कैबिनेट मंत्री की शपथ।

शपथ ग्रहण समारोह में शामिल हुए सात पड़ोसी देशों के नेता

शपथ ग्रहण समारोह में नेपाल के प्रधानमंत्री पुष्पकमल दाहाल प्रचंड, बंगलादेश की प्रधानमंत्री शेख हसीना, भूटान के प्रधानमंत्री शेरिंग तोब्गे, श्रीलंका के राष्ट्रपति रानिल विक्रमसिंघे, मालदीव के राष्ट्रपति मोहम्मद मुइज्जू और मॉरीशस के प्रधानमंत्री प्रविन्द जगन्नाथ भी मौजूद रहे। इसके अलावा कार्यक्रम में देशभर के नेता, मुख्यमंत्री, विपक्षी नेता, सांसद, फिल्मी हस्तियां, उद्योगपति, साधु-संत और आमजन मौजूद रहे। उपराष्ट्रपति जगदीप धनकड़, पूर्व राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद, कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे, गठबंधन के सहयोगी दलों के नेता, उद्योगपति मुकेश अंबानी, गौतम अडानी, फिल्म अभिनेता रजनीकांत, शाहरुख खान, अक्षय कुमार, अभिनेत्री रविना टंडन जैसी जानीमानी हस्तियां मौजूद रही। उल्लेखनीय है कि मोदी शुक्रवार को राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग) के संसदीय दल के नेता चुने गए थे। हाल में संपन्न लोकसभा चुनाव में भाजपा-नीत राजग ने 295 सीटें जीती हैं। इसमें भाजपा 240, तेदेपा 16, जदयू 12, शिवसेना (शिंदे गुट) 07, लोजपा (राम विलास) 05, जनसेना पार्टी 02, रालोद- 02,, राकांपा (अजित पवार) 01, अपना दल (एस) 01 और हम (सेकुलर) की 01 सीट शामिल है।

शपथ के बीच लगे मोदी-मोदी के नारे

लोकसभा चुनाव में बहुमत हासिल करने वाले एनडीए के प्रधानमंत्री के तौर पर नरेंद्र मोदी ने आज तीसरी बार शपथ ली। राष्ट्रपति भवन में रखे गए शपथ ग्रहण समारोह में राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने उन्हें पद और गोपनीयता की शपथ दिलाई। शपथ ग्रहण कार्यक्रम में नरेंद्र मोदी सफेद कुर्ता पायजामा और नीले रंग की जैकेट पहनकर राष्ट्रपति भवन पहुंचे। समारोह में पहुंचकर उन्होंने झुककर सभी सांसदों और मेहमानों को नमस्ते किया। प्रधानमंत्री के तौर पर शपथ लेने के लिए जैसे ही नरेंद्र मोदी उठे, मोदी-मोदी के नारों से पूरा समारोह स्थल गूंज उठा। इधर पीएम मोदी शपथ ले रहे थे और उधर मोदी-मोदी के नारे लग रहे थे। शपथ लेने के बाद पीएम मोदी ने हस्ताक्षर किए और राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू को धन्यवाद दिया। इसके बाद पीएम मोदी अपनी सीट पर जाकर बैठ गए।

उनके साथ-साथ एनडीए सरकार की नई कैबिनेट में शामिल होने वाले मंत्रियों को भी शपथ दिलाई गई। दरअसल, प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने देश के पहले प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू के रिकॉर्ड की बराबरी की है। कभी दो सांसदों वाली पार्टी आज इस ऐतिहासिक राष्ट्रपति भवन में लगातार तीसरी सरकार बना रही है और उसके मुखिया पीएम मोदी हैं। आते ही वो सभी का अभिवादन करते हुए मंच पर पहुंच जाते हैं। वहां पहुंचते ही उन्होंने झुककर सबको नमस्ते किया और फिर नरेंद्र दामोदर दास मोदी.. की आवाज गूंजती है।

मोदी 3.0 मंत्रिपरिषद के सदस्य

कैबिनेट मंत्री

1. नरेंद्र मोदी
2. राजनाथ सिंह
3. अमित शाह
4. नितिन गडकरी
5. जेपी नड्डा
6. शिवराज सिंह
7. निर्मला सीतरमण
8. एस जयशंकर
9. मनोहर लाल खट्टर
10. एचडी कुमारस्वामी
11. पीयूष गोयल
12. धर्मेंद्र प्रधान
13. जीतनाराम मांझी
14. राजीव रंजन उर्फ ललन सिंह
15. सवार्नंद सोनेवाल
16. डॉक्टर वीरेंद्र कुमार
17. राम मोहन नायडू
18. प्रह्लाद जोशी
19. जुएल ओरांव
20. गिरिराज सिंह
21. अश्विनी वैष्णव
22. ज्योतिरादित्य सिंधिया
23. भूपेंद्र यादव
24. गजेंद्र सिंह शेखावत
25. अन्नपूर्णा देवी
26. किरण रिजिजू
27. हरदीप पुरी
28. मनसुख मांडविया
29. जी किशन रेड्डी
30. चिराग पासवान
31. सीआर पाटिल

राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) :

32. राव इंद्रजीत सिंह
33. जितेंद्र सिंह
34. अर्जुन राम मेघवाल
35. प्रतापराव गणपतराव जाधव
36. जयंत चौधरी

राज्य मंत्री :

37. जितिन प्रसाद
38. श्रीपद यशो नाइक
39. पंकज चौधरी
40. कृष्णपाल गुर्जर
41. रामदास अठावले
42. रामनाथ ठाकुर
43. नित्यानंद राय
44. अनुप्रिया पटेल
45. वी सोमन्ना
46. चंद्रशेखर पेम्मासानी
47. एसपी सिंह बघेल
48. शोभा करांदलाजे
49. कीर्तिवर्धन सिंह
50. बीएल वर्मा
51. शांतनु ठाकुर
52. सुरेश गोपी
53. एल मुरगन
54. अजय टमटा
55. बंदी संजय
56. कमलेश पासवान
57. भागीरथ चौधरी
58. सतीश दुबे
59. संजय सेठ
60. रवनीत सिंह बिट्टू
61. दुगार्दास सुइके
62. रक्षा खडसे
63. सुकांता मजूमदार
64. सावित्री ठाकुर
65. तोखन साहू
66. राजभूषण चौधरी
67. श्रीपति वर्मा/ श्रीनिवास वर्मा नरसापुरम
68. हर्ष मल्होत्रा
69. नीमूबेन बमभानिया
70. मुरलीधर मोहोल
71. जॉर्ज कुरियन
72. पबित्रा मार्गेरिटा

नरेंद्र मोदी की केंद्र सरकार में बिहार के आठ सांसद बने मंत्री

भाजपा से चार, जदयू से दो ! लोजपा रामबिलास व हम सेक्यूलर से एक-एक

प्रात : किरण

पटना। नरेंद्र मोदी ने लगातार तीसरी बार पीएम पद की शपथ ली। बिहार से आठ सांसदों को भी मंत्री बनाया गया। बीजेपी से चार, जदयू से दो, एलजेपी (रामविलास) से एक और हम पार्टी के इकलौते सांसद जीतन राम मांझी शामिल हैं। मंत्री पद की शपथ लेने वालों में बीजेपी से गिरिराज सिंह, नित्यानंद राय, सतीश चंद्र दुबे और राजभूषण चौधरी हैं। इसमें गिरिराज सिंह और नित्यानंद राय पहले भी मंत्री थे, जबकि सतीश चंद्र दुबे और राजभूषण चौधरी को पहली बार मौका मिला है।

जेडीयू से पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष ललन सिंह और उनकी पार्टी से राज्यसभा सांसद रामनाथ ठाकुर को मंत्री पद मिला। इसके अलावा पूर्व सीएम जीतनराम मांझी और लोजपा (रामविलास) के राष्ट्रीय अध्यक्ष चिराग पासवान भी शामिल रहे। बिहार के सांसदों के मंत्री बनाए जाने में कास्ट और एरिया का भी खास ख्याल रखा गया। ललन सिंह, जीतनराम मांझी, चिराग पासवान, गिरिराज सिंह ने जहां कैबिनेट मंत्री बनाया गया है। वहीं, नित्यानंद राय, रामनाथ ठाकुर, सतीश चंद्र दुबे राजभूषण चौधरी निषाद को राज्यमंत्री बनाया गया है। भाजपा की बात करें तो, पिछली सरकार

मंत्री रहे गिरिराज सिंह, नित्यानंद राय एक बार फिर मोदी मंत्रिमंडल में जगह मिली हैं। दोनों भाजपा के कद्दावर नेता हैं और मोदी-शाह के बेहद करीबी माने जाते हैं। वहीं, सतीश चंद्र दुबे और राजभूषण चौधरी निषाद को भी मोदी मंत्रिमंडल में जगह मिली है, दोनों को राज्यमंत्री बनाया गया है। लोजपा (रामविलास) से चिराग पासवान ने कैबिनेट मंत्री की शपथ ली है। मोदी 3.0 में लोजपा से वह एक मात्र केंद्रीय मंत्री बनाए गए हैं। वहीं, हिंदुस्तान आवाम मोर्चा के एकमात्र सांसद जीतनराम मांझी को भी कैबिनेट मंत्री बनाया गया है।

बिहार में सामजिक समीकरण का रखा गया ख्याल

तीन सवर्ण, दो दलित, दो पिछड़ा व एक अतिपिछड़ा को जगह

बिहार के सांसदों के मंत्री बनाए जाने में जाति और एरिया का भी खास ख्याल रखा गया। गिरिराज सिंह पिछली सरकार में भी मंत्री थे और मोदी 3.0 में उनको जगह मिली है। बिहार बीजेपी के हिन्दू फेस माने जाते हैं। बेगूसराय सीट से जीते गिरिराज सिंह भूमिहार जाति (सवर्ण) से आते हैं। मोदी की पिछली सरकार में भी नित्यानंद राय मंत्री थे और इस बार भी मोदी मंत्रिमंडल में उन्हें जगह मिली थी। अमित शाह के जूनियर के तौर पर पिछली सरकार में काम करने वाले नित्यानंद राय उजियारपुर से चुनाव जीते हैं और यादव जाति (पिछड़ी) से आते हैं। कास्ट सर्वे में दावा किया गया था कि बिहार में सबसे ज्यादा आबादी यादव जाति की है। वाल्मीकिनगर से ताल्लुक रखने वाले सतीश चंद्र दुबे बीजेपी के राज्यसभा सांसद हैं। तीन बार के विधायक रहे सतीश 2014 में सांसद बने और 2019 में टिकट कटा तो भारी बवाल हुआ था। बाद में राज्यसभा सदस्य बने और इस बार मंत्री बनाया गया। बिहार में ब्राह्मण चेहरे के तौर पर बीजेपी प्रमोट करना चाहती है। मुजफ्फरपुर से पहली सांसद बने राजभूषण चौधरी की तो लॉटरी लग गई। अब उन्होंने केंद्रीय मंत्री पद की शपथ भी ले ली। बीजेपी ने अपने मौजूदा सांसद अजय निषाद का टिकट काटकर राजभूषण चौधरी पर दांव लगाया था। राजभूषण निषाद जाति (मल्लाह) से ताल्लुक रखते हैं। नीतीश कुमार की पार्टी जेडीयू के राष्ट्रीय अध्यक्ष रहे ललन सिंह ने मुंगेर से चुनाव जीता है। लंबा राजनीतिक अनुभव रहा है। वो भूमिहार जाति से ताल्लुक रखते हैं और जेडीयू के सवर्ण चेहरे के तौर पर पहचान रखते है। इन्हें भी मोदी मंत्रिमंडल में जगह मिली है। जेडीयू के राज्यसभा सांसद रामनाथ ठाकुर केंद्रीय मंत्री बने हैं। ये पूर्व मुख्यमंत्री कपूर्री ठाकुर के बेटे हैं, जिन्हें हाल ही में भारत रत्न से मोदी सरकार ने नवाजा है। रामनाथ ठाकुर को लालू यादव ने दो-दो बार एमएलसी बनाया था। बाद में नीतीश कुमार ने उन्हें राज्यसभा भेज दिया। अब मोदी सरकार में मंत्री भी बन गए। नाई जाति (अति पिछड़ा) से आने वाले रामनाथ ठाकुर समस्तीपुर जिले से आते हैं। बिहार के पूर्व मुख्यमंत्री जीतन राम मांझी गया लोकसभा सीट से सांसद बने हैं। उनकी अपनी खुद की पार्टी है और अपनी पार्टी से इकलौते सांसद हैं। उनका बेटा बिहार की नीतीश सरकार में मंत्री है और खुद अब मोदी सरकार में मंत्री बन गए। जीतन राम मांझी मुसहर जाति (अनुसूचित जाति) से ताल्लुक रखते हैं। बिहार में रामविलास पासवान की विरासत अब चिराग पासवान के पास पूरी तरह आ गई है। चिराग ने पारंपरिक सीट हाजीपुर से जीत दर्ज की। इसके अलावा अपनी कोटे की सभी पांचों सीटें भी जीती। चिराग पासवान खुद को दुसाध जाति (अनुसूचित) से जोड़ते हैं।

परिणाम आईआईटी मद्रास ने 14 दिन में रिजल्ट किया घोषित, द्विजा पटेल बनी गर्ल्स टॉपर

जेईई-एडवांस्ड परीक्षा का परिणाम घोषित, वेद लाहोटी बने ऑल इंडिया टॉपर

प्रात : किरण

नई दिल्ली/कोटा/एजेंसी। आईआईटी मद्रास का 26 मई को हुई जेईई-एडवांस्ड परीक्षा का परिणाम मात्र 14 दिन बाद रविवार 9 जून को घोषित कर दिया। इस परीक्षा में 1,91,283 विद्यार्थियों को पंजीकृत किया गया था। इस बार 48,248 विद्यार्थियों को आईआईटी संस्थानों में प्रवेश के लिये क्वालिफाई घोषित किया गया है। उत्तीर्ण होने वाले विद्यार्थियों में 40,284 छात्र एवं 7964 छात्राएं हैं। आईआईटी मद्रास के जारी परिणामों में ऑल इंडिया मेरिट सूत्री में इस वर्ष एलन कोटा के कोचिंग छात्र व इंदौर निवासी वेद लोहाटी ने ऑल इंडिया रैंक में टॉप किया। लोहाटी ने 360 में से सर्वाधिक 355 अंक हासिल किये है। गर्ल्स केटेगरी में छात्रा द्विजा धर्मेश कुमार पटेल टॉपर रही, जिसने 360 में से 322 अंक हासिल किए हैं। मुख्य मेरिट सूची में रैंक-2 पर आदिल, रैंक-3 पर भोगलपल्ली संदेश, रैंक-4 पर रिथम केडिया, रैंक-5 पर पुट्टी कुशल कुमार, रैंक-6 पर राजदीप मिश्रा, रैंक-7 पर द्विजा पटेल, रैंक-8 पर कोडुरी तेजेश्वर, रैंक-9 पर धुवी हेमंत दोषी, रैंक-10 पर अल्लादा बोना सिद्विक सुहास सफल रहे। उल्लेखनीय देश के 23 आईआईटी संस्थानों में गत वर्ष 17,385 सीटें थी, जिसमें से 13,918 पर छात्रों को एवं 3422 पर छात्राओं को प्रवेश दिया गया था। इस वर्ष 10 प्रतिशत सीटें बढ़ने की उम्मीद है। याद दिला दें कि जेईई-मेन से इस वर्ष 2.50 लाख शीर्ष परीक्षार्थियों को

जेईई-एडवांस्ड के लिये क्वालिफाई घोषित किया गया था, लेकिन इनमें से 60 हजार इस कठिन प्रवेश परीक्षा में शामिल नहीं हुये। जेईई-एडवांस्ड का रिजल्ट घोषित होने पर कोचिंग संस्थानों में विद्यार्थियों एवं शिक्षकों ने ढोल पर झूमते हुये सफलता का जश्न मनाया। जोसा काउंसलिंग 10 जून से-कॅरियर काउंसलिंग एक्सपर्ट अमित आहूजा के अनुसार, आईआईटी एवं एनआईटी संस्थानों में प्रवेश के लिए जोसा काउंसलिंग 10 जून से प्रारम्भ होगी। यह काउंसलिंग 10 जून से 26 जुलाई के मध्य 5 राउंड में पूरी होगी। काउंसलिंग में सफल विद्यार्थियों को 23 आईआईटी, 32 एनआईटी, 26 ट्रिपलआईटी एवं 40 जीएफटीआई सहित 121 संस्थानों की 600 से अधिक कॉलेज व ब्रांचेज को अपनी रैंक के अनुसार प्राथमिकता के घटते क्रम में भरना है।

मैथ्स का हर सवाल हल करना पसंद है : वेद लाहोटी

एलन कॅरियर इंस्टीट्यूट के क्लासरूम छात्र वेद लाहोटी ने जेईई-एडवांस्ड का रिकॉर्ड ब्रेक करने की जिद की और उसे पूरा कर दिखाया। उसने 360 में से 355 अंक प्राप्त कर रैंक-1 हासिल की है। जेईई-मेन में उसने 300 में से 295 अंक अर्जित कर एआईआर-119 प्राप्त की है। कक्षा-10वीं 98.6 प्रतिशत और कक्षा-12वीं में 97.6 प्रतिशत प्राप्तांक से उसने अपनी योग्यता को साबित किया। वेद हर बात का तार्किक जवाब लेने में विश्वास रखता है। जेईई-एडवांस्ड में दो सवाल गलत हुए हैं तो उसने चुनौती दी कि ये कैसे गलत हुए। उसकी मां जया गृहिणी और पिता योगेश लाहोटी रिलायंस जीओ में कंस्ट्रक्शन मैनेजर हैं। वेद ने बताया कि मुझे मैथ्स में हर सवाल हल करना पसंद है। उसे शतरंज व क्रिकेट खेलने का शौक है। उसे मां जया और नाना आर सी सोमानी ने आगे बढ़ने के लिये प्रेरित किया। वह कोटा में पढ़ना चाहता था। उसने इंदौर से कक्षा-10 पास करके कोटा में जेईई की तैयारी की और कीर्तिमान बनाने में सफल रहा।

नीट परीक्षा ने 24 लाख से ज्यादा बच्चों के परिवार को तोड़ दिया है: राहुल

नई दिल्ली/एजेंसी। कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने मेडिकल प्रवेश के लिए होने वाली नीट परीक्षा में धांधली को पेपर लीक माफिया के साथ मिलीभगत बताया है और कहा है कि लाखों बच्चों का जीवन बर्बाद करने वाले इस माफिया तंत्र को खत्म करने का कांग्रेस ने संकल्प लिया है। श्री गांधी ने रविवार को कहा, नरेंद्र मोदी ने अभी शपथ भी नहीं ली है और नीट परीक्षा में हुई धांधली ने 24 लाख से अधिक स्टूडेंट्स और उनके परिवारों को तोड़ दिया है। एक ही एग्जाम सेंटर से 6 छात्र मैक्सिमम मार्क्स के साथ टॉप कर जाते हैं, कितनों को ऐसे मार्क्स मिलते हैं जो टेक्निकली संभव ही नहीं है, लेकिन सरकार लगातार पेपर लीक की संभावना को नकार रही है। उन्होंने कहा, शिक्षा माफिया और सरकारी तंत्र की मिलीभगत से चल रहे इस पेपर लीक उद्योग से निपटने के लिए ही कांग्रेस ने एक रोबस्ट प्लान बनाया था। हमने अपने मैनिफेस्टो में कानून बना कर छात्रों को पेपर लीक से मुक्ति दिलाने का संकल्प लिया था।

मोदी मंत्रिमंडल में कुल सात महिला मंत्री, तीन पहली बार

प्रात : किरण

नई दिल्ली/एजेंसी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अगुवाई में लगातार तीसरी बार बनी एनडीए सरकार के मंत्रिमंडल में सात महिला मंत्रियों को जगह मिली है। प्रधानमंत्री ने पूर्व वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण पर एक बार फिर भरोसा दिखाया है। सीतारमण के अलावा पूर्व राज्यमंत्री अन्नपूर्णा देवी, उत्तर प्रदेश से निर्वाचित अनुप्रिया पटेल और कर्नाटक से निर्वाचित शोभा करंदलाजे को एक बार फिर मंत्रिमंडल में शामिल किया गया है। पहली बार मंत्री बनने वाली महिला नेताओं में 37 वर्षीय रक्षा निखिल खड़से का नाम भी शामिल है। इनकी चर्चा इसलिए भी हो रही है क्योंकि ये इस कैबिनेट में सबसे युवा महिला मंत्री हैं। इनके अलावा सावित्री ठाकुर और नीमू बेन बंभानिया को भी मंत्रिमंडल में शामिल किया गया है। पूर्व वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण पर प्रधानमंत्री मोदी ने एक बार फिर भरोसा दिखाया है। उन्हें एक बार फिर कैबिनेट मंत्री के रूप में मंत्रिपरिषद में शामिल किया गया है।

संक्षिप्त खबरें

तख्तश्री कमेटी के प्रवक्ता बने सदस्य हरपाल सिंह जौहर

पटना सिटी। प्रबंधक कमेटी, तख्तश्री हरिमंदिर जी पटना साहिब के सदस्य हरपाल सिंह जौहल को प्रवक्ता मनोनीत किया गया है। इस संबंध में कमेटी के कनीय उपाध्यक्ष गुरुविंदर सिंह ने पत्र जारी करते हुए कहा कि प्रेस मीडिया या साध संगत को जानकारी देने के लिए श्री जौहल को प्रवक्ता नियुक्त किया गया है। रविवार के बाद से कोई भी औपचारिक जानकारी देने के लिए वह तख्तश्री कमेटी की ओर से अधिकृत किए गए हैं। यह जानकारी आठ जून को तपस 19/279/24 जारी कर दी गई। बाद में कनीय उपाध्यक्ष ने कहा कि सुदीप सिंह मीडिया प्रभारी की जिम्मेदारी पूर्व की तरह संभालते रहेंगे।

नरेन्द्र मोदी को पीएम की शपथ लेने पर बिहटा में लोगों ने मनाई खुशी

बिहटा - देश मे नरेन्द्र मोदी को तीसरी बार पीएम की शपथ लेने पर भाजपा कार्यकर्ताओ मे खुशी की लहर है बिहटा में कार्यकताओं ने एक दूसरे को रंग-अबीर लगाकर व मिठाई खिलाकर खुशी का इजहार किया । मौके पर भाजपा नेता वा अम्बेडकर कल्ब बिहार संयोजक राम प्रवेश यादव ने कहा कि देश की जनता एनडीए को सरकार बनाने के लिए अपना समर्थन दिया । मोदी जी तीसरी बार पीएम की कुर्सी संभालकर भाजपा को सम्मान बढाया । केन्द्र सरकार अपनी चुनावी घोषणा को लागू कर जनता को लाभ पहुंचायेगा । मोदी जी चार बार मुख्यमंत्री एव तीन बार पीएम की शपथ ली है । मोदी जी के प्रति देश की जनता भरोसा जताया इसलिए इस देश की विकाश होने की संभावना है । भाजपा नेता ने कहा कि काग्रेस नै भी मल्लिकार्जुन खरगे को सदस्यीय दल के नेता नही बनाकर दलित को अपमानित गया गया। मौके पर भाजपा नेता राम प्रवेश यादव , मनोज सिंह, देवानन्द सिंह, अशोक सिंह, आनंद मोहन दूबे, रविन्द्र सिंह , पूर्व मुखिया सहदेव यादव विपीन यादव, नरेन्द्र यादव व भाजपा संगठन के मंडल अध्यक्ष- मनोज सिंह समेत कई लोग मौजूद थे ।

तीसरी बार मोदी का नेतृत्व विकसित भारत के संकल्प को पूरा करने वाला होगा

पटना सिटी, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में लगातार तीसरी बार केंद्र में सरकार बनाने पर भाजपा कार्यकताओं में गजब का उत्साह रविवार को देखा गया। शहीद भगत सिंह चौक पर भाजपा कार्यकताओं ने आम लोगों के बीच लड्डू बांट कर और फुलझड़ी छोड़ कर खुशियां मनाई। कार्यक्रम का नेतृत्व विनय केसरी, राजेश साह व प्रदीप काश ने किया। कार्यक्रम में महापौर श्रीमती सीता साहू, दिनेश पटेल, संजय सिंह, लल्लू शर्मा, टिंकू राउत, सरपंच हरेंद्र यादव, नवल किशोर सिन्हा, विनय कुमार, सुनीता गुप्ता, दिलीप चौधरी, स्मिता रानी, अनिता शर्मा, मधु जी, निशा मेहता, मनोज यादव, अनिता पांडेय, सुरेश सिंह पटेल, संजीव पटवा आदि ने भाग लिया। वक्ताओं ने कहा कि नरेंद्र मोदी समाज के हर वर्ग के सर्वांगीण विकास के लिए कार्य कर रहे हैं। युवा, महिला, किसान, छात्रों, दलित, पिछड़ा, अल्पसंख्यक के उत्थान के लिए अनेक योजनाओं को जमीनी स्तर पर कार्यान्वित किया गया है। आलमगंज के पठान टोली स्थित जदयू अल्पसंख्यक प्रकोष्ठ के उपाध्यक्ष सह प्रवक्ता मो शहजाद के नेतृत्व में जदयू कार्यकताओं ने खुशी में मिठाइयां बांटी और बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने जिस तरह इंडी गठबंधन से ऑफर मिलने के बाद इस पद को ठुकराते हुए एनडीए की सरकार में शामिल हुए हैं, उसकी सराहना है। वह चुनाव प्रचार के दौरान भी कहते रहे हैं कि वह अब इधर-उधर जाने वाले नहीं हैं। मौके पर जदयू नेता मो फिरोज खान, मो कलाम, मो अली मंसूर हुसैन, रजी काली, नियाज खान, मो साजिद, मो चांद आदि उपस्थित थे।

पंथ सेवक जत्था ने याचिका वापस लेने को पत्र भेजा

पटना सिटी, पटना साहिब पंथ सेवक जत्था के अध्यक्ष चरणजीत सिंह ने कमेटी के सदस्य महेंद्रपाल सिंह ढिल्लन को पत्र लिख कर लंबित चुनाव को लेकर पटना उच्च न्यायालय मे दायर याचिका को वापस लेने का आग्रह किया है। श्री ढिल्लन को लिखे पत्र में श्री चरणजीत ने कहा है कि याचिका में असंगति और विरोधाभास है। मतदाता सूची की निष्पक्ष और न्यायासंगत तरीके से निवार्ची पदाधिकारी सह अनुमंडल पदाधिकारी के पर्यवेक्षण में तैयार किया गया है। पत्र में पंथ के अध्यक्ष ने अनेक बिंदुओं को रेखांकित भी किया है। अध्यक्ष की ओर से निर्गत पत्र के बाद तख्त साहिब की राजनीति हलचल बढ़ गयी है।

एम्स पटना ने मानव स्वास्थ्य पर जलवायु परिवर्तन का प्रभाव विषय पर कार्यक्रम का किया आयोजन

प्रात :किरण संवाददाता

पटना। एम्स पटना के आपातकालीन चिकित्सा विभाग ने रविवार को ह्मानव स्वास्थ्य पर जलवायु परिवर्तन का प्रभावह्व विषय पर ध्यान केंद्रित करते हुए एक सीएमई कार्यक्रम सफलतापूर्वक आयोजित किया। इस कार्यक्रम में जलवायु परिवर्तन और मानव स्वास्थ्य के महत्वपूर्ण अंतरसंबंधों पर प्रकाश डालते हुए व्यावहारिक प्रस्तुतियाँ और चचाएँ हुईं। सीएमई में एम्स पटना के कार्यकारी निदेशक, प्रो. (डॉ.) गोपाल कृष्ण पाल, डीन एकेडमिक्स डॉ. प्रेम कुमार और चिकित्सा अधीक्षक प्रो. अनुप कुमार उपस्थित थे। कार्यक्रम का मुख्य आकर्षण ह्मानव स्वास्थ्य पर जलवायु परिवर्तन का प्रभावह्व विषय पर सहायक प्रोफेसर डॉ. सुनील कुमार की व्यापक प्रस्तुति थी। डॉ. कुमार ने लंबे समय तक उच्च तापमान और कम वायु गुणवत्ता के प्रतिकूल प्रभावों पर जोर दिया। उन्होंने विस्तार से बताया कि कैसे बढ़ते तापमान से जल-जनित और वायु-जनित बीमारियों का खतरा बढ़ जाता है, जो कैंसरजन्य परिणामों और बहु-अंग प्रभावों सहित गंभीर स्वास्थ्य स्थितियों को जन्म दे सकता है। इन मुद्दों को कम करने के लिए, पेड़ लगाना और उनकी रक्षा करना, ऊर्जा की खपत को कम करना, भोजन की बबार्दी को कम करना, कम खरीदना और रीसाइक्लिंग जैसे कई कार्रवाई योग्य कदमों पर अधिक चर्चा की गई। आपातकालीन चिकित्सा विभाग के प्रमुख डॉ. दिवेन्दु भूषण ने विभिन्न गतिविधियाँ करके विश्व पर्यावरण माह मनाने के लिए एक बड़ा कदम उठाने के लिए कार्यकारी निदेशक और सीईओ को एक पौधा भेंट किया। निदेशक, प्रोफेसर (डॉ.) गोपाल कृष्ण पाल ने पर्यावरणीय स्थिरता को बढ़ावा देने और जलवायु से संबंधित स्वास्थ्य मुद्दों के बारे में जागरूकता बढ़ाने के लिए संस्थान की प्रतिबद्धता दोहराई। उन्होंने पर्यावरण परिवर्तन और इसके प्रति मानव की अनुकूलनशीलता के क्षेत्र में अनुसंधान को बढ़ावा देने का वादा किया।कार्यक्रम शुरू होने से पहले, डॉ. दिवेन्दु भूषण द्वारा एक अभिनव विचार शुरू किया गया, जिन्होंने उपस्थित लोगों को एम्स पटना को हरा-भरा बनाने के तरीके सुझाने के लिए प्रोत्साहित किया। सुझावों में शामिल हैं: *परिसर के भीतर आवागमन के लिए साइकिल का उपयोग। * अधिक पेड़ लगाने के लिए खाली भूमि का उपयोग करें। * एयर कंडीशनिंग का उपयोग कम से कम करें। *सौर ऊर्जा के उपयोग को बढ़ावा दें। * जमीन के छोटे-छोटे टुकड़ों का उपयोग करके आवासीय क्षेत्रों में उद्यान बनाएं। * अपशिष्ट प्रबंधन और फर्नीचर रीसाइक्लिंग पहल को लागू करें। * आधिकारिक कार्यों के लिए दस्तावेजीकरण प्रक्रियाओं को डिजिटाइज करें। * कैंपस में इलेक्ट्रिक वाहन पेश करें। * कर्मचारियों और छात्रों के बीच कारपूलिंग को प्रोत्साहित करें। * डिस्पोजेबल वस्तुओं को पुनः प्रयोज्य विकल्पों से बदलें। * छात्रावासों के लिए केंद्रीकृत एयर कंडीशनिंग सिस्टम स्थापित करें। * सीएफसी-आधारित एयर कंडीशनर और रेफ्रिजरेटर का उपयोग कम करें। * प्लास्टिक बैग के हानिकारक प्रभावों के बारे में जागरूकता बढ़ाएं और दैनिक उपयोग की वस्तुओं से इन्हें हटाने के लिए प्रोत्साहित करें। * बायोडिग्रेडेबल उत्पाद का उपयोग लागू करें। * कागज की बबार्दी कम करने के लिए ई-पेपर सिस्टम अपनाएं। * प्लास्टिक का उपयोग चरणबद्ध तरीके से बंद करें और परिसर के भीतर वृक्षारोपण बढ़ाएं। कार्यक्रम का समापन डॉ. विशाल वैभव के धन्यवाद प्रस्ताव के साथ हुआ। एम्स पटना पर्यावरणीय स्वास्थ्य को चिकित्सा शिक्षा और अभ्यास में एकीकृत करने में उदाहरण के रूप में अग्रणी बना हुआ है, जिसका लक्ष्य स्वस्थ और अधिक टिकाऊ है

क्रिश इलेवन 13 रन से डेविल इलेवन को हरा फाइनल जीता

पटना सिटी, प्रात :किरण संवाददाता

स्व विश्वम्भर नाथ यादव मेमोरियल 20-20 टूनार्मेंट का फाइनल मैच मनोज कमलिया स्टेडियम में खेला गया। टॉस जीत पहले बैटिंग करते हुए समयाभाव के कारण निर्धारित 14 ओवर में क्रिश इलेवन कुल 118 रन बनाए। इसमें प्रमुख रूप से किशु का योगदान 58 रन का रहा। डेविल इलेवन की ओर से 18 रन देकर सबसे ज्यादा चार विकेट विशाल ने लिए। इसके साथ ही यासीन और सौरभ ने दो-दो विकेट लिए। क्रिश इलेवन के 118 रन के जवाब में डेविल इलेवन ने 13 ओवर तीन गेंद में महज 105 रन ही बना पाया। फिर भी उसके गेंदबाज क्रिश को पांच विकेट लेने के लिए मैन ऑफ द मैच घोषित किया गया। मैन ऑफ द टूनार्मेंट का पुरस्कार अवधेश यादव को प्राप्त हुआ। खिलाड़ियों के बीच पुरस्कार वितरण बिहार क्रिकेट एसोसिएशन के वित्त सचिव राकेश कुमार यादव, समाजसेवी विजय कु बप्पी एवं अजय कु दीनदयाल ने किया। इस अवसर पर राजेश राय, मोहम्मद जावेद, बलराम चौधरी, अभय कुमार अतुल, प्रफुल्ल पांडेय, आदित्य राज, अखिलेश यादव, राहुल कुमार, कुणाल राणा, नीतीश कुमार, निर्मला देवी एवं विजय कुमार सिंह आदि उपस्थित रहे। फाइनल मैच में सर्वेश हंसराज एवं नीतीश कुमार ने अंपायरिंग की, वहीं राजू पटेल एवं मनीष कुमार की कमेंट्री का दर्शकों ने खूब लुत्फ उठाया।

लूटपाट करने वाले 4 लुटेरे को गिरफ्तार किया गया

प्रात :किरण संवाददाता

दानापुर। नगर के रूपसपुर थाना क्षेत्र के अंतर्गत खगौल दीघा रोड में बाहर से आ रहे यात्रियों को ऑटो में चाकू की नोंक पर लूटपाट कर रुपए व अन्य कीमती वस्तुए लूटने वाले 4 लुटेरे को रूपसपुर पुलिस ने गिरफ्तार किया है। लुटेरे के पास से लूटी हुई रकम भी बरामदगी के साथ एक ऑटो भी जब्त की गई है। जानकारी देते हुए थानाध्यक्ष रणविजय कुमार ने बताया कि विगत 8 जून को दूसरे राज्यों से अपने घर लौट रहे विभिन्न जिलों के रहने वाले अमन सरदार, पवन कुमार सरदार, मनोज कुमार मंडल दानापुर स्टेशन से मीठापुर बस स्टैंड जाने के लिए रात्रि 10 बजे एक ऑटो पकड़ा। पहले से ही उस ऑटो में तीन लोग बैठे हुए थे। ऑटो चालक व उसके तीन सहयोगियों ने रास्ते में दीघा खगौल नहर के पीलर नंबर 230 के पास चाकू की नोंक पर उनसे 15 हजार नगद लूट लिए। इस संबंध में पीड़ित परछिलवा थाना मिरचया जिला सिरहा (नेपाल) का रहने वाले अमन सरदार बदमाशों के खिलाफ मामला दर्ज कराया था। पुलिस संज्ञान लेते हुए एक पुलिस टीम गठीत कर , घटनास्थल से कुछ दूरी पर ऑटो चालक को हिरासत में लिया। कड़ाई से पूछताछ करने पर उसने घटना में शामिल तीन अन्य लोगों का नाम बताया। जिसके बाद तीनों आरोपितों को विभिन्न जगहों से गिरफ्तार कर लिया। जिनके पास से लूटी हुई 5200 रुपए, चाकू बरामदगी के साथ वारदात में शामिल ऑटो को जब्त किया गया है। थानाध्यक्ष ने बताया कि गिरफ्तार आरोपित कौशल नगर हवाई अड्डा निवासी लक्ष्मण पासवान, आशियाना खाजपुरा के रौशन कुमार, न्यू सबजपुरा फुलवारीशरीफ के छोटू कुमार और आशियाना बेऊर के रहने वाले मनीष यादव है। जिन्हे पूछताछ व उचित कानूनी कार्रवाई करते हुए न्यायिक हिरासत में भेज दिया गया है।

जिला ताइक्वांडो चैंपियनशिप के आयोजन से बढ़ेगा बिहार के खिलाड़ियों का मनोबल : सीता साहू

पटना सिटी, प्रात :किरण संवाददाता

पटना ताइक्वांडो एसोसिएशन द्वारा आयोजित 29वीं जिला ताइक्वांडो चैंपियनशिप के पुरस्कार वितरण का आयोजन मंगल तालाब स्थित पाटलिपुत्र परिषद में किया गया।मुख्य अतिथि महापौर श्रीमती सीता साहू एवं भाजपा क्रीड़ा प्रकोष्ठ के प्रदेश संयोजक सतीश राजू ने सामूहिक रूप से खिलाड़ियों को पुरस्कृत किया। महापौर श्रीमती साहू ने कहा कि जिला ताइक्वांडो संघ द्वारा आयोजित चैंपियनशिप से प्रदेश के ताइक्वांडो खिलाड़ियों को उचित प्लेटफार्म प्रदान होगा और वह अपने खेल का बेहतरीन प्रदर्शन कर पाएंगे।

श्री राजू ने कहा की पटना ताइक्वांडो एसोसिएशन द्वारा आयोजित 29 वीं इस चैंपियनशिप से पटना सहित प्रदेश के खिलाड़ियों को एक प्लेटफार्म प्रदान हुआ है, जिससे वे अपने हूनर को समाज के सामने दिखा सकें और अपने खेल का उत्कृष्ट प्रदर्शन कर सकें। इस दौरान भाजपा क्रीड़ा प्रकोष्ठ के कोषाध्यक्ष विकास सिंह, अनुज कुमार, संजीव कुमार मेहता, कुमार कर्मवीर, रविश रमण, रॉकी कुमार, कुमार धर्मवीर, शुभम कुमार, रिषिकेश कुमार, उत्पल कान्त, नंद किशोर कुशवाहा, रोहित प्रकाश सहित अनेक कार्यकर्ता एवं खिलाड़ी उपस्थित थे।

परिणाम में पूमसे इवेंट्स सब-जूनियर गर्ल्स गोल्ड आराध्या गौतम, सिल्वर अरिका, गोल्ड झ आराध्या गौतम (सीटीसी), गोल्ड कलर बेल्ट आरोही शर्मा (सीटीसी), कैडेट गर्ल्स कलर बेल्ट गोल्ड पाखी मौर्या, सिल्वर प्रथम कृतिका (सीटीसी), सिल्वर द्वितीय मुस्कान सिल्वर, जूनियर गर्ल्स वाइट बेल्ट गोल्ड अदिति राज, सिल्वर अनिका कुमारी, कांस्य श्रेया कुमारी, जूनियर गर्ल्स कलर बेल्ट गोल्ड भूमि कुमारी, सिल्वर श्रेया राज, सीनियर गर्ल्स गोल्ड शान्या कुमारी, सिल्वर जैनब अली, पूमसे कैडेट ब्वायज वाइट बेल्ट गोल्ड कार्तिकेय शिवांशु, कैडेट ब्वायज कलर बेल्ट गोल्ड मिहिर कुमार, सब-जूनियर ब्वायज गोल्ड अंश राज (सीटीसी), सीनियर ब्वायज गोल्ड रणवीर सिंह, कैडेट बॉयज यू -41किलो गोल्ड हर्षवर्धन, सिल्वर अरिहंत(सीटीसी), यू48 किलो गोल्ड राज वर्धन शर्मा, यू 56 किलो गोल्ड आदित्य कुमार, सिल्वर कृष राज, कांस्य मयंक शर्मा (सीटीसी) कैडेट गर्ल्स यू 44 किलो गोल्ड आर्या राज (सीटीसी), सब-जूनियर गर्ल्स यू 24-26 किलो गोल्ड आशी केशव, सिल्वर आरोही शर्मा, कांस्य अंशिका रॉय, यू 29-32 किलो गोल्ड ऋषिका कुमारी (सीटीसी), सिल्वर भूमि कुमारी (एसटीए), कांस्य वीरांगना कुमारी (एसटीसी), यू 38 किलो गोल्ड मनीषा कुमारी (एसटीसी), सिल्वर सुगनी कुमारी (सीटीसी), कांस्य सिद्धि कोठारी (सीटीसी)।

आग से बचाव कैसे करें को लेकर अग्निशमन की टीम ने कार्यालय से जागरूकता रैली निकाली

प्रात :किरण संवाददाता

दानापुर नगर के अंतर्गत गाभतल स्थित। गर्मी में विभिन्न क्षेत्रों में आगलगी की बढ़ती घटनाओं को देखते हुए लोगों को आग से बचाव करने हेतु नगर में अग्निशन की टीम ने गाभतल स्थित अपने कार्यालय एक जागरूकता रैली निकाली। इस रैली को अग्निशमन अधिकारी विजय शंकर यादव ने हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। रैली में शामिल अग्निशमन की 7 छोटी, बड़ी गाड़ियों के साथ दो बाइक गाभतल से दानापुर सैनिक चौक, सगुना मोड़, दानापुर रेलवे स्टेशन, रूपसपुर दीघा नहर रोड, रामजीचक होते हुए गाभतल स्थित कार्यालय में जाकर सम्पन्न हुई। वाहन जागरूकता रैली के दौरान जगह-जगह पर रुककर अग्निशमन अधिकारी विजय शंकर व उनकी टीम ने लोगों को विभिन्न प्रकार के आग से बचाव का उपाय बताया। इस दौरान श्री चौधरी ने कहा की भीषण गर्मी को देखते हुए डीजी के आदेश पर वाहन जागरूकता रैली निकाली जा रही है।आए दिन हमलोग मुहल्ले, चौक चौराहे पर मॉक ड्रिल कर लोगों को आग से बचाव के लिए जागरूक कर रहे है। आगे भी इस तरह का अभियान चलता रहेगा। नहर रोड में ज्यादा झुग्गी झोपड़ी है उन्हे विशेष तौर पर वहा रुककर जागरूक किया जाएगा। दियारा क्षेत्र में इस बार बड़े पैमाने पर हमलोगों द्वारा आगलगी के रोकथाम और बचाओ को लेकर अभियान चलाया गया। जिसके फलस्वरूप इस बार पिछले वर्ष के मुकाबले इस बार आगलगी की घटनाओं में कमी देखी गई है।

बड़ी पटनदेवी का मुख्य भवन जुलाई तक बन कर होगा तैयार

योजना विकास विभाग के अभियंता ने किया निरीक्षण

पटना सिटी, प्रात :किरण संवाददाता

योजना विकास विभाग के कार्यपालक अभियंता सुरेंद्र कुमार ने रविवार को शक्तिपीठ बड़ी पटनदेवी में स्थल का निरीक्षण किया। इसके बाद उन्होंने कहा कि एक करोड़ 95 लाख की स्वीकृत राशि से बन रहे गर्भगृह का मुख्य भवन का निर्माण जुलाई माह तक पूर्ण कर लिया जाएगा। निरीक्षण के दौरान शक्तिपीठ के महंत विजय शंकर गिरि ने कार्य से जुड़े अहम बिंदुओं पर अभियंता को ध्यान दिलाया। साथ ही उसे दूर करने को कहा। हवन कुंड के पास यात्री शेड का निर्माण एक करोड़ 97 लाख की राशि से प्रस्तावित निर्माण के लिए डिजाइन को फाइनल कराने का कार्य आर्टिकेक्ट के साथ मंदिर के महंत विजय शंकर गिरि से रायशुमारी की जा रही है। सितंबर तक यात्री शेड के निर्माण कार्य को पूरा कराने का लक्ष्य विभाग के प्रधान सचिव के सेंथिल कुमार ने रखी है। इसके बाद दो मंजिला सामुदायिक भवन का निर्माण एक करोड़ 49 लाख की लागत से निर्माण होगा।

शिक्षा जगत में सराहनीय कार्य हेतु पंकज किशोर सिंह व ऋचा सिंह को एसोसिएशन का मिला राष्ट्रीय पुरस्कार

प्रात :किरण संवाददाता

बिहटा / पटना :- गोपाल विद्यार्थी चण्डीगढ़ के पंचकुला स्थित हॉलिडे इन में आयोजित प्राइवेट स्कूल एंड चिल्ड्रेन वेलफेयर एसोसिएशन के 11 वें वार्षिक सम्मेलन पटना के पंकज किशोर सिंह एवं ऋचा सिंह को राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया । आयोजित सम्मेलन में पूरे भारत से लगभग एक हजार से स्कूल के प्रिंसिपल और निदेशक शामिल थे । कार्यक्रम की शुरूआत एसोसिएशन के राष्ट्र अध्यक्ष शमाएल अहमद, रोटरी के पूर्व विश्व अध्यक्ष शेखर मेहता , पूर्व भारतीय हॉकी कप्तान असलम शेर खान , फादर पीटर व पूर्व मंत्री मुरारी गौतम ने संयुक्त रूप से द्वीप प्रज्वलित कर किए ।मौके पर पटना महानगर अध्यक्ष पंकज किशोर सिंह, मीडिया प्रभारी ऋचा सिंह को शिक्षा जगत में उनके सराहनीय कार्यों के लिए एशोसियेशन द्वारा राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया । वहीं सचिव सुशीला रानी एवं ऑफिस इंचार्ज राकेश कुमार को भी सम्मानित गया । वही पटना अध्यक्ष पंकज किशोर सिंह एवं ऋचा सिंह को बेस्ट कपल चुना गया। विदित हो कि प्राइवेट स्कूल एंड चिल्ड्रेन वेलफेयर एसोसिएशन निजीविद्यालयों का अग्रणी संगठन हैं जो निजी शिक्षा में उत्कृष्टता एवं शिक्षा में गुणवता को बढ़ावा देने और अधिकारों की वकालत करने के लिए समर्पित हैं ।सम्मेलन में पाठ्यक्रम नवाचार शिक्षक प्रशिक्षण, बाल संरक्षण जैसे विषयों पर विस्तार से चर्चा हुई ।

कालाजार से जंग में वैश्विक पहचान बना रहीं महिला छिड़काव दल

आर्थिक लाभ और सामाजिक सम्मान पाकर खुश हैं सभी महिलाएं

- जेनेवा सहित अन्य देशों से भी कई लोग आये इनका काम देखने

प्रात :किरण संवाददाता

पटना। पूरे राज्य में कालाजार से बचाव के लिए आईआरएस चक्र चलाया जा रहा है। इस काम में वैसे तो हजारों लोग छिड़काव दल में हैं। पर इनके बीच एक छिड़काव दल ऐसा भी है, जिसने न सिर्फ अपने जिले में बल्कि पूरे राज्य और देश के लिए अनूठी मिसाल पेश की है। उनका प्रयास और साहस महिला सशक्तिकरण और आर्थिक स्वावलंबन का बेहतरीन उदाहरण है। इस छिड़काव दल में छह महिलाएं हैं जो पिछले सात साल से मुजफ्फरपुर जिला के कुढ़नी प्रखंड के 70 राजस्व गाँवों में सिंथेटिक पायरोथॉयराइड का छिड़काव तो करती ही हैं, गांव के लोगों को कालाजार और चमकी बुखार के बारे में समुचित जानकारी देकर जागरूक करने का भी अतिरिक्त प्रयास करती हैं। उनका काम और उनके साहस को देखने जेनेवा सहित कई अन्य देशों के लोग भी समय-समय पर यहाँ आए हैं। वर्ष 2022 में तत्कालीन स्वास्थ्य मंत्री मंगल पांडेय ने महिला दिवस के मौके पर इस छिड़काव दल की महिलाओं को प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित भी किया। छिड़काव दल में शामिल होने के लिए सीखी साइकिल इन महिलाओं के छिड़काव दल में शामिल होने के पीछे की कहानी भी बेहद दिलचस्प और प्रेरणादायक है। इन छह महिलाओं ने छिड़काव दल में शामिल होने के लिए साइकिल चलाना सीखा। क्योंकि यह छिड़कावकर्मी के रूप में चयन के लिए अनिवार्य योग्यता थी। दल की सदस्य शारदा भारती, किरण कुमारी, सुदेश्वरी कुमारी, वीणा कुमारी, कंचन कुमारी और गुड्डी देवी ने स्वावलंबी और आत्मनिर्भर बनने की चाहत लिए कुछ ही महीने में साइकिल चलाने की योग्यता अर्जित कर ली। वर्ष 2017 के प्रथम राउंड से सभी छह महिलाओं ने छिड़काव दल का काम करना शुरू कर दिया। इस पूरी प्रक्रिया में ह्मनेपथ्य के अभिनेताह्व कुढ़नी प्रखंड के कलाकार संजय रंजन और पूर्व प्रभारी चिकित्सा पदाधिकारी डॉ धर्मेंद्र कुमार माने जाते हैं जिन्होंने विभागीय अधिकारियों को काफी विश्वास दिलाया था। 18 किलोमीटर के दायरे में देर शाम तक करती हैं छिड़काव महिला छिड़काव दल की सीनियर फील्ड आफिसर शारदा भारती बताती हैं कि जब हमलोगों ने काम शुरू किया तो हमारे पास 70 राजस्व ग्राम थे। इसे 60 कार्य दिवसों में पूरा करना होता था। अभी भी लगभग 18 किलोमीटर के दायरे में पड़ने वाले राजस्व गांवों में छिड़काव करने हमलोग जाते हैं। अपने काम से मिली पहचान के कारण देर शाम होने पर भी घर जाने में डर नहीं लगता। रास्ते में मिलने वाले लोग ह्मछिड़काव वाली दीदीह्व कहकर हालचाल पूछते हैं। आर्थिक और सामाजिक संपन्नता से खुशहाल हुई जिंदगी इस महिला छिड़काव दल की कंचन देवी कहती हैं कि दल की सभी महिलाओं ने मैट्रिक तक की पढ़ाई की है। हम सभी को ऐसा ही काम चाहिए था जिसमें पैसा भी हो और घर भी देख सकें। साइकिल चलाने जैसी कुछ जरूरी आवश्यकताएं थी, जिसे हम छह महिलाओं ने पूरा किया। वे कहती हैं कि एक राउंड में छिड़काव करने पर लगभग 45 हजार रुपए मिल जाते हैं। पैसों से आर्थिक मजबूती आयी तो इस काम से सामाजिक पहचान भी मिली। दल के किसी सदस्य के घर में हमारे काम से किसी को कोई दिक्कत नहीं होती है। गुड्डी देवी मुस्कुराते हुए कहती हैं, आर्थिक संपन्नता बढ़ी तो दल की दो महिलाओं ने स्कूटी खरीद ली है। बाकी भी देर-सबेर खरीद ही लेंगी।

दस दिनों से जीएस ओटी में गिर रहा गंदा पानी, नहीं कराया ठीक

पटना सिटी, प्रात :किरण संवाददाता

नालंदा मेडिकल कॉलेज अस्पताल के जनरल सर्जरी ऑपरेशन थिएटर के तीन टेबल पर मरीजों का ऑपरेशन पिछले 10-12 दिनों से नहीं हो पा रहा है। इसके पीछे कारण यह है कि ऑपरेशन थिएटर के ऊपर प्रथम या दूसरी मंजिल से शौचालय का गंदा पानी गिर रहा है। इस कारण से तीन ओटी टेबल पर ऑपरेशन का काम बुरी तरह से प्रभावित है। विदित हो कि पिछले मई माह में ही सर्जन डॉ पीडी वर्मा की यूनिट में करीब 100 मेजर और माइनर ऑपरेशन करने का काम किया था, जिसमें पीजी चिकित्सक, नर्सिंग इंचार्ज और ओटी असिस्टेंट की टीम की भी भूमिका रही थी। मगर अब इसका बुरा असर पड़ रहा है। इधर ऑपरेशन के प्रभावित होने के बाद इंस्ट्रूमेंट वगैरह को किसी तरीके से ढंक कर रखा गया है। मगर शौचालय का पानी ऑपरेशन थिएटर से गिरते हुए फैल रहा है, जिसकी रोज सफाई कराई जा रही है। फिर भी बगल के ओटी पर भी इसका असर देखने को मिल रहा है। मिली जानकारी के अनुसार इस संबंध में सर्जरी, एनेस्थीसिया और सिस्टर इंचार्ज ने भी पत्र लिखकर अस्पताल के अधीक्षक और उपाधीक्षक को सूचित किया है। हालांकि उपाधीक्षक डॉ सरोज कुमार के द्वारा यह बताया गया था कि उसे शुक्र या शनिवार को ही ठीक कर दिया जाना था। मगर उसे अब तक ठीक नहीं कराए जाने से मरीज का तीन टेबल पर ऑपरेशन प्रभावित है। अब स्थिति यह है कि महज चार टेबल पर ही मरीजों का ऑपरेशन किया जा रहा है इससे प्रतिदिन ऑपरेशन योग्य मरीजों की संख्या में गिरते गंदा पानी के ठीक होने और पूरी तरह से इफेक्शन मुक्त कराए बिना ऑपरेशन शुरू किया जाना संभव भी प्रतीत नहीं होता है। उपाधीक्षक डॉ सरोज कुमार ने बताया कि एक-दो दिनों में उसे ठीक करा कर संक्रमण मुक्त करा दिया जाएगा और ऑपरेशन पूर्व की तरह शुरू हो जाएगा।

भारत विकास व संजय आनंद विकलांग अस्पताल दिव्यांगों का श्रेष्ठ अस्पताल

पटना सिटी, प्रात :किरण संवाददाता

भारत विकास एवं संजय आनंद विकलांग अस्पताल में 167वां पोलियो एवं करेक्टिव शल्य चिकित्सा शिविर का आयोजन रविवार को किया गया। मुख्य अतिथि के रूप में नेशनल इंस्टीच्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी के निदेशक प्रो पीके जैन ने कहा कि यह अस्पताल बिहार का सर्वश्रेष्ठ मंदिर है। दिव्यांगता की सोच मानसिक है। दिव्यांगता अभिशाप नहीं है। विशिष्ट अतिथि नेत्र रोग विशेषज्ञ डॉ सुभाष प्रसाद ने कहा कि यहां की सेवा को देखकर वह अभिभूत हैं। पीड़ित मानवता को समर्पित डॉ एसएस झा ने कहा कि यहां एक गर्भगृह है, जहां हमलोग जूता-चप्पल उतार कर मरीजों की पूजा करने जाते हैं। डॉ झा, डॉ जीवेन्दु चौधरी एवं डॉ उमेश कुमार चौधरी सुमन के नेतृत्व में 40 मरीजों की शल्य चिकित्सा, 20 मरीजों का प्लास्टर, 10 दिव्यांगजनों को कृत्रिम उपकरण तथा 80 से ज्यादा मरीजों की ओपीडी में जांच की गई। आज का शिविर स्मृतिशेष पूर्व डिप्टी सीएम सुशील कुमार मोदी, दीपक घई एवं शरबती देवी अग्रवाल की स्मृति को समर्पित था। आज के शिविर का प्रायोजन श्री हनुमान सहाय गोयल एवं बजरंग सुधा अग्रवाल के द्वारा प्रायोजित था। स्थापना काल से जुड़े सीताराम पोद्दार एवं अनुज कुमार गुप्ता और राजेश बजाज को प्रतीक चिन्ह व अंग वस्त्र प्रदान कर सम्मानित किया गया। अस्पताल के चेयरमैन देशबंधु गुप्ता ने अस्पताल के गतिविधियों की जानकारी दी। डॉ एसएस झा एवं महासचिव पद्मश्री बिमल जैन द्वारा स्वागत तथा धन्यवाद ज्ञापन अस्पताल के प्रबन्ध न्यासी विवेक माथुर ने किया। इस अवसर पर संजय ड्रोलिया, रेखा कसेरा, दिव्यांगजनों एवं समाजसेवियों की उपस्थिति थी। अगला शिविर 21 जुलाई को होगा।

राजधानी सहित कई जिले भीषण लू की चपेट में

कई जिलों में हिटवेव की स्थिति, जनजीवन प्रभावित

पटना, प्रात: किरण संवाददाता

राजधानी पटना सहित सूबे के कई जिले प्रचंड गर्मी की चपेट में है। थपेड़े झुलसा देनेवाली धूप व पछुआ हवा से जनजीवन पूरी तरह बेहाल है। राजस्थान से आने वाली गर्म पछुआ हवा के कारण तापमान काफी बढ़ गया है। शनिवार को बिहार के 21 जिलों में 40 डिग्री से अधिक तापमान दर्ज किया गया है। पटना में इस सीजन की सबसे अधिक गर्मी पड़ी। दिन का पारा 43 डिग्री पार चला गया। रविवार को मौसम विभाग ने कई इलाकों के तापमान 44 डिग्री तक जाने के आसार जताए हैं। मौसम विभाग का मानना है कि भीषण उष्ण भरी गर्मी से और लू से फिलहाल लोगों को राहत मिलने की कोई संभावना नहीं है। मौसम विभाग ने इसके लिए लोगों से सतर्क रहने के लिए अलर्ट जारी किया है। बिहार के बांका, भागलपुर, जमुई, पूर्वी चंपारण एवं दक्षिणी भागों के एक दो स्थानों पर मौसम विभाग ने लू का ऑरेंज अलर्ट जारी किया है। जबकि राज्य के उत्तरी भागों के एक दो स्थानों पर गर्म और आद्र दिन रहने की संभावना के साथ ही इसके लिए एलो अलर्ट जारी किया है। पिछले 24 घंटे के दौरान 18 जिलों के तापमान को 41 डिग्री से अधिक दर्ज किए गए। जिन जिलों में 41 डिग्री से अधिक तापमान दर्ज किए गए हैं। उन जिलों में पटना 43.0 ,गया 44. 02, छपरा 42.3, डेहरी 44.4, शेखपुरा 44.2, गोपालगंज 42.3, जमुई 42.4, बक्सर 45.3 मुंगेर 41.4, भोजपुर 44.3, वैशाली 44.5, औरंगाबाद 44.6, बांका 43.7, नवादा 43.2, राजगीर 43.5, जीरादेई 43.4, अरवल 44.5 और बिक्रमगंज 44.02 डिग्री सेल्सियस दर्ज किए गए।

44 डिग्री तक जा सकता है इन भागों का तापमान :

पटना के मौसम विभाग के अनुसार जारी किए गए रिपोर्ट के अनुसार शनिवार को राज्य के सर्वाधिक अधिकतम तापमान बक्सर में 45.3 डिग्री सेल्सियस दर्ज किए गए। जबकि सबसे कम न्यूनतम तापमान मोतिहारी में 24.02 डिग्री दर्ज किए गए। इसके अलावा मौसम विभाग का यह मानना है कि आगामी 24 घंटे के दौरान राज्य के दक्षिण पश्चिम एवं दक्षिण मध्य भाग में अधिकतम तापमान 42 से 44 डिग्री के बीच रहने की संभावना है, जबकि न्यूनतम तापमान 28 से 30 डिग्री रहने की संभावना है। इसके साथ ही उत्तर पश्चिम, उत्तर मध्य एवं दक्षिण पूर्व में अधिकतम तापमान 40 से 42 डिग्री की रहने की संभावना है ,जबकि उत्तर पूर्वी भाग का तापमान 36 से 38 डिग्री के बीच रहने की संभावना व्यक्त की गई है। 24 घंटे के दौरान प्रदेश का मौसम शुष्क बना रहा। राज्य के कई जगह खास कर दक्षिण पश्चिम एवं दक्षिण मध्य भाग का अधिकतम तापमान 40 डिग्री सेल्सियस से ज्यादा रहा। राज्य के उत्तर पूर्वी भाग का अधिकतम तापमान का विस्तार 36 से 38 डिग्री सेल्सियस रहा। उत्तर पूर्वी भाग में अधिकतम आर्द्रता 70 से 80 प्रतिशत रहा। जिसके कारण इस क्षेत्र का मौसम उमस वाली बनी रही। हवा की दिशा धरातल पर दक्षिण पूर्वी एवं उत्तर पूर्वी है। परंतु धरातल से ऊपर हवा की दिशा उत्तर पश्चिमी है और वायु की गति 30 से 40 किलोमीटर प्रति घंटा है।

72 घंटे में दो से चार डिग्री सेल्सियस बढ़ सकता है तापमान

मौसम विज्ञान केंद्र के अनुसार, राज्य के कई जगह का अधिकतम तापमान 72 घंटे में दो से चार डिग्री सेल्सियस बढ़ सकता है। उसके बाद तापमान सामान रहेगा।

महिला सशक्तिकरण के विषय में नमो-नीतीश से सीखे विपक्ष : राजीव रंजन

- महिलाओं के रोजगार के लिए किये गये क्रांतिकारी प्रावधान

पटना, प्रात: किरण संवाददाता

जदयू के राष्ट्रीय प्रवक्ता राजीव रंजन ने कहा है कि चंद वोटों के लिए महिलाओं को ठगने वाले इंडी गठबंधन को समझना चाहिए कि भारतीय संस्कृति में महिलाओं को देवी का दर्जा दिया गया हुआ है। यदि वह महिलाओं के हित में काम नहीं कर सकते तो उन्हें उनको धोखा भी नहीं दे सकते। उन्होंने कहा कि वास्तव में इंडी गठबंधन को नमो नीतीश से सीखना चाहिए कि महिला सम्मान और सशक्तिकरण पर काम कैसे किया जाता है। उन्हें देखना चाहिए कि नीतीश सरकार में लड़कियों के जन्म से लेकर उनकी शिक्षा-दीक्षा से लेकर उनके रोजगार तक के लिए कैसे क्रांतिकारी प्रावधान किये गये हैं। साइकिल व पोशाक योजना कैसे लड़कियों की शिक्षा के क्षेत्र में गेम चेंजर योजना साबित हुई है। राष्ट्रीय प्रवक्ता ने कहा कि नीतीश सरकार ने ही बिहार की लड़कियों को उच्च शिक्षा के लिए प्रोत्साहित करने के लिए बिहार में इंटरमीडिएट पास अविवाहित लड़कियों को 25 हजार रुपये और स्नातक पास लड़कियों को 50 हजार रुपये दिए जाने का प्रावधान किया है। इसके अलावा मेडिकल, इंजीनियरिंग और प्रस्तावित स्पोर्ट्स यूनिवर्सिटी में नामांकन के लिए भी में 33 प्रतिशत सीट लड़कियों के लिए आरक्षित कर दिया गया है। ऐसा करने वाला बिहार देश का पहला राज्य है। इसी वजह से पहले घर से बाहर निकलने में झिझकने वाली बिहार की महिलाएं आज पुरुषों के कंधे से कंधा मिलाकर हर क्षेत्र में सक्रिय भागीदारी निभा रही हैं। केंद्र सरकार के काम गिनाते हुए उन्होंने कहा कि इसी तरह महिलाओं को सशक्त और सामर्थ्यवान करने के लिए प्रधानमन्त्री मोदी की पहल से देश में उज्जवला योजना, नल जल योजना, बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ, सुकन्या समृद्धि योजना, फ्री सिलाई मशीन योजना, मातृत्व वंदना योजना, महिला शक्ति केंद्र योजना जैसी कई योजनाओं की शुरूआत हुई जिससे आज बड़ी संख्या में महिलाओं को लाभ मिल रहा है। मोदी सरकार ने ही महिलाओं को सशक्त करने के लिए मातृत्व अवकाश को 12 हफ्तों से बढ़ाकर 26 हफ्ते किया, वर्क प्लेस पर महिलाओं की सुरक्षा के लिए सख्त कानून बनाए, वहीं बलात्कार जैसे जघन्य अपराधों पर फांसी जैसी सजा का प्रावधान किया। उनके कारण ही सैनिक स्कूलों में बेटियों के दाखिले की शुरूआत भी हुई। यहां तक की उनकी पहल से ही पहली बार देश को महिला आदिवासी राष्ट्रपति मिली है।

मशहूर कलाकार पंडित रामकुमार मल्लिक के निधन पर शोक की लहर

पटना, प्रात: किरण संवाददाता

ध्रुपद संगीत के मशहूर कलाकार पंडित रामकुमार मल्लिक का निधन हो गया। वह 73 साल के थे। दरभंगा के बहेड़ी प्रखंड के आमता गांव स्थित अपने पैतृक घर में शनिवार देर रात हृदय गति रूकने से उन्होंने दम तोड़ दिया। इसी साल उन्होंने पद्म श्री पुरस्कार से सम्मानित किया गया था। अमता घराना के ध्रुपद संगीत के क्षेत्र में उन्होंने महारथ हासिल कर रखी थी। वह पंडित विदुर मल्लिक के पुत्र व शिष्य थे। देश-विदेश के प्रतिष्ठित मंचों पर अपनी गायकी का लोहा मनवाया। बताया जा रहा है कि धुपद संगीत में पंडित रामकुमार मल्लिक ने देश-विदेश के प्रतिष्ठित मंचों पर अपनी गायकी का लोहा मनवाया। कई सम्मानों से अलंकृत थे। वर्ष 2024 में इनको पद्मश्री अलंकरण से नवाजा गया। वह अपने पीछे दो पुत्री रुबी, रिंकी, चार पुत्र संतोष, समित, साहित्य एवं संगीत मल्लिक को छोड़ गए। पंडितजी ने अपने सभी पुत्रों और शिष्य को ध्रुपद गायकी के लिए तैयार किया। उनके निधन के बाद दरभंगा ही नहीं पूरे मिथिलांचल में शोक की लहर है। ध्रुपद परंपरा की 12 वीं पीढ़ी का प्रतिनिधित्व कर रहे थे : स्थानीय लोगों का कहना है कि करीब पांच सौ वर्ष से निरंतर चली आ रही ध्रुपद परंपरा की 12वीं पीढ़ी का प्रतिनिधित्व कर रहे थे। ध्रुपद ने इनका प्रशिक्षण बचपन से ही अपने गुरु और पिता ध्रुपद सम्राट पं. विदुर मल्लिक के मार्गदर्शन में शुरू हुआ। दादा पंडित सुखदेव मल्लिक से भी संगीत सीखने का अवसर मिला। इनकी गायकी में गौहार वाणी, खंडार वाणी कस सुमधुर प्रयोग स्पष्ट से रूप से दिखाई देता था। इनके जाने से दरभंगा घराना ही नहीं बल्कि संगीत जगत को अपूरणीय क्षति हुई है।

विस चुनाव में सभी दलों को धूल चटाएगा जन सुराज : पीके

- दो अक्टूबर को जन सुराज पार्टी का होगा गठन
- अकेले अपने दम पर सभी सीटों पर चुनाव लड़ सरकार बनाएगा जन सुराज

पटना, प्रात: किरण संवाददाता

जन सुराज अभियान के सूत्रधार प्रशांत किशोर ने कहा है कि आगामी विधानसभा चुनाव में भाजपा - जदयू और राजद समेत सभी राजनीतिक दलों को धूल चटाकर जन सुराज अपने बूते सरकार बनाएगा। जन आगामी दो अक्टूबर को राजनीतिक दल के रूप में परिवर्तित हो जाएगा जिसका नाम जन सुराज पार्टी होगा। वे पटना के ज्ञान भवन में आयोजित बिहार के सभी जिलों के संगठन पदाधिकारियों के अधिवेशन को संबोधित कर रहे थे। ज्ञात हो कि दो अक्टूबर वर्ष 2022 को चंपारण के भीतिहरवा गांधी आश्रम से जन सुराज पदयात्रा अभियान की शुरूआत प्रशांत किशोर ने की थी। यह पदयात्रा सितंबर माह तक पूर्ण कर ली जाएगी। उन्होंने घोषणा की कि बिहार विधानसभा चुनाव में जन सुराज आबादी के आधार पर टिकट वितरण करेगा और संगठन में भी उसी आधार पर प्रतिनिधित्व देगा। जन सुराज अकेले अपने दम पर सभी 243 सीटों पर चुनाव लड़ेगा और बिहार में अपनी सरकार बनाएगा। उन्होंने कहा कि चालीस महिलाओं को भी विधानसभा चुनाव में टिकट दिया जाएगा। अधिवेशन में संगठन से संबंधित कई प्रस्ताव लाए गए जिसे ध्वनिमत से पारित किया गया। इसमें आगामी दो अक्टूबर को संगठन के सभी पदाधिकारियों का अधिवेशन बुलाकर जन सुराज पार्टी के नाम से राजनीतिक दल बनाने, जिसकी जितनी आबादी उसकी उतनी हिस्सेदारी को संगठन और टिकट में भागीदारी सुनिश्चित करने तथा पटना की धरती पर बिहार के सभी जिलों से संस्थापक सदस्यों और बिहारी भाइयों की विशाल महारैली आयोजित करने का निर्णय लिया गया। अधिवेशन में पार्टी के संविधान के निर्माण के लिए बनाई गई कमिटी का अनुमोदन किया गया और संविधान निर्माण करने की स्वीकृति दी गई। उपस्थित पदाधिकारियों ने पार्टी के संविधान में अपने अनेक महत्वपूर्ण सुझाव दिये जिन्हें संविधान सभा के सदस्यों ने गंभीरता से नोट किया। प्रशांत किशोर ने जन सुराज संगठन के सभी पदाधिकारियों को बूथ, पंचायत, प्रखण्ड और जिला स्तर पर संगठन को और अधिक धारदार बनाने और घर घर जन सुराज अभियान को पूर्णतया सफल बनाने की अपील की। इस बैठक के बाद प्रशांत किशोर ने उसी सभा भवन में जन सुराज वाहिनी के सम्मेलन का भी उद्घाटन किया और वाहिनी के सदस्यों को घर घर जन सुराज अभियान को पहुंचाने की अपील की। संगठन के अधिवेशन का संचालन आर के मिश्रा ,एन के मण्डल और प्रदेश मुख्य प्रवक्ता सह मीडिया प्रभारी संजय कुमार ठाकुर ने किया जबकि विधानपार्षद अफाक अहमद, जेपी सेनानी लछनदेव प्रसाद, संतोष महतो, पश्चिम चंपारण जिला अध्यक्ष बिकाई महतो, पूर्वी चंपारण जिला अध्यक्ष वीर प्रसाद महतो समेत अनेक जिलों के पदाधिकारियों ने संबोधित किया। वाहिनी के सम्मेलन का संचालन बैद्यनाथ चौधरी और विवेक कुमार ने किया जबकि मोहित सिन्हा, डाक्टर संजय कुमार और प्रसिद्ध भोजपुरी गायक छैला बिहारी ने संबोधित किया। छैला बिहारी ने जन सुराज के लिए गीत गाकर लोगों को खूब मनोरंजित और उत्साहित किया। उक्त जानकारी आज यहां जारी एक बयान में जन सुराज के प्रदेश मुख्य प्रवक्ता सह मीडिया प्रभारी संजय कुमार ठाकुर ने दी।

दो साल के भीतर पूर्णिया को नंबर वन बनाएंगे : पप्पू

पटना। पूर्णिया के निर्दलीय सांसद पप्पू यादव ने बड़ा एलान कर दिया है। पप्पू यादव ने कहा है कि अगर तीन महीनेम में पूर्णिया में आम आदमी का रामराज नहीं आया तो चौथे महीने पद से इस्तीफा दे दूंगा। इस दौरान उन्होंने एनडीए की सरकार के भविष्य को लेकर बड़ी भविष्यवाणी भी की है। पप्पू यादव ने नरेंद्र मोदी के तीसरी बार प्रधानमंत्री बनने पर उन्हें बधाई दी है। उन्होंने कहा कि आप सभी के पीएम हैं, मेरे भी प्रधानमंत्री हैं, ऐसे में विपक्ष को मत भूलिएगा। उन्होंने पीएम मोदी से अपील की कि पूर्णिया क्षेत्र का काम करा दीजिएगा। उन्होंने कहा कि कोसी सीमांचल को बदलना उनकी प्राथमिकता है। पप्पू यादव ने दावा किया कि दो साल के भीतर पूर्णिया को नंबर वन बनाएंगे और पूर्णिया भ्रष्टाचार मुक्त करेंगे। उन्होंने बड़ा एलान करते हुए कहा कि अगर पूर्णिया में तीन महीने में आम आदमी का रामराज नहीं आया तो चौथे महीने में रिजाइन कर दूंगा। पप्पू यादव ने केंद्र की एनडीए सरकार के भविष्य को लेकर बड़ी भविष्यवाणी की है।

राजद सुप्रीमो लालू प्रसाद का कल मनेगा जन्म दिन

पटना, प्रात: किरण संवाददाता

राजद अध्यक्ष लालू प्रसाद का 77वां जन्मदिन 11 जून को मनाया जाएगा। लालू प्रसाद का जन्म 1948 में हुआ था। विगत कई वर्षों से उनका जन्मदिन 11 जून को उनके परिजनों, समर्थकों द्वारा मनाया जाता है। हालांकि, उन्होंने स्वयं कहा है कि वास्तविक जन्मदिन की तिथि ज्ञात नहीं है। प्रदेश राजद के मुख्य प्रवक्ता शक्ति सिंह यादव ने रविवार को कहा कि लालू प्रसाद गरीबों एवं लाखों कार्यकताओं के उर्जा के स्रोत हैं। वहीं, प्रदेश प्रवक्ता चितरंजन गगन ने बताया कि इस वर्ष लोकसभा चुनाव में 9 सीटों पर इंडिया गठबंधन द्वारा एनडीए को शिकस्त देने के बाद पार्टी नेताओं व कार्यकताओं में उत्साह है। ऐसे में दल के राष्ट्रीय अध्यक्ष लालू प्रसाद के जन्मदिन को सभी जिलों एवं प्रखंडों में बड़े स्तर पर मनाने की तैयारी है। मुख्य कार्यक्रम की रूपरेखा सोमवार को तय की जाएगी। वहीं, स्थानीय स्तर पर प्रदेश राजद के महासचिव ई. अशोक यादव एवं कुम्हरार में राजद के वरिष्ठ नेता उमेश यादव द्वारा गरीबों के बीच फल वितरण एवं पाठ्य सामग्री वितरित किया जाएगा। तो, दूसरी ओर, पटना में राजद के प्रदेश महासचिव भाई अरुण व अन्य नेताओं द्वारा लालू प्रसाद के 77 वें जन्मदिन को लेकर पोस्टर भी तैयार किए गए हैं।

शांभवी चौधरी सबसे कम उम्र की सांसद की फेहरिस्त में शामिल

समस्तीपुर की पहली महिला सांसद बनने का गौरव भी किया हासिल

पटना, प्रात: किरण संवाददाता

बिहार सरकार में ग्रामीण कार्य मंत्री अशोक चौधरी की पुत्री शांभवी चौधरी ने सस्तीपुर (सु) सुरक्षित पर शांभवी है तो संभव है जैसे नारों के बीच शानदार जीत के साथ न सिर्फ अपनी सियासी जीवन की शानदार शुरूआत की बल्कि वह इस सीट पर पहली महिला सांसद भी बन गयी हैं। जननायक कपूर्री ठाकुर की जन्मस्थली समस्तीपुर संसदीय सीट से वर्ष 1957 में पहले आम चुनाव से वर्ष 2019 तक के लोकसभा चुनाव में किसी महिला प्रत्याशी के सर जीत का ताज नहीं सजा था। समस्तीपुर की पहिला महिला सांसद के साथ ही शांभवी चौधरी इस बार के चुनाव में सबसे कम उम्र की सांसद की फेहरिस्त में भी शामिल रहीं। पुष्पेंद्र सरोज, प्रिया सरोज, शांभवी चौधरी और संजना जाटव 18वीं लोकसभा में सबसे कम उम्र के सांसद बने हैं। इन चारों सासंदों की उम्र 25 वर्ष है। शांभवी चौधरी ने वर्ष 2024 के आम चुनाव में समस्तीपुर (सु) ने न सिर्फ जीत हासिल की और सांसद बनीं, साथ ही उन्होंने समस्तीपुर (सु) से पहली महिला सांसद चुने जाने का गौरव भी हासिल कर लिया। समस्तीपुर लोकसभा क्षेत्र पर इस बार मुकाबला कई मायनों में दलिचस्प हो गया था। यहां से नीतीश सरकार के दो मंत्री अशोक चौधरी और महेश्वर हजारी के बच्चे चुनाव मैदान में उतरे थे। एक तरफ जहां नीतीश सरकार के ग्रामीण कार्य मंत्री अशोक चौधरी की पुत्री शांभवी चौधरी राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग) के घटक दल लोक जनशक्ति पार्टी (रामविलास) के टिकट पर चुनाव लड़ रही थी, वहीं सूचना जनसंपर्क मंत्री महेश्वर हजारी के पुत्र सन्नी हजारी इंडिया गठबंधन के घटक कांग्रेस के टिकट पर चुनाव मैदान में उतरे थे। नीतीश सरकार के दो मंत्री के संतान के बीच चुनावी जंग पर लोगों की नजर थी। शांभवी और सनी दोनों पहली बार चुनावी अखाड़े में उतरे थे। समस्तीपुर (सु) संसदीय संसदीय सीट से लोक जनशक्ति पार्टी (रामविलास) उम्मीदवार शांभवी चौधरी ने कांग्रेस प्रत्याशी सन्नी हजारी को एक लाख 87 हजार 251 मतों के अंतर से पराजित किया और पहली बार सांसद निर्वाचित हुयी। शांभवी चौधरी को राजनीति विरासत में मिली। उनके पिता अशोक चौधरी बिहार सरकार में मंत्री हैं, जबकि दादा महाबीर चौधरी कई बार विधायक और मंत्री रहे हैं। शांभवी ने राजधानी पटना के प्रतिष्ठित नॉट्रेडैम एकेडमी से स्कूली पढ़ाई के बाद दिल्ली विश्वविद्यालय के लेडी श्री राम कॉलेज से ग्रेजुएशन किया। इसके बाद उन्होंने दिल्ली स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स से मास्टर ऑफ आर्ट्स (समाजशास्त्र) में डिग्री हासिल की। शांभवी की शादी महावीर मंदिर न्यास के सचिव और पूर्व आइपीएस अधिकारी किशोर कुणाल के पुत्र सायण कुणाल से हुई है। शांभवी मौजूदा वक्त में पटना के ज्ञान निकेतन स्कूल में डायरेक्टर के पद पर है। वह स्कूल की सारी जिम्मेदारी देखती हैं। वह सामाजिक कार्यों में भी बढ़-चढ़कर हिस्सा लेती हैं। उन्होंने एमिटी यूनिवर्सिटी से समाजशास्त्र में पीएचडी भी की है। इस बार के चुनाव में रभंगा में एक सभा को संबोधित करते हुए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने शांभवी का विशेष उल्लेख करते हुए कहा था कि देश की इस बेटी को अवश्य जीतना चाहिए। शांभवी के प्रचार के दौरान लगाया जाने वाला नारा शांभवी है तो संभव है, मोदी है तो मुमकिन है से बहुत अलग नहीं था। शांभवी चौधरी ने एक पुराने इंटरव्यू में कहा था कि उन्हें हमेशा से राजनीति में रुचि थी। उन्होंने कहा था,कोई भी पिता अपनी बेटी के लिए जनादेश नहीं जीत सकता। इसके लिए मुझे कड़ी मेहनत करनी होगी। समस्तीपुर के लोग तय करेंगे कि मुझे लोकसभा में इस सीट का प्रतिनिधित्व करने का मौका मिलेगा या नहीं। मेरा परिवार यह तय नहीं कर सकता है। मुझे ऐसे लोकतांत्रिक व्यवस्था का हिस्सा बनना है जो लोगों के द्वारा और लोगों के लिए है। मेरे लिए राजनीति और समाज को समझना कोई मुश्किल काम नहीं है। मेरे लिए राजनीति में शामिल होना उन सभी चीजों का व्यावहारिक अनुभव प्राप्त करना है, जिनका मैंने केवल अध्ययन किया है। मेरी शैक्षणिक पृष्ठभूमि निश्चित रूप से मुझे अपने क्षेत्र के लोगों द्वारा सामना की जा रही कठिनाइयों की पहचान करने में मदद करेगी। मैं उन्हें जल्द से जल्द हल करने की पूरी कोशिश करूंगी।

क्षेत्र के विकास के लिए लगातार काम करती रहूंगी

समस्तीपुर सीट से मिली शानदार जीत पर शांभवी ने कहा, मैं समस्तीपुर के लोगों को अपनी शुभकामनाएं देती हूं। उन्होंने सही फैसला लिया है और मैं उनकी उम्मीदों पर खरा उतरने की कोशिश करूंगी। समस्तीपुर ने मुझे बड़ी जीत दिलाई है और मेरा मानना है कि लोगों ने मुझे अपने दिल में जगह दी है। मैंने कहा था कि मैं यहां बेटी के तौर पर आशीर्वाद लेने आई हूं और आज उन्होंने मुझे अपनी बेटी के तौर पर स्वीकार कर लिया है। राजनीति में मेरा उद्देश्य है समाज के आखिरी पायदान पर बैठे समाज के लोगों को मुख्यधारा में लाना और अपने लोकसभा क्षेत्र के साथ-साथ राज्य को विकसित बनाना जिसके लिए मैं लगातार काम करती रहूंगी। राजनीति में मेरे आदर्श मेरे पिता अशोक चौधरी हैं, जिन्होंने हर पल मुझे बताया कि समाज के हर तबके को कैसे आगे बढ़ाया जाता है। सबको साथ लेकर ही आगे बढ़ना है, वहीं दूसरे आदर्श चिराग पासवान जी है, जिनके विजन ने मुझे बेहद प्रभावित किया है। मैंने अपने ससुर आचार्य किशोर कुणाल से बहुत कुछ सीखा है।

केन्द्रीय मंत्रिमंडल में बिहार से हिस्सेदारी बढ़ाए जाने पर उमंग

नरेन्द्र मोदी को लगातार तीसरी बार प्रधानमंत्री पद की शपथ लेने पर जदयू ने दी बधाई

पटना, प्रात: किरण संवाददाता

नरेन्द्र मोदी ने लगातार तीसरी बार देश के प्रधानमन्त्री के रूप में शपथ ग्रहण कर लिया है। उनके साथ ही करीब 71 मंत्री पद और गोपनीयता की शपथ ले रहे हैं। बिहार से आठ मंत्री बनाये गए हैं। पीएम बनने के बाद मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने नरेन्द्र मोदी को बधाई और शुभकामना दी है। अपने बधाई सन्देश में मुख्यमंत्री ने कहा की नरेन्द्र मोदी जी को लगातार तीसरी बार देश के प्रधानमंत्री पद की शपथ लेने पर हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं। प्रधानमंत्री जी के कुशल नेतृत्व में देश विकास की नई ऊंचाइयों पर पहुंचेगा तथा बिहार के विकास में भी पूरा सहयोग मिलेगा। वहीं जद(यू) विधानपार्षद सह पार्टी के मुख्य प्रदेश प्रवक्ता नीरज कुमार ने मीडिया में बयान जारी कर नरेंद्र मोदी को तीसरी बार देश का प्रधानमंत्री बनने का स्वागत किया है। उन्होंने कहा कि हमारे मुख्यमंत्री नीतीश कुमार की अगुवाई में बिहार में एनडीए गठबंधन ने तीन चौथाई लोकसभा सीटें जीतने का काम किया है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी की सरकार में बिहार से जीतन राम मांझी, राजीव रंजन सिंह उर्फ ललन सिंह, रामनाथ ठाकुर, नित्यानंद राय, गिरिराज सिंह, चिराग पासवान, सतीश चंद्र दूबे और राजभूषण निषाद को मंत्रिमंडल में शामिल कर निश्चित तौर पर बिहार का सम्मान बढ़ाने का काम किया है। उन्होंने कहा कि अनुभवी लोगों को शामिल करने से केंद्रीय मंत्रिपरिषद में बिहार की हिस्सेदारी बढ़ी है। पार्टी के मुख्य प्रदेश प्रवक्ता ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और हमारे मुख्यमंत्री नीतीश कुमार की जोड़ी ने राजनीति में जो बदलाव किया है वो देश की जनता के लिए भविष्य में एक मानक स्थापित करने का काम करेगा।

तीसरे प्रयास में मीसा भारती ने मारी बाजी, रामकृपाल यादव की हैट्रिक की उम्मीदों पर फेरा पानी

पाटलिपुत्रा सीट फतह कर मीसा ने अपने पिता के सपने को किया साकार

रामाधार प्रसाद

पटना। राष्ट्रीय जनता दल सुप्रीमो लालू प्रसाद यादव और पूर्व मुख्यमंत्री राबड़ी देवी की बड़ी पुत्री राज्यसभा सांसद मीसा भारती ने पाटलिपुत्र संसदीय सीट से जीत दर्ज कर न सिर्फ अपने पिता के सपनों को पूरा किया, जहां उन्हें हार का सामना करना पड़ा था, वहीं इस जीत के साथ ही उन्होंने भाजपा सासंद रामकृपाल यादव की जीत की हैट्रिक की उम्मीदों पर पानी फेर दिया। 2009 में पाटलिपुत्र लोकसभा सीट पर पहली बार चुनाव हुए। पाटलिपुत्र के पहले चुनावी अखाड़े में एक ओर जहां राष्ट्रीय जनता दल अध्यक्ष लालू प्रसाद यादव थे, वहीं दूसरी ओर श्री यादव के पुराने साथी जनता दल यूनाइटेड नेता रंजन प्रसाद यादव। जदयू के रंजन प्रसाद यादव ने लालू प्रसाद को पटखनी देकर सबको हैरान कर दिया। रंजन प्रसाद यादव ने लालू प्रसाद यादव को 23 हजार 541 वोट से हराया और उनके राजनीतिक कद पर एक बड़ा प्रश्न चिन्ह खड़ा कर दिया। 2013 में चारा घोटाले मामले में सजा सुनाए जाने के बाद 2014 से लालू के चुनाव लड़ने पर प्रतिबंध लग गया। खानदान की विरासत लालू प्रसाद यादव के दोनों बेटे तेजस्वी यादव और तेज प्रताप की ओर खिसकाने की पहल हो चुकी थी, ऐसे में मीसा ने अपने पिता के उत्तराधिकारी में खुद को पेश किया। मीसा की पहल को एक ऐसी बेटी की पहल माना जा रहा था, जो अपने पिता लालू यादव के बिखरते साम्राज्य को देखकर व्यथित थी। उन्होंने लालू की हारी लोकसभा सीट पाटलिपुत्र को कुछ इस अंदाज में अपनाया कि परिवार के सबसे भरोसेमंद वफादार रामकृपाल यादव भी विपक्ष के खेमे भाजपा में पहुंच गये। मीसा अपने पिता का हाथ मजबूत करने आगे आ चुकी थी। मीसा ने वर्ष 2014 के चुनाव में पाटलिपुत्र संसदीय सीट को चुना जहां से उनके पिता लालू 2009 में हार गए थे, जबकि आसान सीट सारण को मां राबड़ी देवी के लिए छोड़ दिया, जहां से लालू वर्ष 2009 में जीत गये थे। सियासी गलियारों में चर्चा थी कि मीसा की इच्छा अपने राजनैतिक करियर से ज्यादा रंजन यादव को हराने की है। मीसा ने तब कहा था,हां, मैं लालू जी की बेटी हूं, यही अपने में बड़ी योग्यता है, लेकिन इससे मुझे अतिरिक्त दायित्व बोध और चुनौतियां भी मिल जाती हैं। मैंने राजनीति के बीच ही सांस लेना सीखा। नेताओं के बच्चों के भी राजनैतिक अधिकार हैं. क्या नहीं होने चाहिए? 2014 के आम चुनाव में पाटलिपुत्र सीट पर अपनों के बीच सियासी घमासान देखने को मिला। मीसा राजद के टिकट पर चुनावी समर में उतरी थी। कभी लालू के करीबी रहे रंजन प्रसाद यादव, जनता दल यूनाईटेड तो राम कृपाल यादव भरतीय जनता पार्टी के टिकट पर चुनावी अखाड़े में थे। चुनाव से पहले ऐसा माना जा रहा था कि राम कृपाल यादव भाजपा में जाकर और पाटलिपुत्र से लालू यादव की बेटी के खिलाफ चुनाव लड़कर अपने पैर पर कुल्हाड़ी मार रहे हैं, लेकिन उन्होंने मीसा भारती को हराकर सबको चौंका दिया। रंजन यादव तीसरे नंबर पर रहे। 2019 में भी मीसा को पाटलिपुत्र सीट पर भाजपा के श्री राम कृपाल यादव से हार का सामना करना पड़ा। इस बार के चुनाव मे मीसा बुलंद हौसलों के साथ उतरी और भाजपा के रामकृपाल यादव को पराजित कर सियासी हलकों में सनसनी फैला दी।

2014 में सक्रिय राजनीति में रखा कदम

मीसा भारती वर्ष 2014 में सक्रिय राजनीति में कदम रखा। मीसा ने वर्ष 2014 में पिता लालू की पार्टी राजद की सदस्यता लेकर इसी पार्टी के बैनर तले पाटलिपुत्र से चुनाव मैदान में भी उतरीं। उन्हें राजद के दिग्गज नेता रामकृपाल यादव के बदले टिकट दिया गया था। कभी लालू प्रसाद यादव के हनुमान माने जाने वाले राम कृपाल यादव ने श्रीमती मीसा भारती को 40 हजार 322 मतो के अंतर से पराजित किया था। जदयू प्रत्याशी रंजन प्रसाद यादव तीसरे नंबर पर रहे। वर्ष 2016 में मीसा भारती राजद के कोटे से राज्यसभा सांसद बनीं। 2019 में भी मीसा भारती को पाटलिपुत्र संसदीय सीट पर भाजपा प्रत्याशी रामकृपाल यादव से हार का सामना करना पड़ा। भाजपा प्रत्याशी रामकृपाल यादव ने राजद प्रत्याशी मीसा भारती को दूसरी बार 39 हजार 321 मतों के अंतर से पराजित कर दिया। वर्ष 2022 में श्रीमती मीसा भारती राज्यसभा के लिये फिर निर्वाचित हुयी। वर्ष 2024 के आम चुनाव में पाटलिपुत्र संसदीय सीट पर राम कृपाल यादव और मीसा भारती एक बार फिर सियासी अखाड़े में एक-दूसरे के सामने उतरे पाटलिपुत्र सीट का चुनाव एक सीट भर की बात नहीं थी, बल्कि इसे राजद सुप्रीमो लालू प्रसाद यादव की प्रतिष्ठा से जोड़कर भी देखा जा रहा था। रामकृपाल यादव जहां भाजपा के टिकट पर इस बार जीत की हैट्रिक पूरी करने के इरादे से उतरें, वहीं राजद प्रत्याशी मीसा भारती की कोशिश हार की हैट्रिक से बचने और पहली बार यहां से जीत दर्ज करने की भी थी। मीसा भारती ने इस बार आम जनता की नब्ज पकड़ ली और राम कृपाल यादव को 85 हजार 174 मतों के अंतर से पराजित किया और पहली बार लोकसभा सांसद बनीं। उन्होंने अपने साथ-साथ पिता के भी हार का बदला चुकाया और पाटलिपुत्र सीट पर पहली बार राजद को जीत दिलाई। पाटलिपुत्र सीट जीतकर मीसा ने पार्टी में अपना कद बड़ा कर दिया है। उन्होंने कहा कि वह अपने संसदीय क्षेत्र के विकास के लिए ज्यादा से ज्यादा काम करेंगी।

मीसा ने पाटलिपुत्र की धरती पर लालटेन 'रौशन' कर दी

22 मई 1976 को बिहार की राजधानी पटना में मीसा भारती का जन्म हुआ। पिता लालू प्रसाद और मां राबड़ी ने अपनी बड़ी बेटी का नाम रखा मीसा भारती। वर्ष 1976 में पूरे देश में आपातकाल लागू था और कई बड़े नेताओं को उस समय की सरकार ने जेल में डाल दिया था। इमरजेंसी में जिस कानून के तहत सरकार का विरोध कर रहे नेताओं और कार्यकताओं को जेल में डाला गया था उसे मेंटेनेंस ऑफ इंटरनल सिक्यूरिटी एक्ट (मीसा) के नाम से जाना जाता था। इमरजेंसी के दौरान जेले जाने वाले नेताओं ने लालू प्रसाद यादव भी शामिल थे। लालू प्रसाद यादव, उन दिनों जय प्रकाश नारायण के साथ मिलकर उस दौरान कांग्रेस का विरोध कर रहे थे। जब लालू प्रसाद यादव जेल में थे। उसी दौरान उनके घर बेटी का जन्म हुआ। ऐसे जब पहली बेटी का नाम रखने की बात सामने आई तो उनका नाम मीसा एक्ट के तहत मीसा रखा गया। हालांकि हाल ही में राबड़ी देवी ने बताया है कि उनकी बड़ी बेटी मीसा भारती का नाम लालू प्रसाद यादव ने नहीं बल्कि समाजवादी नेता जयप्रकाश नारायणने रखा था। मीसा अपने माता-पिता की नौ संतानों में सबसे बड़ी हैं। मीसा भारती ने अपनी बचपन की पढ़ाई पटना के नामी स्कूल माउंट कार्मल से पूरी की। मीसा भारती ने वर्ष 1993 में टिस्को कोटा के तहत महात्मा गांधी मेमोरियल मेडिकल कॉलेज, जमशेदपुर में एमबीबीएस कोर्स में दाखिला लिया। मीसा ने पीएमसीएच से स्त्री रोग विज्ञान में डिस्टिंक्शन के साथ एमबीबीएस परीक्षा में टॉप किया।

संक्षिप्त खबरें

डीएलएड की परीक्षा 12जून से 6 केन्द्रों पर

मुजफ्फरपुर।राज्य के सरकारी एवं निजी प्रशिक्षण संस्थान के डीएलएड पाठ्यक्रम प्रशिक्षण सत्र 2022- 24 के द्वितीय वर्ष एवं सत्र 2023 -25 के प्रथम वर्ष की बाह्य विषयों की परीक्षा 12 जून से प्रारंभ होकर 25 जून तक दो पाली में मुजफ्फरपुर जिले के 6 परीक्षा केंद्रो पर आयोजित किया गया है।नवरात्रू हायर स्कूल पताही, ,राज नारायण सिंह इंटर कॉलेज बालू घाट ,हरि सिंह हाई स्कूल, छपरा कांटी,महेश भगत बनवारी लाल इंटर कॉलेज बैरिया एलपी शाही इंटर कॉलेज,पताही एवं वाणिज्य कॉलेज को परीक्षा केंद्र बनाया गया है।स्वच्छ पारदर्शी एवं कदाचारमुक्त परीक्षा के संचालन हेतु जिला दंडाधिकारी श्री सुब्रत कुमार सेन एवं वरीय पुलिस अधीक्षक श्री राकेश कुमार द्वारा संयुक्तादेश जारी कर पर्याप्त संख्या में दंडाधिकारी एवं पुलिस पदाधिकारी की प्रतिनियुक्ति की गई है।संजीव कुमार अपर समाहर्ता सह अपर जिला दंडाधिकारी को उक्त परीक्षा के सहायक संयोजक के रूप में नामित किया गया है जो पूरी परीक्षा प्रक्रिया की निगरानी करते हुए परीक्षा का सफल संचालन कराना सुनिश्चित करेंगे।परीक्षा में सम्मिलित होने वाले सभी परीक्षार्थियों के लिए जूता मौजा पहनकर परीक्षा केंद्र पर प्रवेश करना वर्जित रहेगा।इसलिए परीक्षार्थी जूता मौजा की जगह चप्पल पहनकर ही परीक्षा केंद्र में प्रवेश करेंगे।

भीषण गर्मी के कारण पढ़ा रही शिक्षिका चक्कर खाकर गिरी

अलीनगर(दरभंगा)। प्रखंड के उत्क्रमित मध्य विद्यालय मनहर में रविवार की सुबह भीषण गर्मी के कारण वर्ग कक्ष में पढ़ा रही शिक्षिका दिल अफरोज चक्कर खाकर अचानक गिर गई। बच्चों के द्वारा शोर मचाने पर एचएम उमैर आलम और शिक्षक रफीउद्दीन सहित अन्य शिक्षकगण दौड़े। तत्काल ही उसके चेहरे पर पानी मारा गया। शिक्षक रफीउद्दीन ने स्थानीय चिकित्सक को बुलाकर उपचार कराया। गिरने के कारण काफी समय तक बेसुद्ध पड़ी रही। गिरने के कारण उसके सिर और हाथ में चोट भी लगी। डॉक्टर ने उपचार के बाद कहा कि भूखे रहने और भीषण गर्मी के कारण यह स्थिति बनी है। शिक्षक संघ के जिलाध्यक्ष रफीउद्दीन ने कहा कि विद्यालय मामले में सरकार की रवैया अच्छी नहीं होने का ही नतीजा इस तरह की घटनाएं है।

गर्मी से जनजीवन अस्त-व्यस्त, सड़कें लगती है वीरान, घरों में दुबके रहते हैं लोग

विभूतिपुर, समस्तीपुर। विभूतिपुर प्रखंड क्षेत्र में इन दिनों मानों सूर्य आग बरसा रही है।भीषण गर्मी मानव, पशु, पक्षी व समस्त जीव के लिए जानलेवा साबित हो रहा है।गर्मी अपने चरम पर है। गर्मी से लोगों का जनजीवन अस्त-व्यस्त हो गया है। सड़कें वीरान सी लगती हैं। दिन भर लोग घरों में दुबके रहते हैं। वहीं प्रखंड क्षेत्र में भीषण गर्मी का असर बिजली पर भी पड़ रहा है।बिजली का भी लुकाछिपी का खेल जारी है। भीषण गर्मी लोगों के लिए जंजाल बन गया है।इस मौसम में लोगों को कई तरह की बीमारी व लू लगने का डर भी सता रहा है। खास करके किसानों के साथ-साथ बच्चों, वृद्धों, पशु, पक्षियों का भी भीषण गर्मी से बुरा हाल हो रहा है। लोग मानसून की आस में टकटकी लगाकर देख रहे हैं।

पांच लीटर देसी शराब को पुलिस ने किया बरामद

कल्याणपुर, समस्तीपुर। कल्याणपुर थाना क्षेत्र के मिजार्पुर गांव से पुलिस ने गुप्त सूचना के आधार पर 5 लीटर देसी शराब के साथ एक को गिरफ्तार कर लिया है। गिरफ्तार कारोबारी की पहचान मिजार्पुर गांव निवासी शंकर सहनी के रूप में हुई है। वहीं प्रशिक्षु डीएसपी सह थाना अध्यक्ष नीतीश चन्द्र धारिया ने बताया कि उत्पाद अधिनियम के तहत प्राथमिक की दर्ज करते हुए समस्तीपुर कोर्ट भेजने की बात कही है।

पटना में इलाज के दौरान युवक की मौत, परिजनों ने सड़क जाम कर किया आरोपियों को गिरफ्तार करने की मांग

युवक को बुलाकर ले जाने और उसे जहर देने का लगाया आरोप, गंभीर हालत में गाछी से हुआ था बरामद

● आरोपी पर लगा ब्राउन शुगर का धंधा करने का आरोप

समस्तीपुर, प्रात : किरण संवाददाता

मुफस्सिल थाना क्षेत्र के जितवारपुर चांदनी चौक पर रविवार की सुबह जहर खिलाकर एक युवक को मारने का आरोप लगाते हुए आक्रोशित लोगों ने सड़क जाम कर दिया। आक्रोशित लोग हत्यारोपियों की अविलंब गिरफ्तारी की मांग कर रहे थे। सूचना पर पहुंची मुफस्सिल पुलिस के द्वारा समझा-बुझाकर व कार्रवाई का आश्वासन देकर सड़क जाम समाप्त कराया गया। वहीं शव को जब्त कर परिजनों की उपस्थिति में पोस्टमार्टम कराया गया और शव उन्हें सौंप दिया गया। मृतक की पहचान मुफस्सिल थाना क्षेत्र के निजामत वार्ड नंबर 16 कन्हैया चौक निवासी शिवजी महतो के पुत्र छोटू कुमार (22 वर्ष) के रूप में हुई है। इस संबंध में मृतक की मां के आवेदन के आधार पर मुफस्सिल थाना में एफआईआर भी दर्ज किया गया है। जिसमें संतलाल महतो के पुत्र बलराम महतो, विनोद महतो के पुत्र अमरजीत महतो व दो-तीन अन्य अज्ञात को आरोपित किया गया है। घटना के संबंध में मृतक की मां शीला देवी का बताना है कि बीते एक जून की शाम उनका पुत्र छोटू कुमार अपने घर से दवा लेने के लिए निकला था और उसके पास चिमनी भट्टे पर देने के लिए 25 हजार रुपए भी था। इस दौरान कन्हैया चौक के पास स्थित अपने कॉफी शॉप की दुकान में बैठा हुआ था। जहां विनोद महतो का पुत्र अमरजीत कुमार उसे बुलाकर अपने साथ ले गया था और उसे एक जून की रात गंभीर हालत में बरामद किया गया था। देर रात तक घर वापस नहीं आने के बाद परिजनों ने उसकी खोजबीन शुरू की और उसके मोबाइल पर फोन किया तो उधर से संतलाल महतो का पुत्र बलराम महतो ने बताया कि छोटू काफी नशा में है तथा बेहोश होकर सोया हुआ है। यह कहकर उसने फोन को ऑफ कर दिया। काफी खोजबीन करने के बाद छोटू को जितवारपुर निजामत के एक निजी स्कूल के पास गाछी से बरामद किया गया। इस संबंध में दर्ज एफआईआर में कहा गया है कि इस दौरान छोटू ने बताया कि बलराम महतो, अमरजीत कुमार व उसके दो-तीन अन्य साथियों ने मिलकर कहीं से लाकर उसे यहां फेंक दिया है। इसके बाद परिजन उसे इलाज के लिए शहर के एक निजी अस्पताल में ले गए। जहां से बेहतर इलाज के लिए उसे पटना रेफर कर दिया गया। इलाज के दौरान शनिवार को उसकी मौत हो गई। मृत युवक की मां शीला देवी के अनुसार आरोपी बलराम महतो ब्राउन शुगर का धंधा करता है और उसके ऊपर पूर्व से ही कई संगीन आपराधिक मामले दर्ज हैं। उन्होंने आरोप लगाते हुए कहा है कि आरोपियों के द्वारा उसके पास से रुपए व अन्य सामान भी ले लिया गया और उसे जहर अथवा कोई अन्य विषैला पदार्थ खिलाया गया, जिससे उसकी मृत्यु हो गई। वहीं इस संबंध में मुफस्सिल थानाध्यक्ष पिंकी प्रसाद ने कहा कि मृतक के मां के आवेदन के आधार पर मामला दर्ज किया गया है। आरोपियों की गिरफ्तारी के लिए पुलिस छापेमारी कर रही है जल्द ही उन्हें गिरफ्तार कर लिया जाएगा।

माइक्रो फाइनेंस कर्मी की प्रताड़ना से तंग उर्मिला ने की आत्महत्या : माले

प्रात : किरण संवाददाता

मुजफ्फरपुर। जिले के बन्दरा प्रखण्ड के सिमरा निवासी रसोइयां उर्मिला देवी ने माइक्रो फाइनेंस कर्मी की प्रताड़ना से तंग होकर आत्म हत्या कर लिया। यह आरोप भाकपा माले की जांच टीम ने लगाया है। टीम ने माइक्रो फाइनेंस कंपनी पर अवैध दर्जनों समूह बनाकर एक ही व्यक्ति के नाम से अवैध तरीके से 5 - 5 बार लोन दर्शाकर लाखो रुपए हडपने की कोशिश का आरोप लगाते हुए जांच की मांग की है। भाकपा माले की छः सदस्यीय जाँच टीम ने मृतक रसोइया उर्मिला देवी पति विनय पासवान के घर पर जाकर पूरे घटना की गहनता से जांच किया। जांच के बाद जारी प्रेस रिलीज में कहा गया है कि जांच के दौरान बड़ी संख्या में ग्रामीण उपास्थित थे।उर्मिला देवी की 16 वर्षीय पुत्री करीना कुमारी ने टीम को बताया कि घटना की रात्री 8 बजे जब वह दोनो बहन और मां पडोसी की छत पर सोई हुई थी तो फाइनेंस कम्पनी का स्टाफ गाली-गलौज व धमकी देते हुए पैसा जमा करने की बात कहकर चला गया। उसने मां को नीचे नही जाने दिया। फिर शायद मां रात्रि में घर पर चली गई। सुबह 5 बजे जब वह घर पर गई तो उसकी मां गले में मफलर से घर की बल्ली में लटकी हुई थी। वह मर गई थी।हल्ला करने पर ग्रामीण लोग काफी संख्या में उपस्थित हो गए।ग्रामीणों एवं समूह से जुड़ी महिलाओं ने बताया कि उर्मिला देवी के पडोस के कमोद शर्मा एवं उसकी पत्नी निरंजन देवी मृतक के घर बराबर आना जाना लगा रहता था। उसकी पत्नी निरंजन देवी ने रसोइया उर्मिला देवी के माध्यम से दर्जनों महिलाओं के नाम पर फर्जी तरीके से कई समूह से लाखो रुपए लेकर कुमुद शर्मा एवं उसकी पत्नी ने निजी संपत्ति बढ़ाने का काम किया। माइक्रोफाइनेंस कंपनी का पैसा हड़पने की नियत एवं माइक्रो फाइनेंस कंपनी के द्वारा अवैध तरीके से दर्जनों लोन निकालकर लाखो रुपए हड़प लिया गया। माइक्रो फाइनेंस कंपनी की साठ -गांठ कर दोनो पति पत्नी ने उर्मिला देवी की हत्या कर दिया है। घटना स्थल से कमोद शर्मा का चप्पल भी बरामद हुआ है। उर्मिला देवी के लड़का का एक साल पूर्व रोड एक्सीडेंट होने से मौत हो गई थी। उसकी दो लड़की करीना कुमारी 16 वर्ष। एवं कनिका 13 वर्ष की है। माले की टीम ने जिला प्रशासन से जांच एवं मृतकाउर्मिला देवी के आश्रित को 10 लाख मुआवजा दिए जाने की मांग की है। इसी के साथ माइक्रो फाइनेंस कंपनी पर प्रतिबंध लगाते हुए कंपनी की संपति को जप्त कर कानूनी कार्यवाही करने की भी मांग जांच टीम ने की है। जांच टीम में सत्रुधन सहनी भाकपा माले राज्य कमिटी सदस्य, परशुराम पाठक जिला सचिव बिहार विद्यालय रसोइया संघ, भाकपा माले जिला कमिटी सदस्य विमलेश मिश्र, ऐपवा नेत्री रानी प्रसाद भाकपा माले बंदरा प्रखंड सचिव रामबली मेहता, संजय कुमार दास बिहार विद्यालय रसोइया संघ बंदर प्रखंड सचिव, सत्रुधन मेहता, रामबाबू ठाकुर शामिल थे।

स्त्रियां शक्ति स्वरूपा होती है, सही मेकअप उन्हे और शक्तिशाली बनाती है : श्रेया सिंह

प्रात : किरण संवाददाता

दरभंगा। अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद दरभंगा इकाई के द्वारा प्रतिवर्ष गर्मी की छुट्टियोंमें आयोजित हो रहे निःशुल्क प्रशिक्षण हेतु सर्जना निखार शिविर अंतर्गत आज चौथे दिन योग, मिथिला पेंटिंग, ब्यूटीशियन, फाइन आर्ट, व्यक्तित्व विकास एवं नृत्य आदि विषयो का प्रशिक्षण दिया गया। प्रातःकाल में वर्ग का आरंभ योगाचार्य सेवानिवृत प्राध्यापक बीरेंद्र कुमार सिंह उर्फ शाश्वत प्रदीप द्वारा प्रार्थना पश्चात पवन मुक्तासन, पैर की अंगुलियों को मोड़ना, वज्रासन, शशगासन कर शांतिपाठ से खत्म हुआ। मिथिला पेंटिंग की प्रशिक्षण दे रही आरती कुमारी ने मछली, शंख और उसको सजाने की तरीका की बारीकियों से अवगत करवाया। ब्यूटीशियन का प्रशिक्षण दे रही श्रेया मेकओवर की निदेशक श्रेया सिंह ने कहा की स्त्रियां शक्ति स्वरूपा होती है लेकिन एक सही मेकअप उन्हे शक्तिशाली बनाती है। साथ ही चेहरे के प्रकार व मेकअप के लिए आवश्यक सामग्री व उपयोग पर प्रकाश डाला। फाइन आर्ट का प्रशिक्षण दे रहे रवि वर्मा, प्रियंका चौधरी, रिंकू राय, नूतन कुमारी ने छात्राओं को दीवाल की लटकन और गणेश जी की कलाकृति में रंग भरना सिखाया। व्यक्तित्व विकास का वर्ग प्रदेश कार्यकारिणी सदस्य हरिओम झा ने लिया जिसमे उन्होंने आपदा प्रबंधन अंतर्गत सर्पदंश से बचाव विषय को रखते हुए अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद की गतिविधियों से अवगत करवाया।नृत्य का प्रशिक्षण दे रही नृत्यर्पण नूपुर कलाश्रम की प्रशिक्षिका श्रेया भारद्वाज ने शास्त्रीय नृत्य अंतर्गत कृष्ण भजन पर बाल्यावस्था से युवावस्था तक की ज्ञान को नृत्य द्वारा अभ्यास कराया।शिविर के सहयोग में प्रदेश कार्यकारिणी सदस्य हरिओम झा, कार्यक्रम संयोजक सोनम कुमारी, नेहा, आकांक्षा सहित दर्जनों कार्यकर्ता सहयोग में उपस्थित थे।

पालिमोहन उच्च विद्यालय के प्रांगण के निःशुल्क स्वास्थ शिविर लगाया गया

प्रात : किरण संवाददाता

मधुबनी खजौली थाना क्षेत्र के पालिमोहन उच्च विद्यालय के परिसर में रविवार को स्व. सुदिष्ट नारायण झा की पुण्य तिथि पर पालिका विनायक हास्पिटल पटना के डा. बी. झा. मृणाल के नेतृत्व में निःशुल्क स्वास्थ शिविर का आयोजन किया गया. इस निः शुल्क स्वास्थ शिविर में पटना दरभंगा मधुबनी चिकित्सकों द्वारा हड्डी विभाग शिशु विभाग मेडिसिन विभाग स्त्री विभाग एव आँख विभाग सहित अन्य रोगों से ग्रस्त 351 मरीजों को इलाज कर मुप्त में दवा दी गयी.इस शिविर में कलुआही खजौली एव बेनीपट्टी प्रखंड़ से आये दर्जनो मरीज को डा. बी. झा. मृणाल हड्डी रोग विशेषज्ञ अलोका नंद झा सहित अन्य चिकित्सकों द्वारा निः शुल्क इलाज कर मुफ्त में दवा दी. वही डा बी.झा मृणाल ने कहा कि अपने गांव में आकर गांव,समाज के लोगो को सेवा के भाव को लेकर निः शिविर को लगाया गया है. उन्होंने कहा कि यह निः शुल्क स्वास्थ शिविर सेवा के भाव से सभी प्रकार के रोगों के मरीज को इलाज कर मुफ्त में दवा दिया गया.वही निः शुल्क स्वास्थ शिविर के समापन के बाद उपस्थित जनप्रतिनिधि समाजसेवी को पाग दोपता से सम्मानित किया गया. इस मौके सदाशिव मिश्र प्रखंड़ प्रमुख सज्जन सिंह भैरव झा कमलेश मिश्र सहित दर्जनों ग्रामीण एव जनप्रतिनिधि मौजूद थे.

पैनेसिया नर्सिंग कॉलेज में शपथ ग्रहण समारोह आयोजित

समस्तीपुर, प्रात : किरण संवाददाता

समस्तीपुर जिले के वारिसनगर प्रखंड के अंतर्गत मन्नीपुर मंदिर के पास स्थित पैनेसिया नर्सिंग कॉलेज के सभा कक्ष में दीप प्रज्वलन एवं शपथ ग्रहण समारोह 2024 का आयोजन किया गया। समारोह का उद्घाटन बिहार विधानसभा के मुख्य सचेतक अख्तरुल इस्लाम शाहीन ने दीप प्रज्वलित कर किया। जिले के चर्चित चिकित्सक डॉ. हेमंत कुमार ने कहा कि दीप प्रज्वलन और शपथ ग्रहण समारोह हर नर्स के जीवन का एक शुभ अवसर होता है, जिसे फ्लोरेंस नाइटिंगेल, लेडी विद लैंप के सम्मान में आयोजित किया जाता है। दीप प्रज्वलन समारोह औपचारिक रूप से नर्सिंग पेशे में छात्र के प्रवेश को मान्यता देता है। कॉलेज प्रबंधन ने आगत अतिथियों का स्वागत बुके तथा मोमेंटो से किया। इस अवसर पर समाज में नर्सो का योगदान विषयक विचार गोष्ठी का भी आयोजन हुआ। समारोह को सम्बोधित करते हुए बिहार विधानसभा के मुख्य सचेतक अख्तरुल इस्लाम शाहीन ने कहा कि नर्सिंग क्षेत्र का कार्य निःस्वार्थ सेवा का कार्य है। वे जितना दया और करुणा के भाव से भरकर मरीज की सेवा करते हैं उतना दिल की दुआयें मिलती है। यह दुआएं ही जीवन की सबसे बड़ी पूंजी है। उन्होंने कहा कि एक जिंदगी बचाने वाले को हीरो कहते है और 100 जिंदगी बचाने वाले को नर्स कहते है। नर्स का पूरा जीवन सेवा भाव से भरा होता है। सेवा, समर्पण और सहानुभूति का दूसरा नाम ही नर्स है। समाज में नर्सों के योगदान को भुलाया नहीं जा सकता। मौके पर डॉ. मंजुला, डॉ. पुष्पा रानी, डॉ. हेमंत कुमार, डॉ. डीके शर्मा, डॉ. धुरंधर सिंह, डॉ. रामा नितेश सिंह, डॉ. वि रंजन, बीबी फातिमा टीचर्स ट्रेनिंग कॉलेज के अध्यक्ष मो. तैयब परवेज, स्थानीय कॉलेज की प्राचार्या ज्योति, समाजसेवी मो. अंजुम, मो. कमर जावेद, मो. शरीफ आलम उस्मानी, मो. रिजुउल इस्लाम रिज्जू, जिला राजद प्रवक्ता राकेश कुमार ठाकुर, समाजसेवी नरेन्द्र बाहुबली, मो. नुरूजोहा कमाल आफो, संतोष कुमार यादव, रवि आनंद, ट्रेड यूनियन नेता एसके निराला, मो. चाँद, सैयद फैसल आलम मन्नू, मो. अमरोज, मो. खालिक, मो. महफूज आलम सोनू, अमरजीत यादव, अनिल यादव, मो. चुन्नू, डॉ. सफदर, डॉ. रामपुकार कुशवाहा, डॉ. अमरजीत दास, राकेश मिश्रा आदि मौजूद थे।

आरोपियों के आवेदन पर पुलिस ने पीड़ित के ही विरुद्ध दर्ज कर दिया रंगदारी का केस, पीड़ित को हुई जेल

एससी-एसटी मामले में पुलिस के टालमटोल के बाद कोर्ट के आदेश पर हुआ था एफआईआर दर्ज

समस्तीपुर, प्रात : किरण संवाददाता

मुफ्फसिल पुलिस का एक नया कारनामा सामने आया है। जहां उसने पीड़ित के आवेदन पर मामला दर्ज करने के बजाय विपक्षी के आवेदन पर पीड़ित के ही विरुद्ध मामला दर्ज कर लिया और वहीं पीड़ित उसी मामले में अभी जेल में बंद है। पीड़ित के आवेदन पर एफआईआर दर्ज नहीं करने पर पीड़ित कोर्ट की शरण में गया। जहां से आदेश के बाद पुलिस को एफआईआर दर्ज करना पड़ा। मामला मुफ्फसिल थाना क्षेत्र के वार्ड 17 जितवारपुर निजामत का है। जहां पीड़ित शंभू

पासवान के अनुसार बीते 13 दिसंबर को वह जितवारपुर कोठी घाट के पास एक दाह संस्कार में भाग लेने के लिए गए हुए थे। दाह संस्कार के लिए वह वहीं पर जितवारपुर कोठी ढाला के पास एक बेल के पेड़ से टहनी तोड़ रहे थे। इसी दौरान कोठी में रहने वाले विभूतिपुर थाना क्षेत्र के साखमोहन पतैलिया निवासी मनटुन सिंह एवं उनके पुत्र राहुल सिंह के द्वारा बेल का टहनी तोड़ने को लेकर जाति सूचक गाली देते हुए उन्हें मारपीट कर गंभीर रूप से घायल कर दिए जाने का आरोप लगाया गया था। वहीं शोर-शराबा सुनकर उन्हें बचाने पहुंचे राजकुमार पासवान के पुत्र रोहित कुमार के साथ भी मारपीट करने का आरोप लगा था। इस संबंध में पीड़ित की पत्नी ने कहा है कि मुफ्फसिल पुलिस ने उसके पति के आवेदन पर मामला दर्ज नहीं किया था

और उल्टे आरोपियों के आवेदन पर उसके पति के विरुद्ध मामला दर्ज कर दिया था। जिस मामले में अभी उसका पति शंभू पासवान जेल में है। वहीं कोर्ट के आदेश के बाद पुलिस ने उनका एफआईआर दर्ज किया है,

लेकिन उन लोगों ने पुलिस से साथ सांठगांठ कर लिया है और सुपरविजन के नाम पर उनके मामले को रफा-दफा करने का प्रयास किया जा रहा है। वहीं इस संबंध में एएसपी सह सदर एसडीपीओ-1 संजय कुमार पाण्डेय ने कहा कि पुलिस पूरी ईमानदारी के साथ अपना काम कर रही है और जो भी दोषी पाए जाएंगे उनके विरुद्ध विधि सम्मत कार्रवाई की जाएगी।

अब इंटरमीडिएट कक्षा में बायोलॉजी पढ़ने वाली लड़कियां भी बन सकेंगी इंजीनियर : प्रो. प्रेम मोहन

प्रात : किरण संवाददाता

दरभंगा।दरभंगा के डॉ ए पी जे अब्दुल कलाम विमेंस इंस्टिच्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी में जैव सूचना विज्ञान में नामांकन प्रारंभ है। जिसमें पढ़ाई के तुरंत बाद हासिल होता हैं अच्छी जॉब।साइंस से बायोलॉजी लेकर 12वीं करने वाले छात्र छात्राएँ बायोइन्फॉर्मेटिक्स में बीटेक कर सकते हैं। आगे इसमें पोस्ट ग्रेजुएशन या बायोइन्फॉर्मेटिक्स में एडवांस्ड डिप्लोमा भी किया जा सकता है। प्राइवेट कंपनी में नौकरी के अवसर के साथ ही इसमें पीएचडी कर प्रोफेसर एवं साइंटिस्ट भी बन सकते हैं। आर्थिक रूप से कमजोर परिवार की बच्चियाँ भी करा सकेंगी नामांकन।फीस की प्रतिपूर्ति बिहार सरकार की छात्र ऋण योजनाओं द्वारा की जाएगी । सांख्यिकी और गणित की रिमेडियल कक्षाएं छात्रों को सशक्त बनाने के लिए आयोजित की जाएंगी। बायोइन्फॉर्मेटिक्स कंप्यूटर टेक्नोलॉजी का एक खास एप्लीकेशन है। इस कोर्स को इन्फोर्मेशन टेक्नोलॉजी और मॉलिक्यूलर बायोलॉजी को मिलाकर बनाया गया है। उक्त बाते संस्थान के निदेशक प्रो प्रेम मोहन मिश्रा ने कहा की कोर्स पूरा करने के बाद ये छात्राएँ रॉश, कैबेज, थर्मो फिशर साइंटिफिक, क्यूआईएजीईएन,जीवीके बायोसाइंसेज, डीआरएल जैसी कंपनियों में अच्छी नौकरी हासिल कर सकती हैं। इस के अतिरिक्त फील्ड रिसर्च साइंटिस्ट, डेटा बेस प्रोग्रामर, साइंटिफिक क्यूरेटर, जीन एनालिस्ट, प्रोटीन एनालिस्ट, फेलोजेनिटिस्ट, बायोइनफॉरमैटिक्स सॉफ्टवेयर डेवलपर, कम्प्यूटेशनल ऐनालिस्ट, नेटवर्क एडमिनिस्ट्रेटर, स्ट्रक्चरल एनालिस्ट, मॉलिकुलर मॉडलर, जैव-सांख्यिकीविद, जैव-यांत्रिकी, फामाकोजेनेटिशियन, फामाकोजेनोमिक्स आदि जॉब प्रोफाइल का कार्य मिल सकता है।

किलकारी के बच्चे सीख रहे हैं अभिनय कला की बारीकियां

प्रात : किरण संवाददाता

मुजफ्फरपुर।बाल भवन किलकारी जिला स्कूल छात्रावास में राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय के सुमित ठाकुर 10 दिवसीय नाट्य कार्यशाला में प्रशिक्षक के रुप में बच्चों को अभिनय की बारीकी को सिखा रहें हैं। 5 से 14 जून तक नाट्य कार्यशाला में बच्चे शारिरीक भाषा (बॉडी लैंग्वेज) नौ रस, चेहरा का भाव, थियेटर एक्सेरसाइज के साथ साथ वाचिक अभिनय, सांस का अभ्यास, भाषा, उच्चारण के साथ साथ नाटक अंधेर नगरी चौपट राजा लिए बच्चों का कास्टिंग किया गया हैं।राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय के सुमित ठाकुर ने बताया कि अंधेरनगरी चौपट राजा, टके सेर भाजी टके सेर खाजा... भारतेंदु हरिश्चंद्र के लिखे चर्चित नाटक हैं। नाटक में एक ऐसे गुरु चेले की कहानी है जो घूमते-घूमते अंधेर नगरी में चले जाते हैं। वहां टके सेर भाजी और टके सेर खाजा को देख कर काफी खुश होते हैं लेकिन उनकी खुशी तब खत्म हो जाती है जब एक बकरी के मरने पर उन्हें राजा के आदेश पर फांसी पर चढ़ाया जाने लगता है। नाटक में दृष्टि, रौशनी, रिद्धि, विवेक राज, रिया, पल्लवी, प्रीति,अमितेश राज, कर्ण कुमार, अंकित कुमार, अनुराधा कुमारी, अनुष्का, डॉली कुमारी ,शिवम कुमार, याशि, परिधी, सुहाना कुमारी,, गुरशिरत कौर, संजना, सादिया, दिव्या, सोनम, श्रुति, कृति, लक्ष्य, सत्यम, कनिस्तका, असिका चंचल को कास्ट किया गया हैं। बिहार बाल भवन किलकारी , जिला स्कूल मुजफ्फरपुर में ह्यअंधेर नगरी चौपट राजाह्ल का निर्देशन करने वाले राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय के सुमित ठाकुर अस्ताना कजाकिस्तान में सीता राम रामायण पर आधारित नाटक को कजख और रसिया भाषा में निर्देशन करने का कार्य किए हैं।

नहीं रहे पद्मश्री राम कुमार मल्लिक, विद्यापति सेवा संस्थान ने जताई शोक संवेदना

प्रात : किरण संवाददाता

दरभंगा।ध्रुपद गायकी के लिए विश्वविख्यात दरभंगा अमता घराना के मजबूत स्तंभ पं राम कुमार मल्लिक का शनिवार की देर रात उनके पैतृक आवास पर निधन हो गया। उनके निधन की सूचना मिलने पर विद्यापति सेवा संस्थान के महासचिव डा बैद्यनाथ चौधरी बैजू ने उनके अमता गांव स्थित आवास पर जाकर उनके पार्थिव शरीर पर माल्यार्पण कर मिथिलावासी की ओर से उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की। इस दौरान उनके साथ बेनीपुर के विधायक प्रो विनय कुमार चौधरी सहित अनेक गणमान्य लोग उपस्थित थे। मौके पर विद्यापति सेवा संस्थान की ओर से पद्मश्री राम कुमार मल्लिक के प्रति शोक संवेदना व्यक्त करते हुए विद्यापति सेवा संस्थान के महासचिव डा बैद्यनाथ चौधरी बैजू ने कहा कि सर्वोच्च नागरिक सम्मान पद्मश्री से सम्मानित, मिथिला विभूति और मिथिला रत्न सम्मानोपाधि से अलंकृत शास्त्रीय संगीत के प्राचीनतम शैली ध्रुपद धमार के प्रख्यात गायक पं राम कुमार मल्लिक मिथिला की शान थे। उनके निधन से मिथिला और शास्त्रीय संगीत क्षेत्र की अपूर्णीय क्षति हुई है। मैथिली अकादमी के पूर्व अध्यक्ष पं कमलाकांत झा ने संगीत के क्षेत्र में उनके उल्लेखनीय योगदान के लिए भारत सरकार द्वारा पद्मश्री सम्मान से नवाजे जाने को संपूर्ण मिथिला का सम्मान बताया। प्रो जीवकांत मिश्र ने कहा कि अपनी चंहुमुखी गायकी के लिए शास्त्रीय संगीत की दुनिया में पं राम कुमार मल्लिक अलग पहचान रखते थे। गुरू शिष्य परंपरा के तहत उन्होंने दरभंगा अमता घराने की 500 वर्षों की गौरवशाली परंपरा और उनकी विरासत को सहेज रखी थी। मीडिया संयोजक प्रवीण कुमार झा ने कहा कि भारत, जर्मनी और फ्रांस की रिकॉर्डिंग कंपनियों द्वारा सहेजी गई ध्रुपद, धमार, ठुमरी और भजन की उनकी प्रस्तुतियां आने वाली पीढ़ी के लिए पथ प्रदर्शक का काम करेगी। शोक जताने वाले अन्य लोगों में डा महानंद ठाकुर, दुर्गा नन्द झा, प्रो चंद्रशेखर झा बूढ़ाभाई, विनोद कुमार झा, प्रो विजय कांत झा, डा सुषमा झा, डा ममता ठाकुर, आशीष चौधरी, मणिभूषण राजू, पुरुषोत्तम वत्स आदि शामिल थे।

जनता की समस्या के निदान का प्रयास करते हुए, सरकार द्वारा चलाई जा रही योजनाओं पर ध्यान दें

प्रात : किरण संवाददाता

मधुबनी जयनगर कार्य में लापरवाही बर्दाश्त नहीं होगी। जनता की समस्या के निदान का प्रयास करते हुए सरकार द्वारा चलाई जा रही योजनाओं पर ध्यान दे। उक्त निर्देश शनिवार को प्रखंड विकास पदाधिकारी राजीव रंजन ने टीपीसी भवन में आयोजित साप्ताहिक समीक्षा बैठक में दिया। साथ ही इस दौरान पंचायत सचिव तकनीकी सहायक कार्यपालक सहायक लेखापाल व अन्य कर्मचारियों को बिना सूचना के प्रखंड मुख्यालय नहीं छोड़ने का आदेश दिया। उन्होंने कहा कि क्षेत्र में विकास कार्यों को तेजी लाने के लिए हम सबों को मिलकर काम करना होगा। उन्होंने कड़ा रुख अख्तियार करते हुए कहा कि क्षेत्र के कबीर अंत्येष्टि जन्म-मृत्यु प्रमाण पत्र स्वच्छता सहित पंचायत की अन्य योजना को गति देने के लिए काम करना है। उन्होंने कहा कि इस समय प्रत्येक क्षेत्र में पेयजल की घोर समस्या उत्पन हो गयी है। इसके लिए हम सबों को विशेष रूप से सजग रहकर कार्य करना होगा। उन्होंने कहा कि अब प्रत्येक सप्ताह पंचायत में चल रहे विकास कार्यों की समीक्षा की जाएगी और उस पर तेजी से अमल भी किया जाएगा। उन्होंने उपस्थित कर्मचारियों को पंचायत में घूम घूम कर लोगों की समस्याओं को सुनने व उनकी समस्या के समाधान करने को लेकर भी विचार विमर्श किया गया। बीडीओ ने पहले प्रखंड में चल रहे प्रधानमंत्री आवास एवं मनरेगा योजना का समीक्षा पंचायत वार किया गया। जिसमें सभी आधा अधूरा पीएम आवासों को जल्द पूर्ण करने का निर्देश उपस्थित सभी मुखिया सच्चिव एवं अभियंताओं को दिया गया।

बंदूक की नोक पर शिक्षिका के पति का रास्ते से हुआ अपहरण

प्रात : किरण संवाददाता

मधुबनी जिला के खजौली थाना क्षेत्र के फूलचनिया चौक से पूरब त्रिमुहानी के समीप दिन शनिवार को लक्ष्मीपुर गांव निवासी व कलुआही में पदस्थापित शिक्षिका अंबे कुमारी के पति अमित कुमार मिश्रा का अपहरण अपराधियों ने दिनदहाड़े पिस्टल के नोक पर कर लिया। इस संबंध में शिक्षिका ने खजौली थाना में आवेदन दिया है। दिया गया आवेदन के अनुसार वह शनिवार के दिन कलुआही बीआरसी से काम निबटाकर बाइक पर अपने पति के साथ घर वापस आ रही थी। उसी क्रम में फुलचानिया चौक से पूरब लक्ष्मीपुर जाने वाली रास्ते में एक काले रंग की स्कॉर्पियो से चार अपराधियों ने बाइक को घेर लिया एवं बंदूक के नोक पर उसके पति को जबरन स्कॉर्पियो में बैठा लिया। पति का मोबाइल भी छीन लिया एवं बाबूबरही की ओर लेकर भाग गया। शिक्षिका ने आवेदन में चार अपराधियो के नाम का खुलासा किया है जो इस प्रकार हे। इसमें खजौली थाना क्षेत्र के ठाहर गांव निवासी घनश्याम साफी के पुत्र बीरू साफी, एवं रुद्रपुर थाना क्षेत्र के पिरसोलिया गांव के नरेश साफी, रमेश साफी व शंकर यादव शामिल है। खजौली पुलिस घटनास्थल पर पहुंचकर सभी बिंदुओं की जांच कर रही है। लोगो पूछताछ कर रही है। थानाध्यक्ष प्रवीण कुमार सिंह ने बताया कि मामले की जांच की जा रही है।

बहेड़ा-सकरी मुख्य मार्ग में सड़क की जमीन का सीमांकन कार्य शुरू

प्रात : किरण संवाददाता

बेनीपुर(दरभंगा)। दो पथ प्रमंडल बेनीपुर एवं दरभंगा के क्षेत्राधिकार बहेड़ा-सकरी मुख्य मार्ग में चल रही चौड़ी व मजबूती करण कार्य में पथ की अतिक्रमित भूमि बाधक बना हुआ है। आपके अपने अखबार प्रातः किरण में अतिक्रमित सड़क की जमीन का सीमांकन से छपी खबर पर आरसीडी बेनीपुर गंभीरता से लिया है तथा हरकत में आकर 7 जून से कंथूडीह में नापी शुरू कर दिया। विभागीय सूत्रों को मुताबिक बहेड़ा से नेहरा गणपति झा के घर तक पथ प्रमंडल बेनीपुर तथा सकरी एनएच-57 से नेहरा पीएनबी बैंक तक पथ प्रमंडल दरभंगा के अधीन है। बहेड़ा से सकरी सड़क की लंबाई 16 किलोमीटर है।

संक्षिप्त खबरें

घर पर पानी गिराने से मना करने पर पांच लोगों ने गृहस्वामी के साथ की मारपीट

जमुई [झाझा] मिटटी के घर के पास पानी गिराने से घर गिरने की आशंका पर गृहस्वामी के द्वारा पानी गिराने वालों को पानी गिराने से मना करने पर गृहस्वामी के साथ मारपीट कर घायल कर दिए जाने का मामला सामने आया। मामला सिमुलतला थानाक्षेत्र के सोलखोडीह गांव का है। घायल की पहचान सुकर हांसदा के रूप में हुई जिसे परिजनों की मदद से इलाज के लिए रेफरल अस्पताल लाया गया जहां चिकित्सक के द्वारा घायल का इलाज किया गया। मेरे मिटटी के मिटटी के घर पर चेतन किस्कु पानी गिरा रहा था जिससे मेरा मिटटी का घर गिर जाता। इसी बात को लेकर जब चेतन किस्कु से शिकायत किया तो वे और उसकी पत्नी मुनि हांसदा, मंझला टुडु सहित पांच लोगों ने मेरे साथ मारपीट करने लगा और मेरे सिर पर लाठी से प्रहार कर मुझे घायल कर दिया। घायल अवस्था में मै सिमुलतला थाना में घटना की जानकारी दी जिसके बाद पुलिस ने इलाज करवाने के लिए अस्पताल भेज दिया।

नए आदेश, स्कूलों का निरीक्षण अब प्रत्येक दिन के बदले सप्ताह में एक दिन आएंगे पदाधिकारी

आज से सुबह 6:30 से 12:10 तक संचालित किए जाएंगे सरकारी स्कूल

● बीच में शिक्षकों को 20 मिनट तक स्नेक्स ब्रेक भी मिलेगा

प्रात : किरण संवाददाता

जमुई/गिद्धौर शिक्षा विभाग के अपर मुख्य सचिव के के पाठक के ताबड़तोड़ आदेशों से आहात शिक्षकों को नए एसीएस के चार्ज संभालते ही राहत भरा आदेश जारी हुआ है। पूर्व एसीएस के हटते ही स्कूलों के टाइम टेबल में बदलाव के साथ कई चीजों सोमवार से स्कूलों में बदल जाएगी। नए अपर मुख्य सचिव डॉक्टर एस सिद्धार्थ ने स्कूल के संचालन के पुराने समय सुबह 6 बजे से दोपहर 1:30 बजे में बदलाव करते हुए अब सुबह 6:30 से दोपहर 12:10 बजे तक कर दिया है। इसमें भी वर्ग संचालन का समय 11:30 बजे तक ही रहेगा। शिक्षकों की परेशानी का सबसे बड़ा कारण बना रोज कई बार स्कूलों के निरीक्षण की गतिविधियों पर रोक लगा दी है। अब सप्ताह में एक बार स्कूलों का वास्तविक निरीक्षण शिक्षा विभाग के पदाधिकारी करेंगे।इसके लिए आरडीडीई को स्कूलों के निरीक्षण के लिए रोस्टर चार्ट तैयार करने के लिए कहा गया है। इतना ही नहीं पहले निरीक्षण के डर से वर्ग कक्ष में कैद रहने वाले शिक्षकों को 20 मिनट का स्नैक्स ब्रेक भी मिलेगा। नए आदेश के मुताबिक सोमवार से स्कूलों का संचालन सुबह 6:30 से शुरू होगा। 6:45 बजे तक प्रार्थना होगी। इसके बाद प्रत्येक घंटी 35 मिनट की होगी। पहले घंटी 6:45 से 7:20 बजे तक जबकि सातवीं घंटी 10:15 बजे से 10:50 तक चलेगी। 10:50 बजे से 11:30 बजे तक कक्षा 3 से 8 तक के पढ़ाई में कमजोर छात्रों के लिए मिशन दक्ष की कक्षाएं चलेंगी। प्रारंभिक स्कूलों में मिड डे मील की

व्यवस्था 11:30 बजे से 12:10 बजे के बीच कराया जाएगा।जबकि इसी दौरान माध्यमिक स्कूलों के छात्रों की विशेष कक्षा के अलावा खेलकूद की गतिविधियां संचालित की जाएगी।

पदाधिकारीयों को निरीक्षण के प्रति होना पड़ेगा जवाबदेह, समाधान भी करेंगे अब तक स्कूलों के निरीक्षण होना पड़ेगा जवाबदेह, समाधान भी करेंगे अब तक स्कूलों के निरीक्षण के नाम पर शिक्षकों की बलि चढ़ाई जा रही थी।लेकिन नई व्यवस्था के तहत पदाधिकारीयों को निरीक्षण के प्रति जवाबदेह बनाया जाएगा। अब केवल निरीक्षण करने वाले पदाधिकारी न केवल स्कूलों की वास्तविकता समस्याओं को देखेंगे। बल्कि समस्या के निदान का भी उन्हीं को उपाय करना पड़ेगा। स्कूलों का निरीक्षण करने वाले पदाधिकारी अपने काम के प्रति कितने जवाबदेह है इसकी निगरानी राज स्तर के पदाधिकारी करेंगे। अपर मुख्य सचिव के आदेश के बाद अब 3 महीना के लिए पदाधिकारीयों को जिला आवंटित कर दिया है। यह पदाधिकारी जिलों के स्कूल का भौतिक निरीक्षण करके स्थानीय पदाधिकारी के निरीक्षण के बाद किए गए कार्यों को भी देखेंगे। इसमें यदि किसी प्रकार की कोताही मिलेगी तो निरीक्षी पदाधिकारी पर कार्रवाई होगी। स्कूलों में छुट्टी अब 12:10 होगी,इसी दौरान सभी कार्यों को पूरा किया जाएगाः डीईओ डीईओ राजेश कुमार ने कहा कि स्कूलों के संचालन के समय में बदलाव किया गया है। सोमवार से स्कूलों सुबह 6 बजे की बजाय 6:30 बजे होगी।स्कूलों में छुट्टी अब 12:10 बजे होगी।इसी दौरान सभी कार्यों को पूरा किया जाएगा।

सोलर लाइट से जगमग होंगे वैशाली के गांव

प्रात : किरण संवाददाता

हाजीपुर । ग्रामीण इलाके की सड़क और गलियां रात में रौशन रहे, इसके लिए मुख्यमंत्री ग्रामीण सोलर लाइट योजना चलाई जा रही है। यह ग्रामीण क्षेत्रों में हरित ऊर्जा को बढ़ावा देने की योजना का ही हिस्सा है। मुख्यमंत्री सात निश्चय पार्ट 2 के तहत वैशाली जिले के हर गांव को इस योजना के तहत सोलर लाइट से जगमग किया जाएगा। इससे न सिर्फ रात में गांव की गली-चौराहे रौशन होंगे, बल्कि बिजली की भी बचत होगी। गांव के लोगों को रात में रौशन गलियों और राह पर आने-जाने में सुविधा होगी। इससे गांव की तस्वीर बदलेगी। समृद्धि और खुशहाली आएगी। सोलर लाइट लगाने की जिम्मेदारी जो भी कंपनी को दी जा रही है, उसी को अगले 5 वर्ष तक इन लाइटों का रखरखाव भी करना है। जिला पंचायती राज कार्यालय, वैशाली से प्राप्त आंकड़े के अनुसार वैशाली जिला में वितीय वर्ष 2023 - 24 तक सभी 16 प्रखंडों में 278 पंचायत के 2224 वार्ड में 22240 सोलर स्ट्रीट लाइट लगाए जाने का लक्ष्य है। इस लक्ष्य के विरुद्ध अभी तक 6084 सोलर लाइट अधिष्ठापित किया जा चुके हैं। जिला पदाधिकारी श्री यशपाल मीणा ने चयनित एजेंसियों को निर्देश दिया कि वे अपने लक्ष्य के अनुरूप कार्य करते हुए बाकी बचे सोलर स्ट्रीट लाइट एक महीने के भीतर अधिष्ठापित करना सुनिश्चित करें, ताकि ग्रामीण जनता को इस महत्वाकांक्षी योजना का लाभ मिल सके। इस कार्य के लिए तीन एजेंसियों यथा मेसर्स श्री राम सागर कंस्ट्रक्शन, मेसर्स सन एनर्जी सॉल्यूशन तथा मेसर्स फोटोनिक्स वॉटर टेक प्राइवेट लिमिटेड को सोलर स्ट्रीट लाइट अधिष्ठापन का दायित्व दिया गया है। प्राप्त आंकड़े के अनुसार महुआ प्रखंड के 92 वार्ड में 920, पातेपुर प्रखंड के 104 वार्ड में 1200, राजपाकर प्रखंड 52 वार्ड में 520 , जंदाहा प्रखंड के 57 वार्ड में 605, देसरी प्रखंड के 32 वार्ड में 320, भगवानपुर प्रखंड के 40 वार्ड में 399, वैशाली प्रखंड के 4 वार्ड में 40, लालगंज प्रखंड के 52 वार्ड में 517, चेहरांकला प्रखंड के 44 वार्ड में 439, गोरौल प्रखंड के 48 वार्ड में 474, हाजीपुर प्रखंड के चार वार्ड में 40, विदुपुर प्रखंड के 29 वार्ड में 320, राघोपुर प्रखंड के 12 वार्ड में 120, महनार प्रखंड के 9 वार्ड में 90 तथा सहदेई बुजुर्ग प्रखंड के 8 वार्ड में 80 सोलर स्ट्रीट लाइट अधिष्ठापित किया जा चुके हैं।

पर्यावरण सुरक्षा के लिए पौधरोपण जरूरी : निलेश

अपनी लगातार मुहिम में मंच दे रहा, पर्यावरण के सुरक्षा और संरक्षण का संदेश

प्रात : किरण संवाददाता

जमुई/गिद्धौर। आधुनिकता कितनी भी बढ़ जाए पर प्रकृति को हमेशा सहेजना चाहिए अन्यथा विनाश निश्चित है उदाहरण के तौर पर वर्तमान में बढ़ते तापमान के रूप में देख सकते है। उक्त बातें मौके पर उपस्थित पुलिस अवर निरीक्षक (सार्जेंट) निलेश कुमार सिंह ने ग्रामीणों को प्रकृति के प्रति जागरूक करते हुए बताया। उनके द्वारा आगे बताया गया की जिस प्रकार तापमान हरेक साल बढ़ रही उससे निजात पाने के लिए एङ्गसीङ्ग, कूलर के सहारे नहीं हो सकता है। बढ़ते तापमान और असंतुलित वातावरण को सुरक्षित पौधा ही रख सकती है इसलिए अभी से लोग जागरूक होकर अधिक से अधिक पौधा रोपण कर उसे संरक्षित करने का प्रयास करें। इसके पूर्व बढ़ते तापमान में बीच साईकिल यात्रियों का एक दर्जन समूह अपने रविवारीय यात्रा के 440 वें क्रम में गिद्धौर प्रखंड के कोल्हुआ ग्राम तक साईकिल यात्रा कर पहुंची। जहां ग्रामीण को पर्यावरण संरक्षण के लिए जागरूक होने का संदेश देते हुए अपने आस पास पेड़ पौधे लगाने की अपील की गई इस अवसर पर सुरक्षित स्थान पर एक दर्जन पौधे लगाए गए एवं उसकी सुरक्षा की जिम्मेदारी गांव के ही युवाओं को दी गई। मौके पर उपस्थित समाजसेवी महाराणा प्रताप ने बताया की पेड़ लगाना एवं उसकी संरक्षण करना अपनी आदत बनाए तभी हमलोग आने वाले प्रकृति आपदा से निपट सकते है। अपने दुकान मकान घर आंगन जहां भी जगह मिले किसी ना किसी तरह का पेड़ पौधा जरूर लगाए इससे लोग स्वस्थ भी रहेंगे और सुरक्षित जीवन भी जिएंगे। सदस्य टिंकू पासवान ने बताया की एक वर्ष एक पौधा एक जीवन को लोगो द्वारा अनुसरण किया जाना चाहिए। इसके लिए कुछ दिन बाद आने वाले मानसून में एक पौधा ही लगाने का ही जिम्मेदारी लें तो वो कुछ वर्ष में ही हर क्षेत्र हरा भरा बन कर उभरेगा जिससे कई तरह का लाभ मिल सकता है। इस अवसर पर गोलू कुमार, मनीष कुमार, महाराणा प्रताप, राकेश कुमार, सचिराज पद्माकर, मनीष कुमार सिंह, मणिकांत मिश्रा, शैलेश भारद्वाज, निलेश कुमार सिंह, शुभम कुमार, रितिक राज, ऋषभ कुमार, रौनक कुमार, मनीष कुमार, सागर कुमार, विकास कुमार सहित कई ग्रामीण उपस्थित थे।

उमस की वजह से अस्पताल में बढ़े उल्टी- दस्त के मरीज

प्रात : किरण संवाददाता

जमुई/गिद्धौर:-उमस भरी गर्मी एवं बढ़ते तापमान की वजह से सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र गिद्धौर में उल्टी एवं दस्त के मरीजों की संख्या बढ़ने लगी है। इस संबंध में स्वास्थ्य केंद्र के मरीज को पर्ची देने वाले एक चिकित्सा कर्मी ने बताया कि चार-पांच दिन से अस्पताल पहुंचने वाले मरीजों में उल्टी एवं दस्त की शिकायत वाले मरीज ज्यादा आ रहे हैं। बुखार के मरीजों की संख्या में भी इजाफा हुआ है।ऐसे सभी मरीजों को चिकित्सा के द्वारा धूप में नहीं निकलने की सलाह देते हुए उचित दवाइयां दी जा रही है। इधर एक सप्ताह से फिर से तापमान में वृद्धि देखी जा रही है। बाजार पहुंचने वाले लोगों की संख्या में काफी कमी देखी जा रही थी। प्रभारी चिकित्सा पदाधिकारी डॉक्टर आजिमा निशांत ने बताया कि तापमान और उमस की वजह से चक्कर आना,उल्टी एवं दस्त की समस्या वाली मरीजों की संख्या में इजाफा हुआ है।ऐसे मौसम में अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखने की सलाह दी है।

पैसा लेने के उपरांत पुलिस द्वारा गाड़ी छोड़ने का वीडियो वायरल

प्रात : किरण संवाददाता

जमुई/गिद्धौरः- यूं तो गिद्धौर की पहली महिला थाना अध्यक्षा के रूप में योगदान दे रही रीता कुमारी का प्रारंभिक प्रशासनिक सत्र काफी सख्त रहा है। लेकिन समय के साथ कानूनी क्रियाकलापों ने उनके वर्दी पर बदनामी का दाग लगा दिया है। एक के बाद एक घटनाओं से उनके कार्यकाल को विवादों में खड़ा कर दिया है ।मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक इसकी शुरूआत चोरी की घटना से हुई। जहां गिद्धौर बाजार स्थित डीके डिजिटल स्टूडियो में चोरी की घटना को अंजाम देने वाले चोरों के गिरेबान तक पुलिस नहीं पहुंच पाई। वहीं गिद्धौर के अलग हिस्सों में मंदिर के दान पेटी, खेत से मोटर, घर से सामान की चोरी हो जाने जैसे मामले ने गिद्धौर थाना अध्यक्षा रीता कुमारी के कार्यकाल को तार-तार कर दिया है। हालांकि चोरी और तस्करी जैसे मामले में पुलिस के हाथ कुछ अभियुक्त आए। लेकिन खनन के खिलाड़ी से लेकर शराब के सिकंदर तक पुलिस के हाथ आज भी खाली है। गिद्धौर में चोरी की घटना अभी थमी ही थी कि चंद्रशेखर नगर में आए हुए एक दामाद के साथ मारपीट किए जाने के प्रसंग ने भी गिद्धौर पुलिस को सुर्खियों में ला दिया है। इस घटना के कुछ दिन बाद ही थाना अध्यक्षा रीता कुमारी स्वयं घरेलू विवाद में उलझ गई। इसमें अपने पति के साथ मारपीट का मामला एसपी कार्यालय के दहलीज तक पहुंचा। अपने बच्चों को लेकर पति-पत्नी के बीच का यह प्रकरण जमुई जिले भर में चर्चा का विषय बना रहा। वहीं जमुई में बिहार पुलिस के तमाम पदाधिकारी अपने छवि को लेकर लाख दावे कर ले लेकिन दावे और हकीकत में फर्क साबित हो रहा है। जिसका जीता जागता उदाहरण गिद्धौर थाना क्षेत्र में देखने को मिल रहा है।जहां पर अवैध बालू खनन में लगे ट्रैक्टर से मोटे रकम की उगाही की जा रही है ।जिसका वीडियो इन दिनों सोशल मीडिया पर तेजी से वायरल हो रहा है। दरअसल गिद्धौर थाना क्षेत्र में अवैध बालू खनन को लेकर जिले भर में चर्चा का विषय बना हुआ है। जिसको लेकर गिद्धौर पुलिस लगातार चर्चा में बनी हुई है। कभी दिनदहाड़े बालू ट्रैक्टर चलने का वीडियो, तो कभी सूचना देने वाले के साथ गाली गलौज करने व अन्य केस में फंसा देने का ऑडियो, तो कहीं बालू माफिया से पैसे लेकर गाड़ी छोड़ने का वीडियो सोशल मीडिया पर तेजी से वायरल हो रहा है। जिसको लेकर जिले भर में चर्चा का विषय बना हुआ है। जो की बिहार पुलिस के वर्दी को दागदार कर रहा है। लोग तरह-तरह के कमेंट भी कर रहे हैं। यह वीडियो में बताया जाता है कि उलाय नदी के महुली घाट का है जहां पर खैरा थाना क्षेत्र के बानपुर पंचायत के पूर्व मुखिया के भतीजे की गाड़ी है। जो की गिद्धौर थाना के द्वारा पकड़ा गया और मोटी रकम लेकर छोड़ दिया। जिसका किसी ने वीडियो बनाकर सोशल मीडिया पर वायरल कर दिया है।बता दें कि पिछले साल जिले के गरही थाना में कार्यरत दरोगा प्रभात रंजन पर बालू माफिया ने ट्रैक्टर चढ़ा दिया था जिससे उनकी मौके पर ही मौत हो गई थी। उसके बावजूद भी जमुई जिले की पुलिस पदाधिकारी इतनी बड़ी घटना से सीख नहीं ले पाए हैं। जोकि दुर्भाग्य ही कहा जा सकता है। हालांकि वायरल वीडियो की पुष्टि प्रातः किरणा अखबार नहीं करती है।

देशी कट्टा व नौ गोली के साथ युवक गिरफ्तार

प्रात : किरण संवाददाता

जमुई/गिद्धौरः- गिद्धौर थाने की पुलिस ने थाना क्षेत्र के बनझुलिया गांव में छापेमारी कर एक बारह बोर का देसी कट्टा और नौं जिंदा कारतुस के साथ एक आरोपित को गिरफ्तार किया है। जिसका कांड संख्या 62/24 धारा-341/323/504 भा०द०वि०एवं 27 आर्म्स एक्ट दर्ज है। वहीं अनुसंधान के क्रम में रात्रि बनझुलिया गांव उक्त कांड के प्राथमिकी अभियुक्त राजीव कुमार विश्वकर्मा पिता छोटेलाल विश्वकर्मा घर पर मौजुद पाया।जिसे पुलिस ने छापेमारी की कार्रवाई की। गिद्धौर थानाध्यक्ष रीता कुमारी ने बताया कि इस मामले में थाना क्षेत्र के बंनझुलिया गांव के राजीव विश्वकर्मा को गिरफ्तार किया गया है। पकड़ा गया आरोपित अपने कमरे के बगल में उत्तर पुरब कोने से उजले रंग के प्लास्टिक के बोरे में छिपा कर रखा गया एक बारह बोर का देशी कट्टा एवं नौ जिंदा कारतुस बरामद किया गया है। थानाध्यक्ष ने बताया कि पकड़े गए आरोपित के खिलाफ कांड संख्या 62/24 धारा-341/323/504 भा०द०वि०एवं 27 आर्म्स एक्ट से संबंधित केस पहले से दर्ज है।शनिवार की रात पुलिस को सूचना मिली थी उक्त आरोपित हथियार गोली के साथ घूम रहा है। इसकी सूचना मिलते ही पुलिस ने बनझुलिया गांव में छापेमारी की कार्रवाई की। छापेमारी के दौरान उक्त आरोपित की तालाशी लिए जाने पर घर में छुपा कर रखा गया हथियार व गोली मिला। पुलिस पूछताछ कर रही है।वही छापेमारी में थानाध्यक्ष रीता कुमारी,अनुज कुमार,हरेन्द्र सिंह सिपाही अनीश कुमार,शिवजी कुमार,पवन कुमार मौजूद थे।

गिद्धौर में 43 डिग्री जा पहुंचा पारा

भीषण गर्मी के कारण सड़कें रही सूनसान

प्रात : किरण संवाददाता

जमुई/गिद्धौर। दिन प्रतिदिन पड़ रहे भीषण गर्मी के कारण चिलचिलाती धूप और गर्म हवा ने हर किसी की बैचेनी बढ़ा दी है।अचानक एका एक तापमान में हुई बढ़ोतरी से लोगों का घरों से निकलना मुश्किल हो गया।रविवार को अधिकतम तापमान 41 से 43 डिग्री तक पहुंच गया। तपती धूप ने आम आदमी को दैनिक कार्यों के निष्पादन में परेशानी बढ़ा दी है। गर्म हवा व कड़ाके की धूप के कारण क्षेत्र के लोगों को दैनिक कार्य में घोर कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है। मौसम में हो रही तब्दीली से इलाके के लोग सर्दी खांसी वायरल फिवर मिजिल्स आदि के शिकार हो रहे हैं।बीते कुछ पहले मौसम में आए बदलाव और बूंदाबांदी से लोगों को थोड़ी गर्मी से राहत तो मिली थी, मगर पिछले बिते एक सप्ताह से मौसम की तल्खी से इलाके के लोग परेशान हैं।

सुबह से ही तेज धूप और गर्म हवा से लोग परेशान हो उठते हैं। हालात यह है कि दोपहर में मुख्य सड़क व बाजारों में सन्नाटा पसरा रहता है। सुबह 07 से 09 बजे के आसपास के समय होते ही घर से बाहर निकलते ही लोग पसीने से लथपथ हो जाते हैं।सूरज की कॉस्मिक किरणों से पैदा हो रही गर्मी के कारण लोग देर शाम तक अपने घरों में दुबके रहते हैं। वहीं बाहर निकलने वाले लोग डीहाइड्रेशन के शिकार हो रहे हैं। इधर बढ़ती गर्मी को देखते हुए दिग्विजय सिंह सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र के चिकित्सक डॉक्टर प्रदीप कुमार ने कहा कि गर्मी से बचने के लिए सिर पर गमछा रखें। पानी का सेवन अधिक से अधिक करें। खाली पेट न रहें समय समय पर ग्लूकोज एलोक्ट्रोल पाउडर के मिश्रण को लेने की भी सलाह चिकित्सकों ने लोगों को दी है, यह शरीर को डीहाइड्रेशन की समस्या से इस गर्मी में राहत पहुंचाने का काम करेगी बताते चलें कि गर्मी से होने वाली परेशानी से संयमित रखकर व स्वास्थ्य निदेर्शों का पालन कर के ही इससे बचाव किया जा सकता है।

भारतीय मजदूर संघ ने निकाली रैली

मजदूरों के हित को लेकर हुआ अधिवेशन

प्रात : किरण संवाददाता

जमुई [झाझा] रविवार को भारतीय मजदूर संघ की ओर से पुरानी बाजार स्थित निजी धर्मशाला में जिला अधिवेशन किया गया। इसको लेकर संघ के पदाधिकारी एवं सदस्यों के द्वारा रेलवे कॉलौनी स्थित संघ कार्यालय से रैली निकाली गई जो रेलवे आवास, बसस्टैंड होते हुए धर्मशाला पहुंचा जहां अधिवेशन की शुरूआत कि गई। मौके पर भारतीय मजदूर संघ के प्रदेश पदाधिकारी मनीष कुमार, बिहार प्रदेश कार्यसमिति सदस्य विश्वनाथ प्रसादव यादव, बिहार प्रदेश बीड़ी महामंत्री परमेश्वर यादव सहित अन्य कई लोग शामिल हुए। अधिवेशन में पुरानी कमेटी भंगकर नई कमेटी का गइन किया गया। मौके पर उपस्थित पदाधिकारी ने कहा कि बीएमएस नई कमेटी को सुचारू रूप से चलाते हुए मजबूती की स्थिति में लाया जाएगा। कार्यसमिति सदस्य ने कहा कि पंजीकृत मजदूरों का स्वास्थ्य लाभ, पोशाक राशि बंद को पुनः चालू करवाने के लिए सरकार से मांग कि जाएगी। और पंजीकृत मजदूरों के खाते में 5500 रूपए देने की मांग कि जाएगी। इसके अलावे जिला प्रभारी ने कहा कि मजदूरों के मजदूरी में जो कमीशन खोरी होती

है उसे बंद करवाया जाएगा।परमेश्वर यादव ने कहा कि भारतीय मजदूर संघ अंतर्गत जितनें भी यूनियन है उनसभी लोगों को एकजुट होना है। इसके अलावे मजदूरों के हित में क्या करना चाहिए उनपर विचार किया जाएगा जैसे कि बीड़ी मजदूरों की मजदूरी बढ़ाना, मजदूरों को मजदूरी बढ़ाना, मजदूरों को योजनाओं का लाभ दिलाना, बीड़ी श्रमिकों का परिचय पत्र बनाना, बीड़ी मजदूरों के लिए अस्पताल में सभी सुविधा उपलब्ध करवाये जाने सहित अन्य मांग है। संघ के पदाधिकारी ने बताया कि भारतीय मजदूर संघ हमेशा मजदूरों को साथ लेकर चलने का काम करता है। मजदूर अगर किसी कठिन परिस्थिति में है तो उन मजदूरों की कठिन परिस्थितियों को दूर करने पर अपना सहयोग प्रदान करती है। मौके पर अन्य कई लोग मौजूद थे।

आशाकर्मी के द्वारा सरकारी अस्पताल से निजी अस्पताल में प्रसुता महिला को भर्ती करवाने का मामला आया सामने

प्रात : किरण संवाददाता

जमुई [झाझा] रेफरल अस्पताल झाझा में कार्यरत आशाकर्मी के कमीशन के लालच में निजी अस्पताल में प्रसुता को भर्ती करवाने का मामला इन दिनों प्रखंड क्षेत्र में काफी चरम पर बढ़ते जा रहा है। आशाकर्मी अस्पताल में प्रसुता के परिजनों को अपनी बातों मे बहला फुसलाकर निजी अस्पताल में भर्ती करवा देते है। ठीक ऐसा ही एक मामला सामने आया है। दरअसल प्रखंड क्षेत्र के बथनावरण के रहने वाली प्रसुता महिला सकीना प्रवीण को अस्पताल में सिमुलतला क्षेत्र के आशाकर्मी हलीमा ने शनिवार को गुरूवार को 9 बजे भर्ती करवाया और फिर अस्पताल में संध्या बेला में किसी को बताए उसे शहर के निजी अस्पताल में कमीशन के लिए चक्कर लगवाया जिसके बाद फिर उसे एक निजी अस्पताल में भर्ती करवाया। कमीशन के चक्कर में आशाकर्मी प्रसुता महिला के जिदंगी

से घंटो देर तक खेलती रही और उसके बाद निजी अस्पताल में महिला का डिलीवरी हो जाने के बाद उसे फिर सरकारी एंबुलेंस से घर पहुंचाने के लिए अस्पताल के एंबुलेंस चालक से संपर्क किया लेकिन एंबुलेंस चालक ने अस्पताल में प्रसुता का डिलीवरी होने पर ही घर छोड़ने की बात कि जिसके बाद आशाकर्मी पहले उसे ई रिक्शा से घंटो देर तक चक्कर लगवाया और उसके बाद रेलवे स्टेशन के पास से उसे ऑटो में बिठाकर साथ चली गई। आशाकर्मी ने दिया बड़े बड़े नेताओ का साथ होने का ब्यान-वही अस्पताल में पहुंची आशाकर्मी से जब निजी अस्पताल में प्रसुता महिला को ले जाने की बात पूछा गया तो आशाकर्मी आग बबूला होते हुए पत्रकारों को धमकी देने लगी कि मेरे पास बड़े बड़े नेताओं है। इसलिए मुझे कुछ नही हो सकता है। उसके बाद प्रसुता को अस्पताल से निजी अस्पताल ले जाने की बात करने पर आशाकर्मी ने पहले कहा कि मैनें उसे नही लाया और बाद में यह कहती है वह मेरा रिश्तेदार था और सरकारी अस्पताल में भर्ती करवाया जिसके बाद उसे निजी अस्पताल ले गया। इस दौरान आशाकर्मी ने बताया कि मै कुछ नही हूं और जब अस्पताल में क्या करने की बात पूछा गया तो कहा कि मै आशाकर्मी हूं। क्या कहते है मरीज के परिजन-मरीज के परिजनों से फोन पर जानकारी लेने पर उन्होनें कहा कि अस्पताल में आशाकर्मी ने भर्ती करवाया जहां एएनएम ने बताया कि इसकी स्थिति ठीक नही है और उसे बाहर ले जाइए जिसके बाद निजी अस्पताल ले गया। क्या कहते है स्वास्थ्य पदाधिकारी-मामले को सिविल सर्जन से पूछे जाने पर उन्होनें कहा कि मै अभी मीटिंग में हुं। अस्पताल के प्रभारी चिकित्सा पदाधिकारी डॉ.अरूण कुमार, अस्पताल प्रबंधक नवनीत कुमार ने कहा कि इस मामलें में जांच की जाएगी।

अवैध बालू लदा ट्रैक्टर को पुलिस ने किया जब्त

प्रात : किरण संवाददाता

जमुई/ई०अलीगंजः- जमुई जिला प्रशासन के निर्देश पर बालू माफियों पर नकेल कसने को लेकर लगातार कारवाई की जा रही है। उसी क्रम मे चन्द्रदीप पुलिस इन दिनों बालू माफियाओं पर पूरी तरह नकेल कसते दिख रही है।इसी कड़ी में चंद्रदीप पुलिस ने शनिवार को रात्रि गस्ती दल ने नवादा सिकंदरा मुख्य मार्ग बेला गाँव के समीप से एक अवैध बालू लदा एक ट्रैक्टर को किया

जप्त, वाहन चालक पुलिस को देख कर फरार हो गया, थानाध्यक्ष राजेन्द्र साह ने बतायाचंद्रदीप थाना क्षेत्र के नवादा सिकंदरा मुख्य मार्ग बेला गाँव के समीप रोड के किनारे से रात्रि गस्ती दल ने एक अवैध बालू से लदा महेंद्रा ट्रेक्टर को चंद्रदीप पुलिस द्वारा जप्त कर चंद्रदीप थाना लाया गया। वही उन्हों ने बताया कि पुलिस को गुप्त सूचना मिली की कुछ जगहों पर बालू के अवैध कारोबार किया जा रहा है,इसी दौरान चंद्रदीप पुलिस के द्वारा छापेमारी की गई, पुलिस वाहन देखते ही ड्राइवर ट्रैक्टर छोड़कर भाग गया, जिसे पुलिस ने बिना रजिस्ट्रेशन के महिंद्रा ट्रैक्टर जप्त कर चंद्रदीप थाना ले आया।थानाध्यक्ष राजेन्द्र साह ने बताया कि चंद्रदीप पुलिस दारू और बालू के खिलाफ सख्त है, जो भी इस कार्य मे संलिप्त पाये जाएंगे उनके विरुद्ध कार्रवाई की जा रही है। पुलिस द्वारा लागतार छापेमारी की जा रही इस बाबत बताया कि थाना क्षेत्र अंतर्गत किसी भी हाल में अवैध कारोबार करने वालों को पनपने नहीं दिया जाएगा। साथ ही इस धंधे में संलिप्त पाए जाने वाले लोगों पर भी कार्रवाई की जाएगी

खटाल की दीवार को तोड़ कर चोरों ने हजारों की संपत्ति चुराई, थाने में दिया लिखित आवेदन

प्रात : किरण संवाददाता

जमुई/ई०अलीगंज,चंद्रदीप थाना क्षेत्र के आढा गांव में एक खटाल से बीते रात्रि अज्ञात चोरों ने दीवार तोड़ कर मुर्गी सहित खटाल में रखा हजारों की सामान चोरी कर लिया। लोगो ने बताया आजकल आढा गांव में चोरों का आतंक इस कदर बढ़ गया की न लोगों का दहशत, न प्रशासन की खौफ ,लगातार आए दिन किसी न किसी के घर या दुकान में चोरों ने चोरी के घटना का अंजाम दे दें रहे हैं । वहीं आढा गांव के पीड़ित मोङ्ग आमिर पिता मोहम्मद मुख्तार ने बताया की बीते शनिवार की रात्रि में मेरे आढा हरिजन टोला स्थित खटाल की दीवार तोड़ कर अज्ञात चोरों ने हजारों की समान चुरा लिया।

अनियंत्रित बोलेरो पिकअप के ठोकर से पुत्र की मौत, पिता घायल

महुआ ।थाना क्षेत्र के महुआ देसरी रोड के केनरा बैंक के पास एक तेज रफ्तार की अनियंत्रित पिकअप वैन ने साईकिल सवार पिता पुत्र को रौंद दिया जिससे पुत्र की मौके पर ही दर्दनाक मौत हो गई वही पिता भी गंभीर रूप से घायल हो गए। मृतक की पहचान जंदाहा थाना क्षेत्र निवासी चौसीमा लक्ष्मणपुर गांव के रंधीर सिंह का 19 वर्षीय पुत्र अमित कुमार के रुप में की गई वही इस घटना में घायल मृतक की पिता रंधीर सिंह को ईलाज के लिए महुआ अनुमंडल अस्पताल में भर्ती करवाया गया। घटना रविवार के सुबह की बताई जाती है। मिली जानकारी के अनुसार पिता पुत्र अपने घर चौसिमा से साइकिल से दवाई लेने महुआ बाजार आ रहे थे कि ज्योहि महुआ पुरानी बाजार के केनरा बैंक के नजदीक पहुचे ही थे कि पीछे से तेज गति से आ रही अनितंत्रित पिकअप बोलेरो ने साईकिल में जोरदार ठोकर मार दिया जिससे अमित कुमार की घटनास्थल पर ही दर्दनाक मौत हो गई वहीं घायल पिता को लोगों ने इलाज के लिए महुआ अनुमंडल अस्पताल में भर्ती कराया। घटना के बाद मौके पर लोगों की भिड़ जमा हो गई।

सम्पादकीय

पैर पर कुल्हाड़ी मारने वाला भरोसा

कहते हैं दो लोगों के रिश्ते तभी तक चलते हैं, जब तक कि दोनों के दरमियां एक भरोसा कायम है। जहां किसी एक का भी भरोसा टूटा, रिश्ता लंगड़ा-लूला, गूंगा-बहरा यानी कि अपंगता को प्राप्त हो जाता है। ऐसा रिश्ता बहुत दिनों तक ढोया नहीं जा सकता। इसलिए वक्त से पहले दरारों को भरने और किसी प्रकार का कोई भ्रम पैदा न हो, इसकी कोशिशें भी करते रहने की सलाह दी जाती है। बहरहाल यहां बात हम पारिवारिक पति-पत्नी वाले रिश्तों की नहीं कर रहे बल्कि दो देशों के बीच बनने वाले प्रगाढ़ रिश्तों की कर रहे हैं। याद दिलाते चलें कि जिस पड़ोसी की बात हम करने जा रहे हैं, उससे हमारे रिश्ते पहले कभी भाई-भाई के रहे हैं। जब भरोसा परवान चढ़ा और तत्कालीन सरकार ने हर तरह के रास्ते खोलने और करीबी रिश्तों में आने की बात कही तो सीमा पार से उसी ने एक बड़ा धोखा दिया और हिंदी-चीनी भाई-भाई वाले रिश्ते पलभर में ही जमींदोज हो गए। आज वही चीन एक बार फिर अपना असली चेहरा दिखाने को तैयार दिख रहा है। दरअसल इस दुनियां की जन्नत कहे जाने वाले हमारे जम्मू-कश्मीर को लेकर चीन ने पाकिस्तान राग के साथ अपना बेसुरा राग मिलाने जैसा काम कर दिखाया है। अब पाकिस्तानी-चीनी भाई-भाई के नारे बुलंद करते ये दोनों ही मुल्क भारत के खिलाफ जहर उगलने का काम कर रहे हैं। पाक और चीन ने शनिवार को ही संयुक्त बयान में दक्षिण एशिया में कश्मीर सहित सभी लंबित मुद्दों के समाधान के लिए किसी भी एकतरफा कार्रवाई का विरोध करने का एहद किया है। यहां समझ लें कि पाकिस्तान के लिए ऐसा इसलिए भी जरुरी है क्योंकि पाकिस्तान के प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ चीन यात्रा पर हैं। ऐसे में यदि पीएम शहबाज कश्मीर की बात नहीं करते तो वो अपने आकाओं और रणनीतिकारों के सामने कौन सा मुंह लेकर जाते और ऐसे में तो वो जवाबदेह बन जाते। उनकी मजबूरी तो समझ में आती है, लेकिन चीन और उनके रणनीतिकारों को क्या हो गया है, जो भारत के खिलाफ इस कदर जहर उगलने को बाध्य हो रहे हैं। चीन तो पाकिस्तान की तरह राजनीतिक और आर्थिक संकट के दौर से तो नहीं गुजर रहा है। उसे तो सच बोलना चाहिए और सच का ही साथ देना चाहिए, लेकिन वह ऐसा जानबूझ कर करता है, ताकि बेमतलब दबाव बनाया जा सके और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भारत को दबाने और गौरतलब है कि दोबारा प्रधानमंत्री बनने के बाद शहबाज शरीफ अपनी चार दिवसीय चीन यात्रा पर थे, जो कि अब समाप्त हो चुकी है, लेकिन इस दौरान वो अपने मकसद को पाने में सफल रहे हैं। दरअसल इस यात्रा से चीनी निवेश और सहायता को बढ़ाने का मकसद तो था सो था लेकिन उन्हें यह भी दिखलाना था कि चीन उनके साथ हर स्थिति में खड़ा हुआ है। एक तरफ पाकिस्तान गंभीर आर्थिक संकट का सामना कर रहा है तो दूसरी तरफ आतंकवादी गतिविधियों के चलते सुरक्षा दृष्टि से भी गंभीर संकट देश में उत्पन्न हो गया है। अनेक चीनी अधिकारी पाकिस्तान में निर्माण कार्य करते हुए मारे जा चुके हैं, जिसका जवाब पाकिस्तान सरकार को देते नहीं बन रहे है। अतः लीपापोती करते हुए कार्य को आगे बढ़ाने और अधिक से अधिक आर्थिक सहायता प्राप्त करने चीन पहुंचे पाकिस्तान के प्रधानमंत्री ने लगे हाथ कश्मीर का मसला उठाकर अपने आकाओं को भी खुश करने जैसा काम कर दिखाया है। गौर करने वाली बात तो यह भी है कि एक तरफ भारत जैसे बड़े बाजार को चीन खोना नहीं चाहता और दूसरी तरफ वह यह भी नहीं चाहता है कि भारत के रिश्ते किसी और देश से बेहतर हों। ऐसे में वह आतंकवाद को प्रश्रय देने वाले देशों को आर्थिक मदद पहुंचा कर भारत के खिलाफ एक षडयंत्र रचने का काम करता है तो आश्चर्य नहीं होना चाहिए।

पंडित जी को पछियाते मोदी जी

राकेश अचल

भारत के पहले प्रधानमंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू के पदचिन्हों पर न चलते हुए भी नरेंद्र दामोदर दास मोदी तीसरी बार भारत के प्रधानमंत्री बन गए हैं। भारत के प्रधानमंत्री के रूप में मै माननीय नरेंद्र दामोदरदास मोदी जी का स्वागत करता हूँ, वंदन, अभिनदं करता हूँ। वे उन सबके भी प्रधानमंत्री हैं जिन्होंने उन्हें अपने मताधिकार के जरिये खारिज किया। कुल मिलाकर वे भारत के प्रधानमंत्री हैं, लेकिन उनके समर्थक, अंधभक्त मोदी जी की तुलना जब पंडित जवाहर लाल नेहरू से करते हैं तो हंसी भी आती है और दया भी। क्योंकि दोनों के चाल, चरित्र और चेहरे में कोई मेल है ही नहीं।

दरअसल नरेंद्र मोदी जी और उनका परिवार पंडित जवाहर लाल नेहरू से जबरदस्त घृणा करता है, बावजूद वो मोदी जी को उनके बराबर खड़ा भी करना चाहता है। काल्पनिक आंकड़ों के जरिये, किस्सों-कहानीयों के जरिये। नेहरू जी कश्मीरी पंडित थे और मोदी जी गुजराती पिछड़े वर्ग से आते हैं। नेहरू जी, मोदी जी से 61 साल पहले जन्मे थे। उनके पिता पंडित मोतीलाल नेहरू धनी बैरिस्टर थे, मोदी जी के पिता गरीब चाय वाले। [] चायवाला होना कोई बुरी बात नहीं है।]

बात तो ये है कि मै नेहरू और मोदी की तुलना करना ही नहीं चाहता, क्योंकि दोनों में कोई बराबरी, साम्य है ही नहीं, लेकिन अंधभक्तों को हकीकत से रुबरू करने के लिए मुझे ये कृत्य करना पड रहा है। ये कुकृत्य है या सुकृत्य ये पाठक खुद तय करेंगे। पंडित जवाहरलाल नेहरू ने दुनिया के कुछ बेहतरीन स्कूलों और विश्वविद्यालयों में शिक्षा प्राप्त की थी। उन्होंने अपनी स्कूली शिक्षा हैरो से और कॉलेज की शिक्षा ट्रिनिटी कॉलेज, कैम्ब्रिज (लंदन) से पूरी की थी। इसके बाद उन्होंने अपनी लॉ की डिग्री कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय से पूरी की। इंग्लैंड में उन्होंने सात साल व्यतीत किए जिसमें वहां के फैबियन समाजवाद और आयरिश राष्ट्रवाद के लिए एक तर्कसंगत दृष्टिकोण विकसित किया। जवाहरलाल नेहरू 1912 में भारत लौटे और वकालत शुरू की।

अब मोदी जी के बारे में जान लीजिये। बकौल गूगल जी माननीय मोदी जी आठ वर्ष की आयु में वे आरएसएस से जुड़े, जिसके साथ एक लम्बे समय तक सम्बन्धित रहे। स्नातक होने के बाद उन्होंने अपना घर छोड़ दिया। उन्होंने स्नातक कहाँ से किया ये केवल सुप्रीम कोर्ट जानता है देश नहीं। मोदी ने दो साल तक भारत भर में यात्रा की, और अनेकों धार्मिक केन्द्रों का दौरा किया। 1969 या 1970 वे गुजरात लौटे उसके बाद अहमदाबाद चले गए। 1971 में वह आरएसएस के लिए पूर्णकालिक कार्यकर्ता बन गए। मोदी जी लिखते-पढ़ते नहीं है। वे जब-जब फुरसत में होते हैं योग-ध्यान करते है।

आइये फिर नेहरू के बारे में जान लेते हैं। 1916 में उनकी शादी कमला नेहरू से हुई। और वे ताउम्र उनकी जीवन संगिनी बनी रहीं 1917 में जवाहर लाल नेहरू होम रुल लीग में शामिल हो गए। राजनीति में उनकी असली दीक्षा दो साल बाद 1919 में हुई जब वे महात्मा गांधी के संपर्क में आए। उस समय महात्मा गांधी ने रॉलेट अधिनियम के खिलाफ एक अभियान शुरू किया था। नेहरू, महात्मा गांधी के सक्रिय लेकिन शांतिपूर्ण, सविनय अवज्ञा आंदोलन के प्रति खासे आकर्षित हुए। नेहरू ने महात्मा गांधी के उपदेशों के अनुसार अपने परिवार को भी ढाल लिया। जवाहरलाल और मोतीलाल नेहरू ने पश्चिमी कपड़ों और महंगी संपत्ति का त्याग कर दिया। वे अब एक खादी कुर्ता और गांधी टोपी पहनने लगे। जवाहर लाल नेहरू ने १९२०-1922 में असहयोग आंदोलन में सक्रिय हिस्सा लिया और इस दौरान पहली बार गिरफ्तार किए गए। कुछ महीनों के बाद उन्हें रिहा कर दिया गया।

नेहरू के मुकाबले खड़े किये जा रहे मोदी जी कभी जेल नहीं गए। 1975 में देश भर में आपातकाल की स्थिति के समय उन्हें कुछ समय के लिए अज्ञातवास जरूर करना पड़ा। 1985 में वे भाजपा से जुड़े और 2001 तक पार्टी पदानुक्रम के भीतर कई पदों पर कार्य किया, जहाँ से वे धीरे धीरे भाजपा में सचिव के पद पर पहुँचे गए। जबकि पंडित जवाहर लाल नेहरू 1924 में इलाहाबाद नगर निगम के अध्यक्ष चुने गए और उन्होंने शहर के मुख्य कार्यकारी अधिकारी के रूप में दो वर्ष तक सेवा की। 1926में उन्होंने ब्रिटिश अधिकारियों से सहयोग की कमी का हवाला देकर त्यागपत्र दे दिया। 1926 से 1928 तक, जवाहर लाल नेहरू ने अखिल भारतीय कांग्रेस समिति के महासचिव के रूप में सेवा की। 1928 -1929 में, कांग्रेस के वार्षिक सत्र का आयोजन मोतीलाल नेहरू की अध्यक्षता में किया गया। नेहरू को कभी ऊपर से प्रक्षेपित नहीं किया गया। वे लड़ते-जूझते आगे बढे ।कुल 13 साल जेलों में रहे, एक दर्जन किताबें उन्होंने लिखीं।

लेकिन माननीय मोदी जी और नेहरू में एक भिन्नता ये है की मोदी जी की शादी हुई लेकिन वे उसका निर्वाह नहीं कर पाए। उनकी पत्नी आज भी गुजरात में अकेले गुजर-बसर कर रहीं हैं। दुसरे मोदी जी को हमेशा पैराशूट से राजनीति में उतारा गया। पहली बार उनका पैराशूट गुजरात में ही उतरा। गुजरात भूकम्प के बाद गुजरात के तत्कालीन मुख्यमन्त्री केशुभाई पटेल के असफल स्वास्थ्य और खराब सार्वजनिक छवि के कारण श्री नरेंद्र मोदी को 2001 में गुजरात के मुख्यमन्त्री पद पर नियुक्त किया गया। वे 12 साल गुजरात के मुख्यमंत्री रहे लेकिन तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी बाजपेयी भी उन्हें राजधर्म नहीं सिखा पाए। उनके कार्यकाल में गुजरात में भीषण दंगे भी हुए। वे दूसरी बार वे 2014 में पैराशूट से देश के प्रधानमंत्री पद के प्रत्याशी के रूप में अपने तमाम रिश्तों को धकियाते हुए उतारे गए।

पराजय पर विलाप, जनादेश का अपमान

जो अबकी बार 400 पार जैसे फर्जी नारों और गोदी मीडिया द्वारा प्रचारित झूठे एक्जिट पोल में दिखाई गयी मोदी के नेतृत्व में भाजपा की धमाकेदार वापसी की पूरी उम्मीद लगाये बैठे थे। सत्ता की दलाली करने वाले एक चैनल ने तो अपने एक्जिट पोल में एन डी ए को 400 पार करा भी दिया था। परन्तु भारतीय लोकतंत्र के इतिहास में इस बार के परिणाम कुछ ऐसे आये हैं कि एन डी ए बहुमत के आंकड़ों को पार करने के बावजूद विलाप कर रहा है जबकि बहुमत के आंकड़ों से दूर रहने के बाद भी विपक्षी गठबंधन में जश्न का माहौल है। चुनाव परिणाम जो भी हों परन्तु परिपक्व राजनीति का तकाजा तो यही है कि भारतीय लोकतंत्र में जनमत चाहे जो भी हो जैसा भी हो उस का सम्मान किया जाना चाहिये व उसे विनम्रतापूर्ण स्वीकार किया जाना चाहिये। परन्तु इस बार के चुनाव परिणामों के बाद खासतौर पर कुछ विशेष सीटों पर मिली पराजय या उनके अप्रत्याशित नतीजों के बाद पराजित पक्ष के लोगों ने अपना गुस्सा मतदाताओं पर निकालना शुरू कर दिया है। कई पराजित लोग तो मतदाताओं के निर्णय की खुलकर आलोचना कर रहे हैं। इनमें सबसे अधिक व तीखी प्रतिक्रिया फैजाबाद संसदीय सीट को लेकर सुनाई दी। इसी लोकसभा सीट के अन्तर्गत अयोध्या विधानसभा क्षेत्र भी आता है जहां निर्मित राम मंन्दिर को लेकर भारतीय जनता पार्टी न केवल फैजाबाद, न केवल उत्तर प्रदेश बल्कि पूरे देश के मतदाताओं से यह आस लगाये बैठी थी

तनवीर जाफरी
लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं

जनादेश 2024 तो जरूर आ चुका है परन्तु षड़यंत्रकारी एक्जिट पोल की हवा निकलने के बाद आये आश्चर्यचकित करने वाले इस जनादेश ने खास तौर पर उन लोगों के मुंह का स्वाद बिगाड़ कर रख दिया है जो अबकी बार 400 पार जैसे फर्जी नारों और गोदी मीडिया द्वारा प्रचारित झूठे एक्जिट पोल में दिखाई गयी मोदी के नेतृत्व में भाजपा की धमाकेदार वापसी की पूरी उम्मीद लगाये बैठे थे। सत्ता की दलाली करने वाले एक चैनल ने तो अपने एक्जिट पोल में एन डी ए को 400 पार करा भी दिया था। परन्तु भारतीय लोकतंत्र के इतिहास में इस बार के परिणाम कुछ ऐसे आये हैं कि एन डी ए बहुमत के आंकड़ों को पार करने के बावजूद विलाप कर रहा है जबकि बहुमत के आंकड़ों से दूर रहने के बाद भी विपक्षी गठबंधन में जश्न का माहौल है। चुनाव परिणाम जो भी हों परन्तु परिपक्व राजनीति का तकाजा तो यही है कि भारतीय लोकतंत्र में जनमत चाहे जो भी हो जैसा भी हो उस का सम्मान किया जाना चाहिये व उसे विनम्रतापूर्ण स्वीकार किया जाना चाहिये।

परन्तु इस बार के चुनाव परिणामों के बाद खासतौर पर कुछ विशेष सीटों पर मिली पराजय या उनके अप्रत्याशित नतीजों के बाद पराजित पक्ष के लोगों ने अपना गुस्सा मतदाताओं पर निकालना शुरू कर दिया है। कई पराजित लोग तो मतदाताओं के निर्णय की खुलकर आलोचना कर रहे हैं। इनमें सबसे अधिक व तीखी प्रतिक्रिया फैजाबाद संसदीय सीट को लेकर सुनाई दी। इसी लोकसभा सीट के अन्तर्गत अयोध्या विधानसभा क्षेत्र भी आता है जहां निर्मित राम मंन्दिर को लेकर भारतीय जनता पार्टी न केवल फैजाबाद, न केवल उत्तर प्रदेश बल्कि पूरे देश के मतदाताओं से यह आस लगाये बैठी थी कि इसी वर्ष 22 जनवरी को हुये राम मंदिर प्राण प्रतिष्ठा के बाद उसे ऐतिहासिक बहुमत हासिल होगा। इसी सीट से लल्लू सिंह जो कि बाल्यकाल से ही राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से जुड़े हैं तथा पांच बार अयोध्या से विधायक और दो बार फैजाबाद लोकसभा सीट से ही लोकसभा का चुनाव भी जीत चुके हैं वह तीसरी बार भी बड़े ही आत्मविश्वास के साथ इसी लोकसभा सीट से चुनाव मैदान में थे।

परन्तु यहाँ के मतदाताओं ने एक अप्रत्याशित जनादेश देते हुए कांग्रेस और समाजवादी पार्टी अर्थात इंडिया गठबंधन के संयुक्त प्रत्याशी अवधेश प्रसाद को 54, 567 मतों से जिता दिया। केवल अयोध्या ही नहीं बल्कि चित्रकूट, मेहंदीपुर बालाजी, सलासर धाम जैसी और भी अनेक धर्म नगरियां हैं जहाँ भाजपा ह्यधर्म ध्वजा ह्य के सहारे जीत हासिल करना चाहती थी परन्तु ऐसे सभी क्षेत्रों से भाजपा प्रत्याशियों को शर्मनाक हार का सामना करना पड़ा है। हद तो यह है कि स्वयं प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जिन्होंने स्वयं को ह्यअवतारीह्न होने का भ्रम पाल रखा था और 2019 के चुनाव में काशी से ही 4 लाख 71 हजार के अंतर से जीत हासिल की थी वे इस बार कांग्रेस के प्रत्याशी अजय राय को मात्र 152513 मतों से ही पराजित सके। जबकि ऐतिहासिक रोड शो, प्रेस कॉन्फ्रेंस और गंगा में क्रूज यात्रा जैसी शो बाजियों के सहारे वे इस बार 10 लाख से अधिक मतों से जीतने का सपना देख रहे थे। राजनैतिक विश्लेषकों का तो यहाँ तक कहना है कि यदि कांग्रेस ने मोदी के मुकाबले प्रियंका गांधी को उतारा होता तो शायद इस बार वे प्रधानमंत्री बनना तो दूर सांसद भी नहीं बन पाते।

ठीक इसके विपरीत कांग्रेस समाजवादी गठबंधन ने उत्तर प्रदेश में वह धमाका कर दिया जिसकी शायद इण्डिया गठबंधन को भी उम्मीद नहीं थी। यहाँ इण्डिया गठबंधन ने 42 सीटों पर जीत हासिल की। उधर भाजपा द्वारा ह्यपप्पू ह्य प्रचारित किये गए राहुल गाँधी जहां वायनाड से 3.64 लाख वोटों से जीते वहीँ उन्होंने उत्तर प्रदेश के मंत्री बीजेपी के प्रत्याशी दिनेश प्रताप सिंह को रायबरेली से 3.90 लाख वोटों से पराजित किया। उपरोक्त जनादेश निश्चित रूप से न केवल मंहगाई, बेरोजगारी, साम्प्रदायिकता तथा धर्म के नाम पर समाज को विभाजित कर जन सरोकार के मूल मुद्दों से जनता जनार्दन का ध्यान भटकाकर उसे धार्मिक भावनाओं में उलझाकर रखने के विरुद्ध था बल्कि यह जनादेश जनता द्वारा सत्ता का घमंड चूर कर देने के लिये भी था। परन्तु जनता के हाथों अपनी मुंह की खाने वाले भाजपाइयों को जो 400 पार और 370 पार जैसे नारों में जी रहे थे उन्हें यह जनादेश कतई नहीं भाया। इसलिये न केवल अंधभक्तों ने बल्कि साम्प्रदायिक विद्वेष के बल पर अपनी नैय्या पार करने की इच्छा पाले कई पराजित उम्मीदवारों ने भी मतदाताओं को ही गरियाना शुरू कर दिया।

अयोध्या-फैजाबाद के मतदाताओं को तो इतना कोसा गया व उनके लिये ऐसी अभद्र भाषा का प्रयोग किया गया मानो इस लोकसभा सीट की भाजपा ने अपने नाम ह्यरजिस्ट्रीह्न ही करा ली थी जिसे जनता ने छीन लिया। आखिर अयोध्या की जनता ने किन कारणों से यह जनादेश दिया? क्या ह्यजो राम को लाये हैं हम उनको लायेंगेह्न जैसा नारा जो भाजपाई लगाते फिर रहे थे वह नारा पूरे देश का सर्वस्वीकार्य नारा है? क्या शंकराचार्यों से लेकर अयोध्या के साधु संत तक इस अहंकारी नारे से सहमत हैं? अब तो लोग यही मान रहे हैं कि भगवन राम ने ही अहंकारियों को आईना दिखाया है और चेताया है कि धर्म किसी भी व्यक्ति की निजी आस्था व विश्वास का विषय है राजनीति व सत्ता के लिये दुरूपयोग का नहीं। इसी तरह रायबरेली की जनता के हाथों पराजित भाजपा उम्मीदवार दिनेश प्रताप सिंह तो अपनी शर्मनाक पराजय से रायबरेली के मतदाताओं से इतना आग बबूला हुये कि उन्होंने घोषणा कर दी कि वे एक वर्ष के अवकाश पर रहेंगे और रायबरेली की जनता का कोई काम ही नहीं करेंगे। जिसे काम कराना हो वह राहुल गाँधी के पास ही जाये।

इसी तरह साम्प्रदायिकतावादी भक्तजन भाजपा के सपने टूटने के लिये कहीं मुस्लिम मतदाताओं को जिम्मेदार ठहराते हुये अपशब्द कह रहे हैं तो कहीं दलितों व पिछड़ों को गालियां रहे हैं। सवाल यह है कि क्या देश का मतदाता किसी भी दल या राजनेताओं का गुलाम है जो उनकी इच्छाओं के अनुरूप ही मतदान करे? क्या यह जरूरी है कि भक्तों, साम्प्रदायिकतावादियों की नजरों में जो सबसे जरूरी विषय हो मतदाता भी उसे वैसी ही प्राथमिकता दें? हिमाचल प्रदेश दिल्ली, उत्तरांचल, मध्यप्रदेश, कर्नाटक, उड़ीसा जैसी कई जगहों पर भाजपा ने निश्चित रूप से अच्छा प्रदर्शन किया है। विपक्षी दलों के नेता उन राज्यों के मतदाताओं को तो गलियां नहीं दे रहे हैं? बल्कि वहां आत्म मंथन की बात कर रहे हैं। एन डी ए खासकर

आर्थिक विकास के दृष्टि से वित्तीय वर्ष 2023-24 भारत के लिए महत्वपूर्ण साबित हुआ

जबकि वित्तीय वर्ष 2022-23 में भारत की आर्थिक विकास दर 7 प्रतिशत की रही थी। भारतीय रिजर्व बैंक एवं वैश्विक स्तर पर कार्यरत विभिन्न वित्तीय संस्थानों ने वित्तीय वर्ष 2023-24 में भारत की आर्थिक विकास दर का अनुमान लगाते हुए कहा था कि यह 7 प्रतिशत के आसपास रहेगी। परंतु, वित्तीय 2023-24 के दौरान भारत की आर्थिक विकास दर इन अनुमानों से कहीं अधिक रही है। वित्तीय वर्ष 2023-24 की चौथी तिमाही में भी भारत की आर्थिक विकास दर 7 .8 प्रतिशत रही है जो पिछले वित्तीय वर्ष की चौथी तिमाही में 6 .1 प्रतिशत रही थी। पूरे विश्व में प्रथम 10 सबसे बड़ी अर्थव्यवस्थाओं की आर्थिक विकास दर भारत की आर्थिक विकास दर के कहीं आसपास भी नहीं रही है। अमेरिका की आर्थिक विकास दर 2 .3 प्रतिशत, चीन की आर्थिक विकास दर 5 .2 प्रतिशत, जर्मनी की आर्थिक विकास दर तो ऋणात्मक 0 .3 प्रतिशत रही है। जापान की आर्थिक विकास दर 1.92 प्रतिशत, ब्रिटेन की 0 .1 प्रतिशत, फ्रान्स की 0 .9 प्रतिशत, ब्राजील की 2 .91 प्रतिशत, इटली की 0 .9 प्रतिशत एवं कनाडा की 1 प्रतिशत रही है, वहीं भारत की आर्थिक विकास दर 8 .2 प्रतिशत रही है। 8 प्रतिशत से अधिक की विकास दर को देखते हुए अब तो ऐसी सम्भावना व्यक्त की जा रही है कि वर्ष 2027 तक जर्मनी एवं जापान की अर्थव्यवस्थाओं को पीछे छोड़ते हुए भारत विश्व की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था निश्चित ही बन जाएगा। विनिर्माण, खनन, भवन निर्माण एवं सेवा क्षेत्र, यह चार क्षेत्र ऐसे हैं जो भारत के सकल घरेलू उत्पाद को तेजी से आगे बढ़ाने में अपना विशेष योगदान देते हुए नजर आ रहे हैं। यह स्पष्ट रूप से केंद्र सरकार की आर्थिक नीतियों के चलते ही सम्भव हो पा रहा है।

प्रह्लाद सबनानी
सेवा निवृत्त उप महाप्रबंधक,

हाल ही में वित्तीय वर्ष 2023-24 के दौरान भारतीय अर्थव्यवस्था में हुए विकास से सम्बंधित आंकड़े जारी किये गए है। इसके अनुसार वित्तीय वर्ष 2023-24 में भारत के सकल घरेलू उत्पाद में 8.2 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई है जबकि वित्तीय वर्ष 2022-23 में भारत की आर्थिक विकास दर 7 प्रतिशत की रही थी। भारतीय रिजर्व बैंक एवं वैश्विक स्तर पर कार्यरत विभिन्न वित्तीय संस्थानों ने वित्तीय वर्ष 2023-24 में भारत की आर्थिक विकास दर का अनुमान लगाते हुए कहा था कि यह 7 प्रतिशत के आसपास रहेगी। परंतु, वित्तीय 2023-24 के दौरान भारत की आर्थिक विकास दर इन अनुमानों से कहीं अधिक रही है। वित्तीय वर्ष 2023-24 की चौथी तिमाही में भी भारत की आर्थिक विकास दर 7.8 प्रतिशत रही है जो पिछले वित्तीय वर्ष की चौथी तिमाही में 6.1 प्रतिशत रही थी। पूरे विश्व में प्रथम 10 सबसे बड़ी अर्थव्यवस्थाओं की आर्थिक विकास दर भारत की आर्थिक विकास दर के कहीं आसपास भी नहीं रही है। अमेरिका की आर्थिक विकास दर 2.3 प्रतिशत, चीन की आर्थिक विकास दर 5.2 प्रतिशत, जर्मनी की आर्थिक विकास दर तो ऋणात्मक 0.3 प्रतिशत रही है। जापान की आर्थिक विकास दर 1.92 प्रतिशत, ब्रिटेन की 0.1 प्रतिशत, फ्रान्स की 0.9 प्रतिशत, ब्राजील की 2.91 प्रतिशत, इटली की 0.9 प्रतिशत एवं कनाडा की 1 प्रतिशत रही है, वहीं भारत की आर्थिक विकास दर 8.2 प्रतिशत रही है। 8 प्रतिशत से अधिक की विकास दर को देखते हुए अब तो ऐसी सम्भावना व्यक्त की जा रही है कि वर्ष 2027 तक जर्मनी एवं जापान की अर्थव्यवस्थाओं को पीछे छोड़ते हुए भारत विश्व की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था निश्चित ही बन जाएगा।

विनिर्माण, खनन, भवन निर्माण एवं सेवा क्षेत्र, यह चार क्षेत्र ऐसे हैं जो भारत के सकल घरेलू उत्पाद को तेजी से आगे बढ़ाने में अपना विशेष योगदान देते हुए नजर आ रहे हैं। यह स्पष्ट रूप से केंद्र सरकार की आर्थिक नीतियों के चलते ही सम्भव हो पा रहा है। वास्तविक सकल मान अभिवृद्धि के आधार पर, वित्तीय वर्ष 2023-24 की चतुर्थ तिमाही में विनिर्माण के क्षेत्र में 8.9 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज हुई है जबकि वित्तीय वर्ष 2022-23 की इसी अवधि में केवल 0.9 प्रतिशत की वृद्धि दर हासिल की जा सकी थी। इसी प्रकार, खनन के क्षेत्र में भी इस वर्ष की चतुर्थ तिमाही में वृद्धि दर 4.3 प्रतिशत की रही है जो पिछले वर्ष इसी अवधि में 2.9 प्रतिशत की रही थी। भवन निर्माण के क्षेत्र में 8.7 प्रतिशत की वृद्धि दर हासिल की गई है जो पिछले वर्ष इसी अवधि में 7.4 प्रतिशत की रही थी। नागरिक प्रशासन, सुरक्षा एवं अन्य सेवाओं के क्षेत्र में वृद्धि दर 4.7 प्रतिशत से बढ़कर 7.8 प्रतिशत हो गई है। ऊर्जा उत्पादन क्षेत्र में वृद्धि दर पिछले वर्ष की चौथी तिमाही में 7.3 प्रतिशत से बढ़कर इस वर्ष चौथी तिमाही में 7.7 प्रतिशत पर पहुंच गई है। परंतु, कृषि, सेवा एवं वित्तीय क्षेत्र में वित्तीय वर्ष 2023-24 की चौथी तिमाही में वृद्धि दर पिछले वर्ष की इसी तिमाही की तुलना में कुछ कम रही है।

वैश्विक स्तर पर अन्य देशों के सकल घरेलू उत्पाद में लगातार कम हो रही वृद्धि दर के बावजूद भारत के सकल घरेलू उत्पाद में तेज गति से वृद्धि दर का होना यह दशार्ता है कि अन्य देशों की अर्थव्यवस्थाओं में आ रही परेशानियों का असर भारतीय अर्थव्यवस्था पर नहीं के बराबर हो रहा है एवं भारतीय अर्थव्यवस्था अपनी आंतरिक शक्ति के बल पर तेज गति से आर्थिक वृद्धि करने में सफल हो रही है। परंतु, भारत में कुछ क्षेत्र ऐसे भी हैं जिन पर, आर्थिक विकास की गति को और अधिक तेज करने के उद्देश्य से विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। जैसे, हाल ही के समय में भारत में निजी खपत नहीं बढ़ पा रही है और यह 4 प्रतिशत की दर पर ही टिकी हुई है। साथ ही, निजी क्षेत्र में पूंजी निवेश भी नहीं बढ़ पा रहा है। भारत में निजी खपत कुल सकल घरेलू उत्पाद का 60 प्रतिशत है। यदि सकल घरेलू उत्पाद के इतने बड़े हिस्से में वृद्धि नहीं होगी अथवा कम वृद्धि दर होगी तो देश में सकल घरेलू उत्पाद में वृद्धि दर भी विपरीत रूप से प्रभावित होगी। भारत में निजी खपत इसलिए भी नहीं बढ़ पा रही है क्योंकि वित्तीय वर्ष 2022-23 में घरेलू देयताएं सकल घरेलू उत्पाद के 5.7 प्रतिशत के उच्चत्तम स्तर पर पहुंच गईं हैं एवं बचत की दर भी सकल घरेलू उत्पाद के 5.2 प्रतिशत पर अपने निचले स्तर पर आ गई है, जो 10 वर्ष पूर्व 7 प्रतिशत से अधिक थी।

वहीं दूसरी ओर, दिसम्बर 2023 के प्रथम सप्ताह में भारत ने फ्रान्स एवं ब्रिटेन को पीछे छोड़ते हुए शेयर बाजार के पूंजीकरण के मामले में पूरे विश्व में पांचवा स्थान हासिल कर लिया था। भारत से आगे केवल अमेरिका, चीन, जापान एवं हांगकांग थे। परंतु, केवल दो माह से भी कम समय में भारत ने शेयर बाजार के पूंजीकरण के मामले में हांगकांग को पीछे छोड़ते हुए विश्व में चौथा स्थान प्राप्त कर लिया है। भारतीय शेयर बाजार का पूंजीकरण 4.35 लाख करोड़ अमेरिकी डॉलर से भी अधिक का हो गया है। अब ऐसा आभास होने लगा है कि भारत अर्थ के क्षेत्र में वैश्विक स्तर पर अपनी खोई हुई प्रतिष्ठा को पुनः प्राप्त करता हुआ दिखाई दे रहा है। भारत में नैशनल स्टॉक एक्स्चेंज पर लिस्टेड समस्त कम्पनियों के कुल बाजार पूंजीकरण का स्तर 2 लाख करोड़ अमेरिकी डॉलर के स्तर पर जुलाई 2017 में पहुंचा था और लगभग 4 वर्ष पश्चात अर्थात मई 2021 में 3 लाख करोड़ अमेरिकी डॉलर के स्तर को पार कर गया था तथा केवल लगभग 2.5 वर्ष पश्चात अर्थात दिसम्बर 2023 में यह 4 लाख करोड़ अमेरिकी डॉलर के स्तर को भी पार कर गया था और अब यह 4.35 लाख करोड़ अमेरिकी डॉलर के स्तर से भी आगे निकल गया है। इस प्रकार भारत शेयर बाजार पूंजीकरण के मामले में आज पूरे विश्व में चौथे स्थान पर आ गया है।

प्रथम स्थान पर अमेरिकी शेयर बाजार है, जिसका पूंजीकरण 50.86 लाख करोड़ अमेरिकी डॉलर से अधिक है। द्वितीय स्थान पर चीन का शेयर बाजार है जिसका पूंजीकरण 8.44 लाख करोड़ अमेरिकी डॉलर से अधिक है। वर्ष 2023 में चीन के शेयर बाजार ने अपने निवेशकों को ऋणात्मक प्रतिफल दिए हैं। तीसरे स्थान पर जापान का शेयर बाजार है जिसका पूंजीकरण 6.36 लाख करोड़ अमेरिकी डॉलर से अधिक है। चौथे स्थान पर भारत का शेयर बाजार है जिसका पूंजीकरण 4.35 लाख करोड़ अमेरिकी डॉलर से अधिक है। पांचवे स्थान पर हांगकांग का शेयर बाजार है जिसका पूंजीकरण 4.29 लाख करोड़ अमेरिकी डॉलर है। जिस तेज गति से भारतीय शेयर बाजार का पूंजीकरण आगे बढ़ रहा है, अब ऐसी उम्मीद की जा रही है कि कुछ समय पश्चात ही भारतीय शेयर बाजार का पूंजीकरण जापान शेयर बाजार के पूंजीकरण को पीछे छोड़ते हुए पूरे विश्व में तीसरे स्थान पर आ जाएगा।

उक्त सफलताओं के साथ ही, भारत ने अपने आर्थिक विकास की दर को तेज रखते हुए अपने राजकोषीय घाटे पर भी नियंत्रण स्थापित कर लिया है। वित्तीय वर्ष 2022-23 में भारत का राजकोषीय घाटा 17 लाख 74 हजार करोड़ रुपए का रहा था जो वित्तीय वर्ष 2023-24 में घटकर 16 लाख 54 हजार करोड़ रुपए का रह गया है। यह राजकोषीय घाटा वित्तीय वर्ष 2022-23 में 5.8 प्रतिशत था जो वित्तीय वर्ष 2023-24 में घटकर 5.6 प्रतिशत रह गया है। भारत के राजकोषीय घाटे को वित्तीय वर्ष 2024-25 में 5.1 प्रतिशत एवं वित्तीय वर्ष 2025-26 में 4.5 प्रतिशत तक नीचे लाने के प्रयास केंद्र सरकार द्वारा सफलता पूर्वक किए जा रहे हैं। अमेरिका, ब्रिटेन, फ्रान्स, जर्मनी जैसे विकसित देश भी अपने राजकोषीय घाटे को कम नहीं कर पा रहे हैं परंतु भारत ने वित्तीय वर्ष 2023-24 के दौरान यह बहुत बड़ी सफलता हासिल की है। सरकार का खर्च उसकी आय से अधिक होने पर इसे राजकोषीय घाटा कहा जाता है। केंद्र सरकार ने खर्च पर नियंत्रण किया है एवं अपनी आय के साधनों में अधिक वृद्धि की है। यह लम्बे समय में देश के आर्थिक स्वास्थ्य की दृष्टि से एक बहुत महत्वपूर्ण तथ्य उभरकर सामने आया है।

सत्ता बरकरार पर दावपेंच अहंकार की हुई हार!

डा. भरत मिश्र प्राची

इस बार के लोकसभा चुनाव में सत्ता पक्ष की चार सौ पार की मुराद पुरी नहीं हुई जिसे पाने के लिये हर तरह के चुनाव के दौरान प्रयोग किये गये दावपेंच आम जनता ने नकार दिया। चुनाव में लोकसभा की 543 सीट में सत्ता पक्ष एनडीए को 292 तो इंडिया गठबंधन को 234, अन्य के खाते में 17 सीट गई। चुनाव में इस बार भाजपा पहले के चुनाव से कम सीट 240 पाकर सबसे बड़ी राजनीतिक पार्टी बन तो गई पर सपष्ट बहुमत से दूर रहने के कारण अकेले सरकार गठित नहीं कर सकती जब कि वहीं कांग्रेस को पहले चुनाव से ज्यादा सीट मिली है। जो 99 है। पूर्व हुये लोकसभा चुनाव में भाजपा स्पष्ट बहुमत से ज्यादा सीट लाकर स्वयं के बलबुते पर केन्द्र में सरकार बनाने में सफल रही जबकि इस बार सत्ता की कुंजी इसके सहयोगी दल जदयू एवं टीडीपी के पास है। इनके सहयोग के बिना भाजपा केन्द्र में सरकार नहीं बना सकती। यदि किसी कारणवश ये सहयोगी दल भाजपा से अलग हो जाते है तो केन्द्र में भाजपा को अपने दम पर सरकार बना पाना मुश्किल होगा। इस चुनाव में भाजपा को डबल इंजन की सरकार वाले राज्य उत्तर प्रदेश, राजस्थान, हरियाणा एवं बिहार से पूर्व में आई सीट से भी काफी कम सीट मिली है। स्वयं वाराणसी सीट से चुनावी मतगणना के शुरूवाती दौर से कई चरणों तक प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी कांग्रेस प्रत्याशी अजय राय से पीछे चलते रहे, अंत में वे जीत तो हासिल कर लिये पर जीत का अंतराल पहले से काफी कम रहा। उनके मंत्रीमंडल के स्मृति इरानी, आर के सिंह सहित 19 मंत्री चुनाव हार गये। अमेठी से पूर्व चुनाव में राहुल गांधी को हराने के बाद स्मृति इरानी को आंतरिक अहंकार हो गया था जो इस चुनाव में कांग्रेस के एक साधारण कार्यकर्ता से हार का सामना करना पड़ा। जिससे इस चुनाव में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का कद पहले से कम हुआ है। इस चुनाव में प्रधानमंत्री द्वारा संबोधित घमंडिया गठबंधन को देश की आवाम ने पहले से ज्यादा बहुमत दे दिया एवं सत्ता पक्ष भाजपा को बहुमत से दूर खड़ा कर दिया। कांग्रेस, पं. बंगाल से टीएमसी, एवं उत्तर प्रदेश से सपा का चुनाव में अच्छा प्रदर्शन रहा। इस चुनाव में एनडीए बहुमत का आकड़ा पार कर जीत हासिल कर तो ली, सत्ता बरकरार रह सकती है पर दावपेंच अहंकार की हार हुई है। इस लोकसभा चुनाव में सत्ता पक्ष चार सौ पार करने के चुनावी आकड़े को पाने के लिये हर तरह के चुनावी दावपेंच का खुलकर प्रयोग किया। विपक्ष को कमजोर करने के लिये जांच एजेंसियों का खुलकर कानून के नाम पर एकतरफा प्रयोग रहा। कई चरणों में लम्बे समय तक लोकसभा चुनाव संपन्न कराने की प्रक्रिया रही। भ्रष्टाचार के नाम पर अपने को सही एवं विपक्ष को गलत ठहराने की कार्यवही आदि को देश की आवाम ने नकार दिया। चुनाव को प्रभावित करने के लिये देश के धमार्चार्य चारों शंकराचार्यो के मना करने के वावजूद असमय राममंदिर का निर्माण कराया गया। अयोध्या से भाजपा प्रत्याशी की हार हुई। इस तरह के परिवेश ने मोदी के कद को कम कर दिया। फिर भी आज भी मोदी की गारंटी में अहंकार बोल रहा है।

राष्ट्रीय दैनिक प्रात:किरण
पटना, सोमवार, 10 जून, 2024

संक्षिप्त खबरें

दो नामजद अभियुक्त गिरफ्तार

बेतिया।मझौलिया थाना क्षेत्र के विभिन्न पंचायत से पुलिस ने छापेमारी अभियान चलाकर दो नामजद अभियुक्तों को गिरफ्तार कर रविवार को जेल भेज दिया। उक्त जानकारी थानाध्यक्ष अखिलेश कुमार मिश्र ने दी। उन्होंने बताया कि थाना क्षेत्र के माधोपुर वार्ड नम्बर 1 निवासी चंद्रिका शर्मा के पुत्र संतोष शर्मा उर्फ श्याम नारायण शर्मा को जेल भेजा गया। वही राजाभार वार्ड नम्बर 3 निवासी मुकुट महतो के पुत्र संजय कुमार को थाना कांड संख्या 374/2024 के तहत गिरफ्तार कर भेजा गया है। थानाध्यक्ष ने बताया कि छापेमारी के दौरान एक अभियुक्त बेड के नीचे छिपने का प्रयास कर रहा था। इनमें संतोष शर्मा के विरुद्ध थाना कांड संख्या 986/2023 के तहत प्राथमिकी दर्ज किया गया था तथा संजय कुमार के विरुद्ध भी थाना कांड संख्या 374/2024 दर्ज है।

फरार आरोपी को गिरफ्तार कर भेजा जेल

इसुआपुर। स्थानीय थाना क्षेत्र के विष्णुपुरा गांव के हैदर अली के पुत्र सैद बाबू उर्फ साहिद हुसैन को इसुआपुर पुलिस ने गिरफ्तार कर जेल भेज दिया। अभियुक्त घरेलू मारपीट मामले में वर्षों से फरार चल रहा था। गिरफ्तार करने गई पुलिस टीम में थानाध्यक्ष कमल राम, अपर थानाध्यक्ष कुंदन कुमार, एसआई उमेश प्रसाद के साथ पुलिस बल के जवान जवान थे।

इसुआपुर में 11 दिवसीय खरीफ धान बीज महोत्सव आज से

इसुआपुर। प्रखंड मुख्यालय बाजार स्थित हिंदुस्तान बीज भंडार इसुआपुर के प्रांगण में सोमवार से 11 दिवसीय खरीफ धान बीज महोत्सव का आयोजन किया जा रहा है। जिसका उद्घाटन जिला परियोजना निदेशक शमशेर आलम करेंगे। 20 जून तक चलने वाले इस महोत्सव में देश-विदेश की नामी गिरामी कंपनियां अपना स्टॉल लगाएंगी। महोत्सव में केंद्र और राज्य प्रायोजित विभिन्न कृषि योजनाओं में सरकारी अनुदान के तहत सिंचाई पंप एवं कृषि यंत्र उपलब्ध कराए जाने की भी जानकारी दी जाएगी। वहीं स्टॉल के माध्यम से किसानों को उच्च गुणवत्ता वाले बीज मार्केट से सस्ते दर पर उपलब्ध कराए जाएंगे।

ट्रेन से कटकर एक युवक की मौत

एकमा। पूर्वोत्तर रेलवे के छपरा सिवान रेल खंड के एकमा स्टेशन के पश्चिमी ढाला के हंसराजपुर गांव समीप एक 25 वर्षीय युवक की मौत ट्रेन से कट जाने से हो गई। घटना की जानकारी मिलते ही स्थानीय थाना पुलिस ने शव को अपने कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए छपरा भेज दिया। लेकिन शव की पहचान नहीं हो सकी थी। जहां रविवार के दिन शव की पहचान कर लिया गया जहां मृतक दाउदपुर थाना क्षेत्र के शीतलपुर गांव निवासी भरत राम का 25 वर्षीय पुत्र पवन कुमार के रूप में हुई है। अब तक घटना का कारण का पता नहीं चला है।

बाजार से बाइक की चोरी

दरियापुर।स्थानीय थाना क्षेत्र के सैदपुर से चोरों ने एक व्यक्ति की बाइक चुरा ली।जानकारी के अनुसार पोखी के हरेश्वर सिंह बाइक से सब्जी खरीदने सैदपुर बाजार गए थे वे अपनी बाइक पप्पू साह के कपड़ा दुकान पर खड़ी कर सब्जी खरीदने बाजार में चले गए।थोड़ी देर बाद जब सब्जी खरीद कर लौटे तो उनकी बाइक गायब थी।इस संबंध में उन्होंने अज्ञात चोरों के खिलाफ थाने में एफआईआर दर्ज कराई है।पुलिस छानबीन कर रही है।

छोटे एवं मझोले किसानों को केन्द्र में रख कृषि मे अनुसंधान की आवश्यकता

मुजफ्फरपुर। डॉ राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय में हाजलवायु परिवर्तन के परिदृश्य में पारंपरिक ज्ञान तथा आधुनिक दृष्टिकोण से भारतीय कृषि हृ विषय पर चल रहे दो दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला आज सम्पन्न ह। इस दो दिवसीय कार्यशाला में केंद्रीय विश्वविद्यालय झांसी, केंद्रीय विश्वविद्यालय झारखंड तथा अन्य विश्वविद्यालयों से आये वैज्ञानिकों ने अपने अपने शोध पत्र और विचार प्रस्तुत किए। कार्यशाला में तीन तकनीकी सत्र आयोजित किये गये। कार्यक्रम में अध्यक्षीय भाषण देते हुए कुलपति डॉ पी एस पांडेय ने कहा कि दो दिन तक चले इस गहन विमर्श में देश के कई विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने अपने-अपने विचार व्यक्त किए हैं। ये सभी विचार और शोध नवोन्मेषी हैं और जलवायु परिवर्तन के इस दौर में कृषि को नई दिशा देंगे। उन्होंने कहा कि किसानों को छोटे और मंझोले किसानों को ध्यान में रखकर अनुसंधान करना चाहिए। मुख्य अतिथि के रूप में बोलते हुए झांसी केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय के निदेशक अनुसंधान डॉ एस के चतुर्वेदी ने कहा कि आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस आने वाले समय में कृषि की रूपरेखा बदलने वाला है। भारतीय किसान संघ के अखिल भारतीय संगठन मंत्री दिनेश दत्तात्रेय कुलकर्णी ने कहा कि विश्वविद्यालय में ड्रोन ट्रेनिंग पर काफी अच्छा कार्य हो रहा है।

श्री चित्रगुप्त समिति के कार्यसमिति की बैठक सम्पन्न ,कई मुद्दों पर हुआ विचार विमर्श, लिए गए निर्णय

प्रात :किरण संवाददाता

छपरा कार्यालय।श्री चित्रगुप्त समिति की कार्यसमिति की बैठक शहर के दहियांवा स्थित आर सी एम सेंटर के सभागार में समिति के अध्यक्ष नागेन्द्र कुमार वर्मा की अध्यक्षता में हुई जिसमें विगत बैठक(17 मार्च 2024) में लिए गए निर्णय पर विचारोपरांत संपुष्ट किया गया। बैठक में इस बात पर घोर आश्चर्य व्यक्त किया गया कि कई उपसमितियों के गठनोपरांत संयोजक पद की जिम्मेवारी दी जाती है मगर वे कार्य नहीं करते। समिति के संविधान की समीक्षा करने हेतु एक उपसमिति का गठन विगत जनवरी माह में हुआ था मगर उसके संयोजक ने एक भी बैठक नहीं बुलाई जबकि इसके लिए मौखिक एवं लिखित रूप से बैठक बुलाने का आग्रह किया गया था। इसी तरह अन्य उपसमितियों के संयोजकों की कमोवेश स्थिति है।समिति के सदस्य डॉ विद्या भूषण श्रीवास्तव ने जब महासचिव से जानना चाहा कि बैठक का एजेंडा को सदस्यों को क्यों नहीं दी जाती है साथ ही किसी बैठक की कार्यवृत भी क्यों नहीं दी जाती? इस पर महासचिव भड़क गए और अपना इस्तीफा देने की बात तक कह डाली।सदस्यों के मान मनौव्वल के बाद मामला शान्त हुआ। अध्यक्ष श्री वर्मा ने कहा कि समिति के पास गरीब एवं कमजोर बच्चों की शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए आप सभी आगे आये निशुल्क अध्ययन अध्यापन के लिए मेरा आवासीय परिसर है जहां चित्रांश गरीब बच्चों की शिक्षा दी जा सकती है।समिति की गति को बढ़ाने एवं विभिन्न सामजिक कार्यो को धरातल पर उतारने के लिए संकल्पित होकर सभी को आगे आना होगा।

उधर,कई सदस्यों ने कार्य समिति से जुड़े सदस्यों की अनुपस्थिति पर चिंता प्रकट की गई।सभी सदस्यों को पर्याप्त सूचना मिले ,इसका प्रयास होना चाहिए।बैठक में कई सदस्यों ने राजनीतिक एवं सामाजिक मुद्दों के साथ साथ संगठनिक पहलुओं को भी रेखांकित किया।अतिथि चित्रांश एवं प्रसिद्ध कवि दक्ष निरंजन शंभु ने कहा कि जिन राजनीतिक प्रतिनिधि को सम्मानित करते है तो उनसे अपेक्षा की बात अवश्य करे क्योंकि हम सभी भी अपने समाज से बंधे है जिन्हें जबाब देना होता है।वे आपसे मीटिंग कराकर अपना लाभः ले लेते है मवर बदले में कुछ समाज को देते नही है,इस कारण समिति को चिंतन मनन करना चाहिये तब कोई निर्णय पर पहुंचना चाहिए।वहीं नवनीत कुमार ने हेल्थ शिविर लगाने की बात कही जबकि प्रभाकर रंजन ने प्रति माह 100/सहयोग राशि देने की गति पर बल दिया जबकि भुपेश नंदन ने समिति से जुड़े कई मुद्दों को उठाया।प्रो.अजीत कुमार सिन्हा ने समिति के ऐतिहासिक पक्ष को रखते हुए बैठक की सूचना एजेंडा के साथ देने की बात कही।।अधिवक्ता अभिषेक रंजन, राकेश नारायण सिन्हा, रवीश कुमार उर्फ रवि, सुनील कुमार वर्मा,प्रवीण कुमार श्रीवास्तव,अरबिंद कुमार वर्मा,मानोज कुमार श्रीवास्तव आदि की उपस्थिति में महासचिव ने कहा कि गरीब परिवारों से जुड़ी बच्चियों के साथ चित्रांश परिवारों के बेटियों की शादी विवाह कराने की परंपरा समिति द्वारा पूर्व से की जाती रही है वैसे,इसकी जिम्मेवारी हिमांशु जी को दी गई है। अंत मेंअध्यक्ष नागेन्द्र कुमार वर्मा ने घोषणा की कि समिति की आम सभा जुलाई माह में होगी।साथ ही,सभी ने नवनिर्वाचित दोनों भाजपा सांसदों राजीव प्रताप रूडी(सारण)एवं जनार्दन सिंह सिग्रीवाल(महाराजगंज) के साथ साथ पटना साहिब से रविशंकर प्रसाद की जीत पर बधाई दी गई तथा प्रसन्नता व्यक्त किया गया।

प्रारम्भ में समिति के महासचिव विमल कुमार वर्मा ने श्री चित्रगुप्त वंदना प्रस्तुत की वहीं कार्यालय मंत्री अरबिंद कुमार वर्मा ने विगत बैठक के कार्यवृत को पढ़कर सुनाया।जबकि नवनीत कुमार ने बैठक में सभी चित्रांश बंधुओ के प्रति आभार जताया।

श्री 1008 स्वामी इंद्रदेव सरस्वती जी महाराज के श्रीमद् भागवत ज्ञान सप्ताह आयोजन के लिए विचार विमर्श हेतु बैठक

प्रात :किरण संवाददाता

छपरा कार्यालय।स्थानीय राजेंद्र सरोवर स्थित शिव मंदिर परिसर में छपरा शहर के प्रबुद्ध नागरिकों सनातन धर्मावलंबियों की एक बैठक प्रातः 8:00 बजे रामानुज समिति के अध्यक्ष अरुण मिश्रा की अध्यक्षता में हुई । छपरा शहर के महापौर लक्ष्मी नारायण गुप्ता राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के विभाग संघचालक विजय कुमार सिंह राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के विभाग व्यवस्था प्रमुख ओमप्रकाश गुप्ता,विश्व हिंदू परिषद जिला धर्म प्रसार प्रमुख अरुण पुरोहित भाजपा के पूर्व जिला अध्यक्ष रामदयाल शर्मा, यज्ञाचार्य सम्राट आचार्य रंगनाथ तिवारी ,पूर्व मुखिया परशुराम राय, विनोद कुमार सिंह डायरेक्टर सारण आईटीआई ,शिक्षिका जयंती राय , भाजपा युवा मोर्चा ममता मिश्रा, समाजसेवी अरविंद कुमार उर्फ फून्ना जी, विभूति नारायण शर्मा ,भानु प्रताप सिंह, सांवलिया गिरी ,शशि प्रभा, पुनीत रंजन, राजेश डाबर, सतीश अग्रवाल ,चंद्र मोहन प्रसाद ,पप्पू सिंह राजेश कुमार सिंह ,अनिल कुमार ज्योति शंकर मिश्रा अजय कुमार सिंह, रोहन भारती बजरंग दल,सत्य प्रकाश मिश्रा, संजीव चौधरी रोटी बैंक, मनीष कुमार ,मनोज कुमार अग्रवाल ,अजय सिंह ,कमलेश कुमार मिश्रा ,जितेंद्र बहादुर सभी ने अपने सुझाव एवं विचार दिए।अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त यज्ञ पीठाधीश्वर युग प्रवर्तक क्रांतिकारी धर्म सम्राट विद्या वाचस्पति पति श्री श्री 1008 स्वामी इंद्रदेव सरस्वती जी महाराज के मुखारविंद से श्रीमद् भागवत कथा का आयोजन करने पर सबों ने सहमति व्यक्त की। कथा स्थल का चुनाव मारुति मानस मंदिर एवं राजेंद्र स्टेडियम पर सहमति बनी। श्रीमद् भागवत कथा ज्ञान यज्ञ का समय 15 दिसंबर से 15 जनवरी के बीच में रखने का सुझाव दिया। अभी अयोध्या धाम में गुरु जी की कथा चल रही है वहां पर आयोजक समिति का प्रतिनिधिमंडल अरुण पुरोहित के साथ अयोध्या जाकर गुरुदेव से अनुमति प्रदान करने के बाद आगे की कार्य योजना बनाई जाएगी ।

बुनियादी विद्यालय बनसोही से तीन कम्प्यूटर चोरी

प्रात :किरण संवाददाता

मशरक प्रखंड क्षेत्र अंतर्गत बुनियादी विद्यालय बनसोही के कम्प्यूटर रूम का ताला तोड़कर तीन कंप्यूटर चोरी कर ली गयी। विद्यालय के प्रभारी प्रधानाचार्य अशोक कुमार सिंह द्वारा घटना को लेकर थाना पुलिस को सूचित किया गया।इस संदर्भ में रात्रि प्रहरी ने बताया कि शनिवार की शाम 6 बजे ड्यूटी पर पहुंचे तो देखे की कंप्यूटर रूम का ताला टूटा हुआ था। जिसकी जानकारी मैंने अपने विजार्ड टेक कम्पनी डिपार्टमेंट को दिया। उसके बाद विद्यालय के प्रधानाचार्य और थाने के ग्रामीण चौकीदार को सूचित किया। विद्यालय के रसोईया ओम प्रकाश सिंह ने बताया कि प्रधानाध्यापक महोदय की सूचना पर जब मैं विद्यालय पहुंचा तो देखा कि कंप्यूटर रूम का ताला टूटा हुआ है। इस संदर्भ में मैं प्रधानाचार्य को सूचित किया । उसके बाद दुसरा ताला लगाकर रुम को बन्द किया। आपको बताते चले कि विधालय में दस सेट कंप्यूटर में से तीन सेट कंप्यूटर अज्ञात चोरों के द्वारा चोरी कर लिया गया है ।जानकारी हो कि इससे पहले विगत बुधवार को कंप्यूटर रूम की खिड़की तोड़कर तीन मोनिटर,माउस, कीपैड चोरी हुई थी। जिसका लिखित शिकायत प्रधानाचार्य के द्वारा मशरक थाना को किया गया था।

नामांकन सहित किसी भी कार्य में विद्यार्थियों को नहीं होगी परेशानी:कुलपति

प्रात :किरण संवाददाता

छपरा सदर। जयप्रकाश विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. परमेंद्र कुमार बाजपेई ने कहा कि नामांकन सहित किसी भी कार्य में छात्र-छात्राओं को कोई परेशानी नहीं होने दी जाएगी। उन्होंने भरोसा दिलाते हुए कहा कि छात्र-छात्राओं को जो भी समस्या सामने आएगी उसका तत्क्षण समाधान किया जाएगा। जो भी कमियां हैं उन्हें दूर किया जाएगा। लगभग एक सप्ताह के अवकाश के बाद विश्वविद्यालय आने के साथ ही कुलपति ने रविवार को विश्वविद्यालय के पदाधिकारियों के साथ ऑनलाइन बैठक कर कई महत्वपूर्ण निर्देश दिए हैं। कुलपति के संज्ञान में जैसे ही यह बात आई कि सीबीसीएस के तहत 4 वर्षीय अन्तरस्नातक पाठ्यक्रम में नामांकन के लिए ऑनलाइन आवेदन में अभ्यर्थियों को कुछ परेशानी हो रही है, उन्होंने अवकाश के दिन रविवार को विश्वविद्यालय अधिकारियों के साथ वर्चुअल मीटिंग की। बैठक में कुलपति ने स्पष्ट तौर पर कहा कि छात्र-छात्राओं का हित उनकी पहली प्राथमिकता है। उन्हें कोई परेशानी नहीं होनी चाहिए। चाहे इसके लिए सभी को 24 घण्टे काम क्यों न करना पड़े। कुलपति ने कहा कि कल सोमवार को विश्वविद्यालय के अधिषद कक्ष में सभी अंगीभूत एवं संबद्ध महाविद्यालयों के प्राचार्यों तथा विश्वविद्यालय नामांकन समिति की संयुक्त बैठक बुलाई गई है। इस बैठक में नामांकन में आ रही समस्या सहित अन्य मुद्दों पर विस्तृत चर्चा की जाएगी और सभी समस्याओं का समाधान किया जाएगा। कुलपति ने कहा कि अगर आवश्यक हुआ तो नामांकन के लिए आवेदन करने की तिथि विस्तारित की जाएगी।उल्लेखनीय है कि सीबीएससी के तहत चार वर्षीय स्नातक पाठ्यक्रम में नामांकन के लिए विगत 29 मई से ऑनलाइन आवेदन हो रहा है जिसकी अंतिम तिथि 12 जून निर्धारित की गई है।

स्वर्गीय राम सखिया देवी की पुण्य स्मृति पर नि:शुल्क स्वास्थ्य जांच शिविर लगाकर दी श्रद्धांजलि

प्रात :किरण संवाददाता

छपरा कार्यालय। गरीब एवं जरूरतमंदों के हितार्थ अपना संपूर्ण जीवन न्योछावर करने वाले व राष्ट्रपति पुरस्कार विजेता मंटू कुमार यादव की दादी मां स्वर्गीय राम सखिया देवी की यादें अब भी स्मृति पटल पर ताजा हैं इसी क्रम में फेस ऑफ फ्यूचर द्वारा मशरख प्रखंड के हरपुर जान गांव में स्वर्गीय राम सखिया देवी के पुण्यतिथि पर अनोखे अंदाज में याद किया गया और उन्हें विनम्र श्रद्धांजलि दी गई परिवार वालों ने उन्हें इस रूप में श्रद्धांजलि देने की एक अनोखी व्यवस्था की और निशुल्क स्वास्थ्य शिविर का आयोजन किया,निशुल्क स्वास्थ्य शिविर में मरीजों की जांच हुई और दवाई भी दी गई इस स्वास्थ्य शिविर में आए मरीजों ने इसे एक सराहनीय काम बताया,पुण्यतिथि पर माला चढ़ाने की औपचारिकता से अलग गरीबों की सेवा करने के इस व्यवस्था के लोग काफी सराहना कर रहे हैं

शिविर में 458 मरीजों के विभिन्न रोगों की जांच कर उन्हें उचित परामर्श एवं दवाईयां वितरित की गई। संस्था के अध्यक्ष मंटू कुमार यादव ने बताया कि संस्था द्वारा हमेशा समाज की उन्नति का कार्य किया जा रहा है। गरीबों की मदद के अलावा समाज के सभी तबके के लोगों को हर क्षेत्र में मदद की जाती है। शिक्षा, स्वास्थ्य के अलावा अन्य सामाजिक कार्यो में संस्था की अग्रणी भूमिका रहती है। जिससे लोगों का पूरा सहयोग भी मिल रहा है। संस्था समाज के दबे- कुचले, पिछड़े लोगों के साथ-साथ गरीब और असहाय की मदद के लिए उनके सुख-दुख में हमेशा आगे रहता है।

मौके पर संस्था के सचिव रणजीत कुमार, जिलाध्यक्ष मकेसर पंडित , जिला संयोजक ओमप्रकाश आजाद, स्वास्थ्य शिविर के संयोजक जितेंद्र कुमार सहित हजारों लोग उपस्थित थे । संध्या में भजन व कीर्तन का आयोजन बिहार के लोकप्रिय गायक शेखर सुमन , मनोज बिहारी व लखनलाल द्वारा किया गया।

खरीफ महाअभियान 2024 के तहत प्रखंड स्तरीय कर्मशाला सह प्रशिक्षण कार्यक्रम का हुआ आयोजन

प्रात :किरण संवाददाता

बगहा। प्रखंड बगहा एक स्थित ई किसान भवन परिसर में रविवार को खरीफ महाअभियान 2024 के तहत प्रखंड स्तरीय कर्मशाला सह प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ अनुमंडल कृषि पदाधिकारी,बगहा अभय कुमार,प्रखंड कृषि पदाधिकारी विरेंद्र कुमार शर्मा एवं प्रमुख चंद्रावती देवी,जदयू नेता राकेश सिंह, दयाशंकर सिंह व प्रमुख प्रतिनिधि पारस बैठा ने सयुक्त रूप से दीप प्रज्वलित करके किया गया। इस दौरान जैविक खेती, आत्मा योजना,मधुमक्खी पालन, उधानिक फसल को बढ़ावा, पीएम किसान योजना व विभाग द्वारा संचालित धान,मक्का,मूंग, मरूआ, कौनि अन्य योजनाओं के बारे में विस्तृत जानकारी दी गई। कार्यक्रम में उपस्थित किसानों को संबोधित करते हुए अनुमंडल कृषि पदाधिकारी अभय कुमार ने कहा कि वैज्ञानिक तरीके से खेती करने से लागत कम और उपज अधिक होती है।किसानों को चाहिए कि सरकार द्वारा दिए गए प्रशिक्षण का शत प्रतिशत लाभ उठाएं। समय के अनुसार आधुनिक तरीके से खेती कर अधिक पैदावार बढ़ाएं और अपनी आमदनी बढ़ाएं साथ ही खरीफ फसल में होने वाली तकनीकी परेशानियों व खरीफ फसल में लगने वाले कीट व्याधि व रोगों से बचाव के बारें में विस्तार से जानकारी दिए।उन्होंने मोटा अनाज के उत्पादन पर बल देते हुए कहा कि अच्छी सेहत के लिए मोटा अनाज खाना चाहिए। उन्होंने किसानों को मोटा अनाज के उत्पादन के लिए किसानों को प्रेरित किया साथ ही किसानों से कहा कि केमिकल फटीर्लाइजर का उपयोग खेतों में कम करें। प्रखंड कृषि पदाधिकारी विरेंद्र कुमार शर्मा ने कृषि विभाग की सभी योजनाओं के जानकारी विस्तार से दिए साथ ही उन्होंने मोटे अनाज की खेती , पीएम किसान का भौतिक सत्यापन, ई केवाईसी एवं एनपीसीआई जैसे महत्वपूर्ण बिंदुओं पर विस्तार से चर्चा किया और किसानों को मोटे अनाज की खेती करने पर जोर दिया और बीएओ ने किसान भाइयों से अपील किया की समय पर कृषि यंत्रीकरण व अन्य योजनाओं का लाभ लेने के लिए आवदेन करें और योजनाओं का लाभ लें। प्रखंड तकनीकी प्रबंधक सत्यम कुमार ने बताया कि खरीफ महाअभियान में किसानों को मोटे अनाज की खेती को क्लस्टर में करने को लेकर विस्तृत जानकारी दी गई साथ ही आत्मा योजनाओं में एफआईजी/ एफएसजी के विभिन्न सुविधाओं के बारे में बताया गया।

वाटर कूलर से ठंडा पानी पी कर राहगीरों को मिलेगी भीषण गर्मी से राहत : डॉ. पांडेय

प्रात :किरण संवाददाता

छपरा कार्यालय।अंतर्राष्ट्रीय स्वयंसेवी संस्था लायंस इंटरनेशनल की स्थानीय इकाई लायंस क्लब छपरा सारण के द्वारा समाज सेवा के क्षेत्र में भीषण गर्मी को देखते हुए परमानेंट प्रोजेक्ट के तहत लायंस अन्नपूर्णा के सौजन्य से लगभग पचास हजार रुपया के लागत से बने शुद्ध शीतल पेय जल हेतु वाटर कूलर का इंस्टालेशन भगवान बाजार थाना रोड में एक मंदिर परिसर के प्रांगण में किया गया। इस प्रोजेक्ट का उद्घाटन पास्ट डिस्ट्रिक्ट गवर्नर लायन डा एस के पांडे के द्वारा फीता काट कर किया गया।उन्होंने कहा कि लायंस क्लब द्वारा संचालित अन्नपूर्णा भोजन सेवा से जो फंड इकठ्ठा हुआ था, उसी से इस प्रोजेक्ट को किया गया। इसका लाभ आम आदमी से लेकर राहगीर तथा उस रास्ते से गुजरने वाले रिक्शा चालक, टेम्पू चालक, ठेला चालक एवं विधार्थी आदि ले सकते हैं। उद्घाटन के बाद राहगीरों ने ठंडी पानी पी कर समाज सेवा हेतु लायंस क्लब द्वारा किए गए इस कार्य की प्रशंसा की। उक्त अवसर पर लायंस अध्यक्ष रणधीर जायसवाल, सचिव मनीष सिन्हा, कोषाध्यक्ष वासुदेव गुप्ता, जेड सी लायन प्रमोद मिश्रा, लायन अमर कुमार, लायन बृजेंद्र किशोर, लायन आनंद अग्रहरी, लायन नवीन कुमार, लायन सत्यनाराण प्रसाद, लायन डा मकेश्वर चौधरी, सुधीर कुमार, संदीप कुमार, विजय सोनी, मनोज वर्णवाल, पिंटू कुमार, सुभाष कुमार, मणिशंकर मिश्रा, नारायण पांडे, मनोज यादव, शैलेंद्र कुमार, बी एन गुप्ता, लियो विकास कुमार, लियो आदिल आदि सदस्य मौजूद रहे। जानकारी पी आर ओ लायन साकेत श्रीवास्तव ने दी।

बनियापुर मे कार ने दो लोगो मारी टकर,तीन जख्मी

प्रात :किरण संवाददाता

बनियापुर । बनियापुर के चेतन छपरा काली स्थान के समीप एक कार ने एक साइकिल सवार एक पैदल यात्री को धक्का मार पलट गयी तथा बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गयी,जिसमे तीन लोग गंभीर रूप से जख्मी हो गए है,घायलो को स्थानीय लोगो द्वारा आनन फानन मे अस्पताल मे इलाज के लिए भेजा गया। घटना के संबंध मे बताया गया है कि एन एच 331 पर चेतन छपरा काली स्थान के समीप एक कार ने दो लोगो को धक्का मारने के बाद पलट गयी जिसमे कार बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गयी जिसमे सवार एक व्यक्ति बुरी तरह जख्मी हो गए,वही साइकिल सवार व एक पैदल यात्री भी जख्मी हो गये है।बताया गया है की जनता बजार की कार है वही चेतन छपरा के विजय साह प्रेम आनंद जयप्रकाश मिश्र सभी चेतन छपरा तथा रवि कुशवाहा जनता बजार निवासी घटना मे गंभीररूप से जख्मी हो गये है वही एक अन्य जख्मी जनता बजार के बताए गए है।जिन सभी का इलाज रेफरल अस्पताल मे कराया जावरहा है।

श्रद्धांजलि एवं संकल्प सभा का आयोजन

प्रात :किरण संवाददाता

बेतिया मोहन सिंह। भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी पं चम्पारण जिला कार्यालय के सभागार में पार्टी के राष्ट्रीय नेता अतुल कुमार अंजान एवं प्रोफेसर ब्रज कुमार पाण्डेय की स्मृति में श्रद्धांजलि सह संकल्प सभा का आयोजन किया गया, इस सभा में अतुल कुमार अंजान के तस्वीर पर फूलमाला अर्पित कर दो मिनट का शोक व्यक्त किया गया, श्रद्धांजलि सभा में जिला कांग्रेस के अध्यक्ष भारत भूषण दूबे, राजद के प्रभु यादव सी पी आई एम के जिला सचिव चांदसी प्रसाद यादव शंकर कुमार राव, सांस्कृतिक मोर्चा के अनिल बाबा पाठक, शिक्षक नेता नवीन राय, भारत जोडो अभियान के रामेश्वर प्रसाद, आलमगीर हुसैन, प्रगतिशील लेखक संघ के एन डी तिवारी, ए आई एस एफ नेत्री लक्की, किसान नेता राधामोहन यादव, अशोक मिश्र, तंजीम ए इंसाफ के अब्दुल सतार, खेत मजदूर नेता सुबोध मुखिया, भाकपा नेता बब्लू दूबे , कृष्ण नन्दन सिंह, तारकेश्वर सहनी, हरिशंकर साह, हरेन्द्र द्विवेदी, गायत्री देवी, आरती, मदन शर्मा, खलिकुज्जमा, लछुमन राम, ध्रुव नाथ तिवारी, संजय सिंह, गिरजा शंकर ठाकुर, गंगा वर्मा, आदि ने अपने वक्तव्य में अतुल कुमार अंजान एवं प्रोफेसर ब्रज कुमार पाण्डेय के जीवन चरित्र पर प्रकाश डालते हुए उनके अधुरे सपनों को पूरा करने का संकल्प लिया, कामरेड अतुल अंजान के मृत्यु से देश के कम्युनिस्ट एवं किसान आंदोलन को गहरा धक्का लगा है श्रद्धांजलि सह संकल्प सभा की अध्यक्षता भाकपा जिला सचिव ओम प्रकाश क्रांति ने किया

एन ई यूनियन के ग्रुप डी के कर्मचारियों ने किया प्रदर्शन

प्रात :किरण संवाददाता

छपरा सदर। रविवार को स्टेशन डायरेक्टर छपरा के विरोध में एन० ई० रेलवे मजदूर यूनियन के बैनर तले छपरा के सभी डी विभागों के कर्मचारीत्रों ने जम कर विरोध प्रदर्शन किया। इस प्रदर्शन की अध्यक्षता अगरनाथ सिंह ने किया। प्रदर्शन का मुख्य कारण 08 जून को 15102 के, स्कौंटीग स्टाप बिनोद कुमार का कपलीग काटने के वक्त बाया पैर कट गया जिसकी सुचना मिलते ही एन०ई० रेलवे मजदुर यूनियन के मंडल मंत्री एम बी सिह रेलवे के उच्च अधिकारियों से बात की । कर्मचारी का रेलवे अस्पताल में प्रारंभिक इलाज के बाद कर्मचारी को रेलवे अस्पताल गोरखपुर रेफर कराया गया। कर्मचारी और यूनियन के सहयोग से गाड़ी न०- 15107 से गोरखपुर भेजा गया रेलवे अस्पताल गोरखपुर के एल गुप्ता ने खुद जा का कर्मचारी का हाल चाल जाना यूनियन और प्रशासनिक सहयोग से कर्मचारी को एम्बुलेन्स से लखनउ भेज कर इलाज कराया जा रहा है लेकिन स्टेशन डायरेक्टर छपरा ने एक अखबार को अपन ब्यान दिया कि कर्मचारी ट्रेन से कूद गया है। इस गलत ब्यान का एन०ई रेलवे गजदूर यूनियन धोर निन्दा करती है और प्रशासन से यह मांग करती है कि स्टेशन डायरेक्टर कार्यवाई की जाए।उक्त बातों कि जानकारी एन ई यूनियन मैकेनिकल के कार्यकारी अध्यक्ष विजय कुमार यादव ने दी।

भाजपा का 240 सीट किसी प्रत्याशी का नहीं बल्कि प्रधानमंत्री मोदी का है जन समर्थन

प्रात :किरण संवाददाता

बेतिया। लोकसभा चुनाव 2024 में भाजपा को मिले 240 संसदीय सीट किसी प्रत्याशी का वोट नहीं बल्कि यह जनमत प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का है। 240 सांसदों में मात्र पांच प्रतिशत ही ऐसे सांसद जीत कर आए हैं जिनका श्री मोदी के साथ-साथ अपना भी जनमत है जो हमेशा जनता से जुड़े रहे हैं । बाकी सांसदों को अपनी जीत पर इतराने की जरूरत नहीं है, क्योंकि वे अपने समर्थन से नहीं मोदी जी के नाम और किए गए कार्यों के आधार पर जीते हैं। इस परिस्थिति में भाजपा के केंद्रीय नेतृत्व को मंथन करने की आवश्यकता है। ऐसी स्थिति क्यों उत्पन्न हुई। भाजपा के केंद्रीय नेतृत्व में पिछले 5 सालों में कोई भी खोज खबर नहीं लिया कि उनके सांसद जनता के बीच हैं कि नहीं और उन्होंने कौन-कौन सा कार्य किया। अधिकांश भाजपा सांसद सत्ता का उपयोग करते हुए भोग विलास में जुटे रहे और जनता से उनका कोई संपर्क नहीं रहा।

मोरारी बापू की राम कथा का 9 दिवसीय कार्यक्रम रविवार को हुआ संपन्न

प्रात :किरण संवाददाता

बेतिया।एक जून से वाल्मीकि की तपोभूमि वाल्मीकिनगर स्थित नारायणी गंडक नदी के तट पर चल रहे 9 दिवसीय राम कथा का आयोजन रविवार को सुसंपन्न हो गया। बतादें की राम कथा वाचक संत मोरारी बापू का राम कथा का आयोजन एक जून से किया जा रहा था जिसका रविवार के दिन जय श्रीराम के जयघोष के साथ संपन्न हो गया। बतादें 9 दिवसीय राम कथा के आयोजन के दरमियान राम कथा समिति द्वारा श्रोता श्रद्धालुओं के लिए तीन समय के प्रसाद भोजन का व्यवस्था किया गया था। राम कथा को सुनने के लिए देश के कोने कोने से श्रद्धालु आए हुए थे साथ ही नेपाल से भी बड़ी संख्या में श्रद्धालु श्रोताओं ने इस आयोजन का धार्मिक लाभ उठाया। बतातें चलें कि कथा संपन्न होते ही बापू की एक झलक पाने के लिए भक्त व्याकुल दिखे। प्रत्येक दिन की भांति कथा की शुरूआत सभी प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष चैतन्य को नमन करने के बाद हुई।इस दौरान बापू ने वाल्मीकिनगर में आदि कवि महर्षि वाल्मीकि की भव्य मूर्ति स्थापित करने और वाल्मीकि शोध संस्थान निर्माण करने का सुझाव दिया। बापू ने कहा कि राम कथा लोगों की कथा है।अत्यंत सुख से दुख की उत्पत्ति होती है।सुख और दुख आते रहना चाहिए,क्योंकि इससे दोष और गुण दिखता है।सत्यवादी वही है जो हमेशा सत्य बोले।चाहे सामने कोई भी हो,शून्य और पूर्ण दोनो एक ही हैं,प्रेम को बांटना चाहिए।सब को प्रेम करो,चाहे वह शत्रु ही क्यों न हो।प्रेम परमात्मा को भी मुक्त करता है।अंतःकरण को शुद्ध रख कर परमात्मा को पाया जा सकता है।कर्म करते रहो फल की चिंता मत करो।वर्षा ऋतु में सबसे प्रिय व्यक्ति की याद आता है। नौ दिनों के कथा वाचन के क्रम में अंतिम दिन श्रद्धालुओं की भारी भीड़ ने रिकॉर्ड तोड़ दिया पंडाल के अंदर और पंडाल के बाहर भीषण गर्मी में भी श्रद्धालुओं ने खड़े होकर मुरारी बापू के मुख से कथा का श्रवण किया।

विश्वंभरपुर में आयोजित योग शिविर का हुआ समापन

प्रात :किरण संवाददाता

दरियापुर।स्थानीय प्रखण्ड क्षेत्र के विश्वंभरपुर स्थित राम जानकी मठ परिसर में आयोजित तीन दिवसीय योग शिविर का समापन हो गया। जिसमें क्षेत्र के दर्जनों महिला तथा पुरुषों ने भाग लिया।इस दौरान पतंजलि योग पीठ हरिद्वार के बिहार तथा झारखंड प्रभारी योग गुरु अजीत कुमार के द्वारा निरोगी जीवन के लिए योग की महत्ता पर विशेष चर्चा की गई।इसके साथ ही सभी ग्रामीणों को अनुलोम विलोम,कपालभांति समेत कई योगासनों को करने की विधि तथा होने वाले फायदा को बताया गया।यह योग शिविर शुक्रवार से रविवार तक संचालित हुआ। वहीं इस शिविर के समापन के उपरांत डेरनी बाजार के समीप स्थित शिवपति मल्टी स्पेशलिटी अस्पताल का उद्घाटन किया गया।जिसमें एलोपैथी, योग, नेचुरोपैथी,पचकर्मा,मर्मदाब आदि विधियों से इलाज की जाएगी।योग शिविर में मुख्य रूप से कार्यक्रम के आयोजक सह बिहार स्टेट बार काउंसिल के वाइस प्रेसिडेंट धर्मनाथ प्रसाद यादव,महंत गुड्डू दास, डा0 रानी कुमारी, डा0 के एन सिंह,प्रो0 चंद्रशेखर भारद्वाज,सरपंच प्रतिनिधि लक्ष्मण शर्मा,सवानंद यादव,गिरिजा प्रसाद राय,लक्ष्मण सिंह समेत दर्जनों गणमान्य मौजूद थे।

संक्षिप्त खबरें

भोजपुर के एसयूआई कार्यकर्ताओं ने नीट परीक्षा रद्द करने का किया मांग

भोजपुर। एनएसयूआई छात्र नेता बताया कि छात्र-छात्राओं को नीट परीक्षा के परिणाम में धांधली गंभीर मुद्दा है छात्र अपने जीवन के एक महत्वपूर्ण समय लगाकर अपने माता-पिता के खून पसीने की कमाई लाखों रुपए पैसे लगाकर पढ़ने में खर्च करते हैं ताकि उनका बच्चा डॉक्टर बन सके के उनका सपना पूरा कर सकें। आज भी लाखों की संख्या में आर्थिक स्थिति कमजोर होने के बाद भी आने को विषम परिस्थितियों का सामना करते हुए परीक्षा की तैयारी दिलो जान से करते हैं। इसीलिए नीट परीक्षा में पेपर लीक और रिजल्ट में धांधली के विरोध में और एसयूआई प्रदेश अध्यक्ष चुन्नू सिंह के निर्देशानुसार आज आरा में छात्र छात्रों को न्याय दिलाने के लिए एनएसयूआई के कार्यकर्ताओं ने नेट और सरकार के विरुद्ध में अपनी आवाज को बुलंद किया और दोषियों पर कार्रवाई का मांग किया और नीट की परीक्षा रद्द करते हुए जांच करने का मांग किया।

बढ़ते तापमान को देखते हुए 15 जून तक स्कूल बंद रखने की मांग

औरंगाबाद। औरंगाबाद जिले में जेठ के तपती दोपहरी में आम जीवन त्रस्त हो गया है।42 से 48 डिग्री तापमान में लोगों का जीना मुहाल हो गया है ऐसी स्थिति में बिहार सरकार एवं शिक्षा विभाग के द्वारा स्कूल का खोला जाना बच्चों के लिए जानलेवा साबित होने की संभावना है। जिला परिषद औरंगाबाद के पूर्व अध्यक्ष राघवेंद्र प्रताप नारायण सिंह ने औरंगाबाद जिला पदाधिकारी को पत्र लिखा है कि 15 तारीख तक प्रचंड गर्मी के आलोक में बच्चों के स्कूल जाने पर रोक लगाई जाए इससे संबंधित प्रेषित पत्र में उन्होंने जिला पदाधिकारी को आग्रह किया है कि मौसम विभाग के प्राप्त सूचना में 15 जून तक प्रचंड गर्मी बने रहने की बात कही जा रही है ऐसी स्थिति में 15 जून तक स्कूल जाने से बच्चों को प्रतिबंधित किया जाए एवं उनके जान माल की रक्षा की जाए। जिससे उनका भविष्य सुरक्षित रखी जा सके।

रौनियार वैश्य भवन द्वारा डॉ को किया गया सम्मानित

गया। गया के लोगों को बिमारी के बारे पूरी जानकारी देने आए मेग्नेटिक एनालाइजर श्याम कुमार एवं राजीव साहा को रौनियार वैश्य भवन के महामंत्री जे पी गुप्ता और कोषाध्यक्ष अमिताभ कुमार,राजु कुमार गुप्ता ने माला पहनाकर इतने अच्छे कामों के लिए सम्मानित किया और कहा की अगली बार बढ़ी संख्या में समाज के लोगों द्वारा शिविर करवाया जाएगा।

नेशनल किकबॉक्सिंग चैंपियनशिप में भाग लेने सारण टीम रवाना

दिघवारा। नगर सिलीगुड़ी में 11 जून से 16 जून तक आयोजित होने वाले जूनियर नेशनल किकबॉक्सिंग चैंपियनशिप के लिए सारण टीम रविवार को दिघवारा स्टेशन से रवाना हुई इस टीम में आयुष,कुणाल,गोलू,मुस्कान, सौंदर्य,पल्लवी शामिल हैं सारण टीम के मुख्य सचिव रोशन सिंह,सचिव अशोक सिंह,टीम कोच हिमांशु दुबे,अमन सिंह,सुशांत सिंह,अंशु सिंह ,सोनू कुमार ने टीम को दिघवारा स्टेशन से रवाना किया और बेहतर परिणाम की शुभकामना दी।

दोस्त ने दिया धोखा,दोस्त की पत्नी को लेकर हुआ फरार

दरियापुर।स्थानीय थाना क्षेत्र के सुतिहार चौक से पति का दोस्त ही एक महिला को शादी की नीयत से लेकर फरार हो गया इस संबंध में महिला के पति सुतिहार बिंद टोला के छोटेलाल प्रसाद ने थाने में एफआईआर दर्ज कराई है दर्ज एफआईआर में उसने कहा है कि मुफस्सिल थाना क्षेत्र के दक्षिण डीह नैनी के सूरज महतो से शहर में रहने के दौरान दोस्ती हो गई इसके बाद वह इसके घर आने जाने लगा उसकी पत्नी अपने चौदह माह के बच्चे को लेकर मैके जा रही थी वह खुद ऑटो से अपनी पत्नी को सुतिहार चौक तक छोड़ गया।

बकरीद पर्व पर रोड पर पशुओं की नहीं होगी खरीद-बिक्री

पटना सिटी। सुल्तानगंज थाना परिसर में 17 जून को होने वाले बकरीद के लिए शांति समिति की बैठक हुई। इसकी अध्यक्षता थानाध्यक्ष अजय कुमार ने किया।इसमें निर्णय लिया गया कि दरगाह शाह अरजानी के मजार पर चादरपोशी के लिए जुलूस निकालने वाले को थाना से आदेश लेना आवश्यक है। दरगाह परिसर में मेला का आयोजन होता है। इसमें एक दिन पुरुषों का और दूसरे दिन महिलाओं की भीड़ उमड़ती है। बकरीद में पशुओं को रोड पर भीड़ लगाकर बेचने पर सख्त मनाही है। बकरीद के अवसर पर शनिवार ईदगाह के साथ जामा मस्जिद दरगाह, नौघरवा मस्जिद, खानमिर्जा मस्जिद और जमाएत ए इस्लामी मस्जिद नमाज अदा की जाएगी।

लोकसभा चुनाव में प्रशंसनीय कार्य करने पर एसएसपी के हाथों सम्मानित हुई गेहलौर थाना अध्यक्ष

प्रात : किरण संवाददाता

गया।जिले में स्वच्छ, निष्पक्ष,भयमुक्त एवं शांतिपूर्ण माहौल में संपन्न हुए लोकसभा चुनाव में प्रशंसनीय कार्य करने वाले नगर पुलिस अधीक्षक, अपर पुलिस अधीक्षक, नगर अपर पुलिस अधीक्षक, सभी अनुमंडल पुलिस पदाधिकारियों, एसएचओ,थाना अध्यक्षों, सर्किल इंस्पेक्टर,ओपी अध्यक्ष को एसएसपी आशीष भारती ने एसएसपी कार्यालय में प्रशस्ति पत्र प्रदान कर सम्मानित किया। एसएसपी ने कार्यों की प्रशंसा करते हुए कहा कि आप सभी के मेहनत और परिश्रम के कारण जिले में शांतिपूर्ण चुनाव संपन्न हुआ है। नतीजा है कि पहली बार गया जिले में चुनाव के दौरान कोई हिंसक घटनाएं नहीं हुई। दो चरणों में हुए चुनाव में मतदाताओं ने भयमुक्त होकर मतदान किया। चुनाव को शांतिपूर्ण संपन्न करने में पुलिस की प्रशंसनीय भूमिका रही है। एसएसपी ने सीआरपीएफ एवं एसएसबी के अफसरों को भी प्रशस्ति पत्र देकर हौसला बढ़ाया। सम्मान समारोह में गेहलौर थाना अध्यक्ष रेखा कुमारी को एसएसपी ने प्रशस्ति पत्र भेंटकर उनके कार्यों को सराहा इसके पूर्व क्राइम मीटिंग में एसएसपी ने पुलिस पदाधिकारी को निर्देश दिया कि लोकसभा चुनाव के दौरान जो भी कांड दर्ज हुए हैं उन कांडों की चार्ट शीट दाखिल कर फरार अपराधियों की गिरफ्तारी करें।साथ ही लंबित कांडों का भी निष्पादन करें। वांटेड अपराधियों की गिरफ्तारी के लिए छापामारी अभियान शुरू करने का निर्देश दिया।

घर घर गायत्री यज्ञ के निमित सैकड़ो लोगों ने यज्ञ में हिस्सा लिया

प्रात : किरण संवाददाता

औरंगाबाद। सदर प्रखंड स्थित ग्राम जम्होर के दुर्गा मैदान के प्रांगण में घर घर गायत्री यज्ञ के निमित श्रीराम प्रज्ञा मंडल जम्होर के सान्निध्य में सात कुण्डीय गायत्री यज्ञ दो पाली में कराया गया। जिसमें सैंकड़ों लोगों ने यज्ञ के कार्यक्रम हिस्सा लिया एवं भक्तिमय वातावरण में पूजा अर्चना की। हवन में हिस्सा लेते हुए श्रद्धालुओं ने बताया कि जब से हम लोग इस कार्यक्रम में शिरकत किए हैं तभी से आत्मिक, मानसिक शांति का वातावरण छा गया है। जिला गायत्री परिवार ट्रस्ट के सहायक ट्रस्टी नवनीत कुमार ने बताया कि यह कार्यक्रम अनवरत चलेगी और प्रत्येक रविवार को लोगों की हिस्सेदारी बढ़ती जा रही है।लोग इस कार्यक्रम में बढ़-चढ़कर हिस्सा ले रहें हैं। यज्ञ के सफल आयोजन कराने में कार्यकर्ता सत्यम कुमार, रंजीत मालाकार,राहुल कुमार, आनंदी कुमार,संतोष कुमार, सुरभि कुमारी,विद्या कुमारी,खुशी कुमारी,अनिता कुमारी,ममता देवी,कौशल कुमार,अग्रवाल दीपक की सराहनीय भूमिका रही।प्रत्येक रविवार को इस तरह के आयोजन से पूरा गांव का वातावरण परिष्कृत हो गया है।

खून के अभाव में न जाए किसी की जान, करिए रक्तदान : सल्लू खान

प्रात : किरण संवाददाता

औरंगाबाद। समाजसेवी मो. शाहनवाज रहमान उर्फ सल्लू खान अब तक कर चुके हैं। जिले में दिन प्रतिदिन गंभीर रूप से हीमोग्लोबिन नहीं रहने के कारण सैकड़ो मैरिज सदर अस्पताल से बाहर लौट रहे हैं और सड़क दुर्घटना में हो रहे हैं मरीजों को परिजन ना रहने के कारण ब्लड उपलब्ध नहीं होने पर काफी कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है जिसको लेकर में ब्लड बैंक में रक्त की हो गई थी। शिविर में शहर के उत्साहित युवकों ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लेते हुए रक्तदान किया। सदर अस्पताल उपाधीक्षक डा. आशुतोष कुमार सिंह ने बताया कि ब्लड बैंक में रक्त की कमी हो गई थी. लेकिन समय-समय पर रक्तदान कर जरूरतमंदों को रक्त उपलब्ध कराया जाता है। औरंगाबाद में की युवा की एक अच्छी पहल है. जिसके लिए मैं सारे संस्थापक लोगों को दिल से हार्दिक बधाई और शुभकामनाएं देते हैं शनिवार की शाम कई गंभीर मरीज को ब्लड देना था जिस पर अस्पताल में इलाज करने आए परिजन को ब्लड की जरूरत पड़ी तो वह अस्पताल में लोगों से अपील के बाद सदर अस्पताल की उपाधीक्षक डा. आशुतोष कुमार सिंह ने सह समाजसेवी मो शाहनवाज रहमान उर्फ सल्लू खान को फोन कर मोबाइल से बात कर याद किया और अस्पताल बुलाया समाज सेवी सल्लू खान लूज से गर्मी की शिकार कुवैत है और वह लू लगने से और तेज बुखार रहने के बाद वह घर पर आराम कर रहे थे। इसी बीच तेज बुखार रहने के वजूद भी वह सदर अस्पताल चले गए जहां अस्पताल जाकर कुछ युवाओं को सदर अस्पताल बुलाया और रक्तदान अस्पताल के ब्लड बैंक में कराया। जिसमें एक बार फोन करने के बाद अस्पताल पहुंचने वाले युवाओं का काफी रक्तदान करने के लिए अपना बात कही जिसके बाद दुआओं का रक्तदान लिया गया। शहर के ही सौरभ कुमार कुणाल कुमार अमित कुमार युवाओं ने कुछ अपने गांव के साथ सदर अस्पताल रक्तदान के लिए पहुंचे और रक्तदान किया जिस जरूरतमंदों को ब्लड की आवश्यकता थी उसे परिजन को रक्तदान की बालक की व्यवस्था भी कराई गई सौरभ कुणाल अमित ने कहा कि ब्लड देने से ब्लड शरीर के अंदर बनता है लोगों को रक्तदान करने में आगे आना होगा लोगों की जान बचाना हम सभी का कर्तव्य है रकड़न करने से रक्तदान बनता है। वहीं सदर अस्पताल की उपाधीक्षक डॉक्टर आशुतोष कुमार ने कहा कि औरंगाबाद जिले में सवार्डी के 39 बार रक्तदान डाटा मो. शाहनवाज रहमान उर्फ सल्लू खान ने अब तक किया है जो की इस रनिया कार्य के लिए वह हमेशा खड़े रहते हैं ऐसे लोगों को तहे दिल से आभार व्यक्त किया कहा कि आगे भी लोगों को जागरूक करने से रक्तदान के लिए जरूरी है ताकि आए हुए बेसहारा सहाय मरीज अस्पताल से वापस नहीं लौटे और रक्तदान नहीं मिले तो उनकी जान नहीं जा सके अस्पताल में रक्तदान करने वाले को उपाधीक्षक ने काम उनके सराहनीय कार्य के लिए उन्हें भी बधाई दी। डा. अमृत कुमार, रवि कुमार मिश्रा, शत्रुधन कुमार पटेल, सैयद बंटी, एक्सीलरेशन, हरेंद्र कुमार सिंह सहित लोगों ने भी रक्तदानता को जागरूक करने को लेकर कहा कि सभी को एग्जिट होकर रक्तदान करना होगा तभी जाकर लोगों की जान बच्च सकी। कहा कि हम सभी को रक्तदान के मामले में युवाओं को अधिक से अधिक जोड़ना है और लोगों को जिस तरीके से मरीज को रक्तदान उपलब्ध कराना है और लोगों का जान बचाना है जान बचाना एक महा काम है और रक्तदान भी महादान है रक्तदान महादान से बड़ा कोई भी कुछ नहीं है।

मैग्नेटिक एनालाइजर लोगों ने कराई जांच

प्रात : किरण संवाददाता

गया। गया के रौनियार वैश्य भवन में मैंग्नेटीक एनलाइजर द्वारा सौ से भी ज्यादा लोगों ने गम्भीर बिमारी के बारे में लोगों ने अपने बारे में जाना है पटना से आए मैगनेटिक एनालाइजर डा श्याम कुमार एवं राजीव साह सुबह नौ बजे से ही लोगो और रौनीयार समाज का मशीन द्वारा पुरे शरीर के अंदर के सभी कमी वैसी के बारे पुरी जानकारी दी गई है। सबसे पहले महिला विकास मच के अध्यक्ष अर्पणा शर्मा को सम्मानित किया गया फिर उन्होंने इसकी तारीफ की है।इसमें रौनीयार वैश्य भवन के अध्यक्ष जगत किशोर गुप्ता, महामंत्री जेपी कुमार गुप्ता, कोषाध्यक्ष अमिताभ कुमार, वरिष्ठ सदस्य कार्यकारणी राजु कुमार गुप्ता,राजु गुप्ता,अर्जुन कुमार गुप्ता,महिला समिति अध्यक्ष निलम गुप्ता, महामंत्री रिकी गुप्ता,सिमा गुप्ता,माधुरी गुप्ता,शिखा,विणा, मुस्कान,विमिला गुप्ता,पुषपा गुप्ता,पम्मी ,आशा काफी संख्या में लोगों ने इस शिविर से लाभ प्राप्त किया है।

सुरताल में विलीन होने की अवस्था संगीत का चरमोत्कर्ष हैं : किरण कुमारी

आरा। शिवादी क्लासिक सेंटर ऑफ आर्ट एण्ड म्यूजिक के स्थापना दिवस के अवसर पर महाजन टोली स्थित आश्रम परिसर में संगीत सरिता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम का उद्घाटन कवियित्री डॉ. किरण कुमारी ने दीप प्रज्जवलित कर किया। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि संगीत में अद्भुत सम्मोहन शक्ति हैं जो हमें एक दूसरी दुनिया में ले जाता हैं। सुधबुध खोकर सुरताल में विलीन होने की अवस्था संगीत का चरमोत्कर्ष हैं। इस अवसर पर गौरी व सगुन ने ठुमरी पर कथक की भाव भंगिमाओं को प्रस्तुत कर तालियां बटोरी। वहीं राशि, राका व चित्रा ने पंडित बिरजू महाराज की रचना "एक बार वंशी ना बाजी घनश्याम सो' पर भाव अभिनय प्रस्तुत किया। वहीं स्नेहा पाण्डे ने तीनताल में शुद्ध कथक प्रस्तुत कर वाहवाही लूटी। इस कार्यक्रम में श्री महेश यादव ने राग संगीत में "अब ना सताओ मोहे" व छोटा ख्याल व ठुमरी प्रस्तुत कर समां बांधा। वहीं श्रेया पाण्डे ने राग बागेश्री में विलंबित एक ताल की "बंदिश जाओ ना परदेश निठुर पिया मोरे" तीन ताल की बंदिश चैन ना पावें जियरा मोरे बलमा व दादरा प्रस्तुत का दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया। गुरु बक्शी विकास ने गजल "फिर उसने गुलाबों से मेरा नाम लिखा हैं" व "जिंदगी में बस यही एक खता कर गये, जाने क्या सोचकर हम वफा कर गये" प्रस्तुत किया। तबले पर राणा प्रताप सिन्हा व हारमोनियम पर अजीत पाण्डेय ने संगत से रंग भरा। मंच संचालन कथक नर्तक अमित कुमार व धन्यवाद ज्ञापन तबला वादक सूरज कान्त पाण्डेय ने किया। इस अवसर पर तबला वादक बिंदा जी, संजय कुमार, रौशन किशोर, नीतीश पाण्डेय समेत कई संगीत रसिक उपस्थित थें।

धूमधाम से मनाया गया जिंदाशा बाबा महोत्सव, कलाकारों ने बांधा शमा

प्रात : किरण संवाददाता

आराः भोजपुर जिले के तरारी प्रखंड के इमादपुर गांव में विशाल जिदाशा बाबा महोत्सव की धूम मची हुई है इस दौरान 21मन का बनाया हुआ प्रसाद से उनकी पूजा की गई ऐसा माना जाता है कि सच्चे मन से जो भी भक्त उनसे मुराद मांगते हैं वह जरूर पूरी होती है पौराणिक कथा के अनुसार हजारों वर्ष पहले जब इस गांव से भरी दुपहरी में एक फकीर जिंदा शाह बाबा जा रहे थे तभी उनको प्यास लगी थी और उन्होंने गांव के लोगों से पानी मांगा लेकिन किसी ने पानी नहीं दिया उसी रास्ते जा रहे एक व्यक्ति ने पानी के बदले उनका दूध पिला दिया जिसके बाद उनकी आत्मा तृप्त हो गई और उन्होंने वही समाधि ले लिया और पानी नहीं पिलाने वाले लोगों को श्राप देकर वह विलीन हो गए इसके बाद से उस जाति के लोग उसे गांव के अलावा आसपास के गांव में नहीं रह पाते हैं।

गलती से अगर वह इस गांव में आ भी गए तो उनके साथ कोई अनहोनी जरूर हो जाती है वहीं इनकी महत्ता काफी दूर-दूर तक फैली हुई है इसी जिंदाशा बाबा की समाधि पर हर वर्ष मेला लगता है और बड़े विधि विधान के साथ उनकी पूजा की जाती है वह भी खुले आसमान के नीचे उनकी समाधि है जिसकी पूजा गांव के अलावे आसपास के लोग भी बड़े धूमधाम से करते हैं दूध गुड़ रोटी और मेवा बादाम से मिश्रित कर बनाए गए मलीदा से इनका भोग लगाया जाता है सबसे पहले 24 घंटे का हरि नाम संकीर्तन होता है तत्पर साथ जिंदाशा बाबा की पूजा करने के बाद एक विशाल जिंदासा बाबा महोत्सव का आयोजन किया गया जिसमें की भोजपुरी के एक से बढ़कर एक बेहतरीन कलाकारों ने बहुत ही सुंदर प्रस्तुति दी उपस्थित कलाकारों में भोजपुरी की स्वर कोकिला सोनी पांडे डिंपल भूमि प्रियंका सिंह इंदु सोनाली सुमित कई कलाकार मौजूद थे कार्यक्रम का विधिवत संचालन एंकर विक्की तिवारी एवं अंतर्राष्ट्रीय उद्घोषक रवि रंजन राय ने किया इस कार्यक्रम में भोजपुरी इंडस्ट्री के कई चर्चित कलाकारों ने अपने गानों के माध्यम से लोगों को झूमने पर मजबूर कर दिया इस कार्यक्रम के संयोजक सुधीर कुमार पांडे ने बताया कि हर वर्ष यह कार्यक्रम आयोजित किया जाता है और बड़े ही धूमधाम से बाबा की पूजा की जाती है और इस सांस्कृतिक महोत्सव का आयोजन किया जाता है जिसमें की मुंबई से लेकर भोजपुरी के बड़े-बड़े कलाकार इसमें सम्मिलित होते हैं उपस्थित लोगों में सुधीर पांडेय गुड्डू पांडेय मुन्ना पांडेय अमरीश पांडेय बीरेंद्र सोनी, राजेश सिंह, रंजीत पांडेय, राहुल पांडेय, धीरज कुमार,राजकुमार, वकील पांडेय, गोरख पांडेय,समेत दर्जनों लोग उपस्थित थे।

खेल प्रतियोगिता से होता है सामाजिक समरसता कायम

प्रात : किरण संवाददाता

एंकरः भोजपुर जिले के उदवंतनगर प्रखंड अंतर्गत कारीसाथ गांव में बलराज बाबा के स्मृति में घोडदौड़ प्रतियोगिता का आयोजन किया गया इस कार्यक्रम में सबसे पहले विधिवत रूप से बलराज बाबा की पूजा अर्चना की गई उसके बाद खेल मैदान पर घोड़दौड प्रतियोगिता का आयोजन किया गया इस आयोजन में यूपी बिहार के दर्जनों घुडसवारों ने भाग लिया इस दौरान भीषण गर्मी में भी हजारों की संख्या में लोग शामिल हुए और लोगों ने घर दौड़ का खूब आनंद उठाया इस दौरान घुड़सवारों ने एक से बढ़कर एक कर्तव्य दिखाएं और लोगों ने खूब तालियां बजाई सुल्तान से लेकर राजा और चेतक जैसे घोड़े इसमें शामिल हुए एवं दर्जन घोड़े के बीच भोजपुर जिले के जगदीशपुर प्रखंड अंतर्गत रूपबांध गांव का घोड़ा सुल्तान ने बाजी मारी और शील्ड पर कब्जा जमाया, वही इस संदर्भ में कारीसाथ के मेजर राणा प्रताप सिंह ने कहा कि इस तरह की प्रतियोगिता सामाजिक समरसता के साथ-साथ कलात्मकता प्रदर्शित करने का सशक्त मंच है ,अंतरराज्यीय और जिले के घुडसवारों ने प्रतियोगिता के दौरान अपने कला-कौशल को जिस ढंग से अभिव्यक्त किया वह अपने आप में बेमिसाल है, ऐसी प्रतियोगिताओं में किसी की भी विजय व पराजय नहीं होती, बल्कि एक ऐसी व्यवस्था का प्रादूर्भाव होता है, जो समाज में एकता, अखंडता एवं आपसी भाईचारे का माहौल सृजित करता है। उन्होंने इसके लिए समिति सदस्यों को साधुवाद भी दिया।

भक्तिपूर्वक भगवान का तप एवं ज्ञान कल्याणक मना

प्रात : किरण संवाददाता

आरा। दिगंबर जैन चंद्रप्रभु मंदिर में चल रहे पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महामहोत्सव में रविवार को प्रातः समय में जिनभिषेक, शांतिधारा के उपरांत पंचायती मंदिर स्थित नव निर्मित वेदी की शुद्धि के लिए चंद्रप्रभु मंदिर से जलभरी करके घटयात्रा निकाली गई जिसमें सभी इंद्र-इंद्राणी व पात्र घटयात्रा में शामिल रहे। वेदी शुद्धि कर वहीं याग मंडल विधान हुआ। भगवान के तप कल्याणक के अवसर पर भगवान (महामुनि) के आहारचर्या में प्रथम आहार इच्छु रस का हुआ। जिसमें काफी संख्या में भक्तों ने महामुनि को आहार दिए। तदोपरांत मुनिश्री के मंगल सनिध्य में जिनबिंब स्थापना पंचायती मंदिर में किया गया। दोपहर समय में ज्ञान कल्याणक पूरे विधिपूर्वक संपन्न हुआ जिसमें भगवान का केवलज्ञान संवशरण की रचना कर दिव्य देशना हुआ। उक्त अवसर पर कई भक्तों ने अपनी शंका का समाधान प्राप्त किया। संध्या समय में सम्यक समाधान, संगीमय आरती एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम संपन्न हुआ। मीडिया प्रभारी निलेश कुमार जैन ने बताया कि पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महामहोत्सव बड़े ही धूमधाम से मनाया जा रहा है इस महोत्सव में शामिल होने के लिए भक्तगण विभिन्न स्थानों से आरा पहुंचे है। उन्होंने बताया कि सोमवार को भगवान का मोक्ष कल्याणक बहुत ही भक्तिपूर्वक मनाया जायेगा।

विधिक प्राधिकार से लोगों को न्यायिक प्रक्रिया में मिलेगी राहत

शेरघाटी। बिहार राज्य विधिक सेवा प्राधिकार, पटना के निदेर्शानुसार तथा जिला एवं सत्र न्यायाधीश सह अध्यक्ष जिला विधिक सेवा प्राधिकार गया मदन किशोर कौशिक के आदेशानुसार तथा अनुमंडलीय विधिक सेवा शेरघाटी अध्यक्ष सह अपर जिला एवं सत्र न्यायाधीश दीपक कुमार के नेतृत्व में डोभी प्रखंड सभागार में मध्यस्थता विषय पर विधिक जागरूकता शिविर आयोजित किया गया। शिविर का आयोजन की अध्यक्षता डोभी प्रखंड पंचायती राज्य पदाधिकारी अमितेश कुमार ने की। कार्यक्रम में जानकारी देते हुये पैनल अधिवक्ता विजय कुमार ने बताया कि मध्यस्थता विवादों को निपटाने की सरल एवं निष्पक्ष प्रक्रिया है जिसमें सभी पक्ष अपनी इच्छा से सद्भावनापूर्ण वातावरण में विवाद का समाधान निकालते हैं। मध्यस्थता की प्रक्रिया पूरी तरह गोपनीय रहती है।

मध्यस्थता से विवाद का हमेशा के लिए प्रभावी एवं सर्वमान्य समाधान हो जाता है तथा जटिल न्यायालयीन प्रक्रिया से राहत मिलती है। साथ ही उपस्थित जनप्रतिनिधियो को मध्यस्थता हेतु प्रेरित किया। इस मौके पर जनप्रतिनिधियों से चर्चा करते हुए अनुमंडलीय विधिक सेवा कर्मचारी मनीष प्रकाश ने बताया कि मध्यस्थता से दोनों पक्षों का समय बचता है, दोनों पक्षों को धन की हानि होने से छुटकारा मिलता है तथा दोनों पक्षकरों की जीत होती है। निश्शुल्क विधिक सहायता योजना अंतर्गत पात्र हितग्राहियों को विधिक सहायता के बारे में बताया। साथ ही आगामी नेशनल लोक अदालत 13 जुलाई में राजीनामा योग्य प्रकरणों में भी समझौता कार्यवाही के लिए जानकारी दी।

इको पार्क से चहलकदमी करते हुए हॉस्पिटल पहुंचा भालू, मची भगदड़

बेतिया।वीटीआर क्षेत्र से सटे रिहायशी इलाके के साथ साथ पर्यटन स्थलों पर भालू के चहलकदमी को लगातार देखा जा रहा है। बतादें की शनिवार के दिन ऊपरी शिविर 3 नम्बर पहाड़ स्थित टूरिस्ट डेस्टिनेशन इको पार्क और अतिथि भवन के सामने जंगली भालू को देख पर्यटकों में हलचल मच गई किसी ने भालू का वीडियो बना के शोसल मीडिया में वायरल कर दिया। बतादें की ऊपरी शिविर से भालू चहलकदमी करते हुए निचले शिविर ई टाइप कॉलोनी स्थित हॉस्पिटल पहुंच गया। हॉस्पिटल में तैनात सेक्युरिटी गार्ड राहुल कुमार ने बताया कि मैं और मेरा साथी ड्यूटी पर थे तभी हॉस्पिटल के चारदीवारी के टूटे हिस्से से भालू को घुसते देखा । हो हल्ला मचाने के बाद भालू जंगल के तरफ भाग गया। बतातें चले कि हॉस्पिटल का दीवार जंगल की तरफ का टूटा हुआ है जहां से जंगली जानवरों का आना जाना लगा रहता है। जिस कारण हॉस्पिटल में इलाज के लिए आए मरीज अपने को असुरक्षित महसूस करते हैं।

यूथ हॉस्टल भोजपुर इकाई का निर्विरोध चुनाव संपन्न, मिली जिम्मेदारी को बखूबी निर्वहन किया : डॉ अर्चना सिंह

आरा। यूथ हॉस्टल एसोसिएशन ऑफ इंडिया भोजपुर इकाई का त्रिवार्षिक चुनाव स्थानीय संभावना आवासीय उच्च विद्यालय मझौंवां के जुबली सभागार में संपन्न हुआ। कार्यक्रम की अध्यक्षता नेत्र सर्जन डॉ एस के रूंगटा ने किया। कार्यक्रम में चुनाव पर्यवेक्षक के रूप में स्टेट इकाई से डॉक्टर नम्रता आनन्द एवं डा० सुधीर मधुकर उपस्थित रहे।

कार्यक्रम का विधिवत शुभारंभ डा अर्चना सिंह के स्वागत भाषण से हुआ। डॉक्टर सिंह ने तीन वर्षो के कई महत्व पूर्ण उपलब्धियां को रखा जिसमें कोविड काल से लेकर, जनहित में नगद सहयोग और निःशुल्क नेत्र ऑपरेशन, पौधारोपण , ब्लड डोनेशन जैसे अनेकों काम के साथ साथ राजगीर फेमिली कैम्प में महामहीम राज्यपाल राजेंद्र विश्वनाथ आर्लेकर के कार्यक्रम का संचालन डा० अर्चना ने किया और जिला इकाई के ओर से महत्वपूर्ण पेंटिंग और मोमेंटो देकर जिले का मान सम्मान बढ़ाया।

सचिव विष्णु शंकर ने 3 साल के कार्यो का लेखा-जोखा सचिव प्रतिवेदन में प्रस्तुत किया।

जिला इकाई की ओर से सभी अतिथियों को बुके मोमेंट और उपहार देकर सम्मानित किया गया। अपने अध्यक्षीय भाषण में डॉक्टर एस०के ०रुंगटा पूर्व के तीन सालों का सफलतापूर्वक संचालन के लिए चेयरमैन डॉ०अर्चना सिंह, और उनके सहयोगी और आजीवन सदस्य और विद्यालय के निदेशक डॉ०कुमार द्विजेंद्र और टीम के सभी सदस्यों को सहयोग के लिए बधाई और शुभकामना दी । इन्होंने बताया कि सबके सहयोग से सारा कार्यक्रम सफलतापूर्वक संपन्न हुआ और नई टीम भी सही ढंग से,और नई ऊर्जा के साथ काम करेगी और अपने लक्ष्य को हासिल करेगी।

आज के चुनाव पदाधिकारी श्री सुनील नैय्यर श्री प्रकाश अग्रवाल जी थे। स्क्रुटनी कमिटी में श्री अजय कृष्णा अग्रवाल एवं डॉ दिनेश प्रसाद सिंन्हा थे। चुनाव प्रक्रिया की जांच करते हुए सभी कागजात को स्टेट कमिटी को प्रस्तुत किया,संतुष्टि के बाद नई टीम के गठन की घोषणा मंच से की गई। सभी पद के लिए एक-एक ही उम्मीदवार थे इसलिए निर्विरोध चुनाव संपन्न हुआ। निर्वाचित नये पदाधिकारी में अध्यक्ष डॉ एस० के ०रुंगटा, उपाध्यक्ष - सरदार गुरु चरण सिंह, श्री दिनेश कुमार , चेयरमैन -श्री अनिल कुमार , कोषाध्यक्ष -कृष्ण माधव अग्रवाल ,तथा सचिव अनुराग कुमार बनाए गए। चेयरमैन अनिल कुमार ने अपने कई सुझाव के साथ मुख्य संरक्षक में श्री विजय कुमार सिंह ,अजय कृष्ण अग्रवाल एवं सुनील नैयर एवं ऑर्गेनाईजिंग सेक्रेट्री के रूप में श्री प्रकाश अग्रवाल का नाम सर्वसमिति से रखा गया। धन्यवाद ज्ञापन सचिन अनुराग सिंह ने किया। मंच संचालन प्रवीण कुमार ने किया। इस अवसर पर ऑनलाइन फोटोग्राफी प्रतियोगिता जो कि कुछ दिन पूर्व पाटलिपुत्र यूनिट में करवाई थी। भोजपुर इकाई के अमित कुमार को सर्टिफिकेट और मैडल देकर प्ररस्कृत किया गया। इस अवसर पर सदस्यों को सम्मानित किया गया।

टीओबी बाल मन टैलेंट हंट प्रतियोगिता में शामिल प्रतिभागियों के परिणाम की हुई घोषणा

प्रात : किरण संवाददाता

गया।बिहार की सबसे बड़ी प्रोफेशनल लर्निंग कम्युनिटी टीचर्स ऑफ बिहार के पांचवें स्थापना दिवस के अवसर पर 20 जनवरी 2024 से 05 फरवरी 2024 तक आयोजित टीओबी बाल मन पत्रिका के प्रधान संपादक सह उत्क्रमित मध्य विद्यालय सिलौटा भभुआ कैमूर के शिक्षक धीरज कुमार के द्वारा आयोजित टीओबी बाल मन टैलेंट हंट प्रतियोगिता में शामिल प्रतिभागियों के परिणाम की घोषणा विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर "पर्यावरण संरक्षण में विद्यालय की भूमिका" विषय पर आयोजित एक्सक्लूसिव लेट्स टॉक में शामिल होने वाले मुख्य अतिथि अमरेंद्र पाण्डेय, जिला कार्यक्रम पदाधिकारी, कैमूर एवं विकाश कुमार डीएन, जिला कार्यक्रम पदाधिकारी, रोहतास के द्वारा की गई है। इस प्रतियोगिता में बिहार के विभिन्न जिले के कुल 58 प्रतिभागियों ने टीचर्स ऑफ बिहार के फेसबुक ग्रुप टीचर्स ऑफ बिहार "द चेंज मेकर्स" पर अपनी प्रस्तुति से संबंधित वीडियो को साझा किया। जिसमें से 26 प्रतिभागियों का विडियो मानक के अनुरूप पाया गया। इन 26 चयनित विडियों में से चयन समिति में शामिल किशनगंज जिले के प्राथमिक विद्यालय सुहागी की शिक्षिका निधि चौधरी एवं कैमूर जिले के नया प्राथमिक विद्यालय तरहनी, कुदरा शिक्षक सिकेंद्र कुमार सुमन के द्वारा वर्गवार 3 श्रेणी के 8 विजेता प्रतिभागियों का चयन किया गया है।विजेता प्रतिभागियों में पारंपरिक लोक गीत के लिए वर्ग 1 से 5 में प्राथमिक विद्यालय बड़की बलियारी विक्रम पटना के छात्र रजनीश कुमार को प्रथम स्थान, उत्क्रमित उच्चतर माध्यमिक विद्यालय कोटा, नुआव, कैमूर की छात्रा प्रियंका कुमारी को दूसरा स्थान और मध्य विद्यालय रांटी, राजनगर, मधुबनी की छात्रा काजल कुमारी को तीसरा स्थान प्राप्त हुआ है। वर्ग 6 से 8 में उत्क्रमित मध्य विद्यालय बेला गोपी, गायघाट, मुजफ्फरपुर की छात्रा सुहानी कुमारी को प्रथम स्थान, मध्य विद्यालय लतीपुर, बिहपुर, भागलपुर की छात्रा रिया कुमारी को दूसरा स्थान और उत्क्रमित माध्यमिक विद्यालय सलथुआ, कुदरा, कैमूर के छात्र पुरुषोत्तम कुमार को तीसरा स्थान प्राप्त हुआ है। वर्ग 11 से 12 में उत्क्रमित माध्यमिक विद्यालय नोनिया टोला, चकला, नरपतगंज, अररिया की छात्रा रुचि सिंह को प्रथम स्थान और उत्क्रमित माध्यमिक विद्यालय सलथुआ, कुदरा, कैमूर की छात्रा गोल्डी कुमारी को दूसरा स्थान प्राप्त हुआ है।

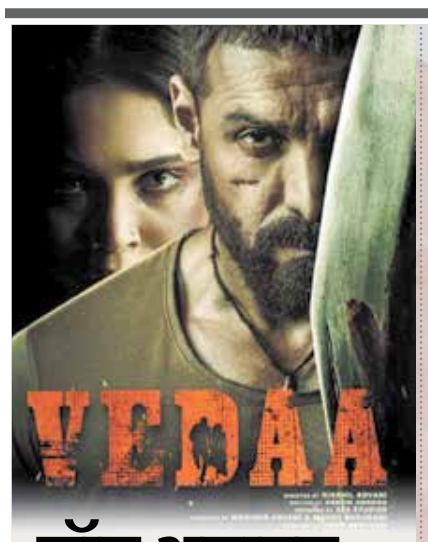

जॉन अब्राहम जॉन की 'वेदा' 15 अगस्त को होगी रिलीज

जॉन अब्राहम अपनी आगामी फिल्म 'वेदा' को लेकर बॉक्स ऑफिस पर धमाल मचाने को तैयार हैं। 'बाटला हाउस' और 'सत्मेव जयते' जैसी हिट फिल्में देने के बाद अभिनेता एक बार फिर 15 अगस्त को ही अपनी नई फिल्म रिलीज करने वाले हैं। निखिल आडवाणी द्वारा निर्देशित 'वेदा' एक एक्शन से भरपूर फिल्म हैं, जो कि सच्ची घटनाओं से प्रेरित होकर बनाई गई है। फिल्म का टीजर पहले ही रिलीज हो चुका है। टीजर के रिलीज होने के बाद से ही प्रशंसक इंतजार में हैं कि फिल्म कब सिनेमाघरों में आएगी और वह इसका लुत्फ उठा पाएंगे।

चौंका देने वाली कहानी है 'वेदा'

जॉन अब्राहम की इस फिल्म में दिल दहला देने वाले स्टंट और जबरदस्त एक्शन होंगे। दावा किया जा रहा है कि फिल्म की कहानी चौंका देने वाली होगी। फिल्म में जॉन के अलावा शरवरी, अभिषेक बनर्जी और तमन्ना भाटिया अहम भूमिका में नजर आएंगे। फिल्म 15 अगस्त 2024 को सिनेमाघरों में दस्तक देगी। निखिल आडवाणी द्वारा निर्देशित और असीम अरोड़ा द्वारा लिखित, 'वेदा' का निर्माण जी स्टूडियोज, उमेश कुमार बंसल, मोनिशा आडवाणी, मधु भोजवानी, जॉन अब्राहम द्वारा किया गया है और मीनाक्षी दास इसकी सह-निर्माता हैं।

12 जुलाई को होने वाली थी रिलीज

इससे पहले जब वेदा का टीजर रिलीज किया गया था तब इसके सिनेमाघरों में दस्तक देने की तारीख 12 जुलाई तय की गई थी, लेकिन अब इसके रिलीज की तारीख बदल दी गई है। फिल्म स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर दर्शकों के बीच लाई जाएगी।

'पुष्पा 2' से होगी सीधी टक्कर

जॉन अब्राहम की 'वेदा' की सीधी टक्कर दक्षिण के सुपरस्टार अल्लू अर्जुन की 'पुष्पा 2' से होगी। 'पुष्पा- द राइज' को दर्शकों ने खूब पसंद किया था। फिल्म ब्लॉकबस्टर रही थी। वहीं, लोग बड़ी ही बेसब्री के साथ इसके दूसरे भाग का इंतजार कर रहे हैं। ऐसे में जॉन अब्राहम के सामने कड़ी चुनौती होगी।

कार्तिक आर्यन आज के दौर के उन एक्टर्स में से हैं, जो लगातार अपने किरदारों के साथ प्रयोग करते जा रहे हैं। बीते दिनों में वह एक ओर फ्रेडी के ग्रे रोल में दिखे, तो दूसरी तरफ मुद्दे वाली सत्य प्रेम की कथा में नजर आए। अब कार्तिक आर्यन फिल्म चंदू चैंपियन को लेकर सुर्खियों में हैं। इसमें उन्होंने देश के पहले पैरालंपिक गोल्ड मेडलिस्ट मुरलीकांत पेटकर का किरदार निभाया है। इस फिल्म को कबीर खान ने डायरेक्ट किया है। कार्तिक आर्यन ने चंदू चैंपियन के अलावा अपने स्टारडम और स्ट्रगल और बॉलीवुड की गुटबाजी के बारे में भी बात की। उनसे एक खास बातचीत।

मैं गुटबाजी से नहीं अपने काम से जाना जाना चाहता हूं

आउटसाइडर होने के नाते आपको इंडस्ट्री में लॉबी, गुटबाजी और फेवरेटिज्म का सामना भी करना पड़ा है,आपने उसे कैसे हैंडल किया?

मेरा हमेशा से कभी हार न मानने वाला रवैया रहा है। मेरे रास्ते में जितनी भी मुश्किलें आईं, मैंने उन्हें अपने काम से पार किया। मैं अगर किसी फिल्म में काम करूं, तो उसके पहले दिन से आखिरी दिन तक उससे जुड़ा रहता हूं, वो सारे मेकर्स को नजर आता है। मैं बोल कर नहीं काम करके दिखाता हूं। फेवरेटिज्म से दूर रहता हूं। मैं अपने काम से जाना जाना चाहता हूं, ना कि किसी गुट या ग्रुप से।

आपने चंदू चैंपियन बनने के लिए 18 किलो वजन कम किया, इस प्रक्रिया में आपके लिए सबसे ज्यादा चुनौतीपूर्ण क्या था?

मैं हमेशा से बहुत फूडी रहा हूं। अपनी जिंदगी में ये कभी नहीं सोचा कि मैं डायट करूंगा, खाने के बाद मैं मीठा नहीं खाऊंगा। मुझे डायट शब्द से सख्त नफरत है। मगर जब चंदू चैंपियन के लिए मुझे अपनी पसंद का खाना पूरी तरह से छोड़ देना पड़ा। दो साल तक वो करना मेरे लिए सबसे ज्यादा मुश्किल था। जिमिंग का अंदाज भी बदला। मैंने सब कुछ बेसिक से शुरू किया और खान -पान में सारे अल्टरनेट फूड खाने शुरू किए। मैं कोल्ड कॉफी, चाय, मीठी चीजें, चिप्स आदि खाता था, तो मुझे सब छोड़ना पड़ा। अपनी फूड हैबिट को बदल कर बॉक्सिंग, स्विमिंग आदि सीखना भी टास्क था। शुरू में मीठा छोड़ने पर डिप्रेशन भी आया, मगर बाद में जब मैं एक्सरसाइज करते हुए अपनी कैलरीज काउंट करने लगा, तो मैंने सबकुछ छोड़ दिया। बहुत विल पावर लगा मुझे इसमें।

अपनी फिल्म के थिएट्रिकल रिलीज को लेकर क्या उम्मीदें हैं, क्योंकि पिछले कुछ अरसे से सैम बहादुर, मिशन रानीगंज, मैदान जैसी बायोपिक्स नहीं चल रही?

कई बार कई फिल्मों का समझ में नहीं आता। असल में कई फैक्टर्स होते हैं, जैसे पब्लिक का मूड क्या है? लेकिन मैं ये जरूर कहूंगा कि कमर्शल एस्थेटिक के साथ अगर एक अच्छी फिल्म बनाई जाए, तो वो चलती है। फिल्म नहीं चलती, तो इसका मतलब यही है कि वह दर्शकों के साथ कनेक्ट नहीं कर पाई। बायोपिक बहुत ही मुश्किल विषय होता है। बहुत अरसे बाद किसी बायोपिक के ट्रेलर को इतनी अच्छी प्रतिक्रिया मिली है, तो मैं तो आशा ही कर सकता हूं कि जितने लोगों ने ट्रेलर पर रिस्पॉन्स दिया, वो थिएटर में आ जाएं।

पहले के एक्टर्स करियर के शुरआती दौर में हलकी-फुलकी मनोरंजक फिल्में करते और सीनियर हो जाने के बाद मुद्दे वाली या बायोपिक फिल्मों का रुख करते, मगर आज के दौर में आप जैसे हीरोज शुरू में ही सीरियस सिनेमा की ओर मुड़े हैं?

मैं करियर को इस ढंग से नहीं सोचता। मैं ज्यादातर स्क्रिप्ट के आधार पर अपनी फिल्मों का चुनाव करता हूं। जो स्क्रिप्ट मुझे अच्छी लगती है, उसमें मैं जॉनर की परवाह किए बगैर आगे बढ़ता हूं। वैसे भी अच्छी स्क्रिप्ट्स कम ही आती हैं। सत्यप्रेम की कथा और चंदू चैंपियन ऐसी स्क्रिप्ट्स हैं, जिन्हें मैं करना चाहता हूं। मेरे काम करने का तरीका अलग है। कई बार लोग कॉन्सेप्ट वाली फिल्में ही करते रह जाते हैं या एक जोन पकड़कर आगे बढ़ते हैं, मगर मेरे पास अच्छी स्क्रिप्ट आ जाती है और वो जोन अपने आप ब्रेक हो जाता है। मैंने भूलभुलैया 2, फ्रेडी, धमाका, सत्यप्रेम की कथा जैसी फिल्में कीं और अब मैं चंदू चैंपियन कर रहा हूं।

रकुल ने इंडियन 2 से अपने किरदार का किया खुलासा

अभिनेत्री रकुल प्रीत सिंह अपनी आगामी फिल्म इंडियन 2 को लेकर बेहद उत्साहित हैं। एस. शंकर द्वारा निर्देशित इंडियन 2 में कमल हासन अहम किरदार में हैं। रकुल ने हाल ही में फिल्म में अपनी भूमिका के बारे में खुलकर बात की है। अभिनेत्री ने बताया कि वह फिल्म में एक जिद्दी लड़की का किरदार निभा रही हैं और वह अपने किरदार से पूरी तरह से मेल खाती हैं। उन्होंने कहा, मैं एक जिद्दी, आत्मविश्वासी लड़की का किरदार निभा रही हूं, जो जानती है कि उसे क्या चाहिए। असल जीवन में इस किरदार से मैं पूरी तरह मिलती हूं। रकुल ने कहा, यह निश्चित रूप से मेरे करियर की सबसे खास फिल्मों में से एक है।

छोटे नवाब के साथ पर्दे पर फरमाएंगी इश्क!

श्रीलीला साउथ की उभरती हुई अभिनेत्री हैं। अब वे मुख्य नायिका के तौर पर भी अभिनय का जादू चला रही हैं। श्रीलीला ने लगातार कई प्रोजेक्ट्स के साथ टॉलीवुड में अपना दबदबा बना लिया। कई फिल्मों में वे मुख्य भूमिका निभाते हुए साउथ के कई सुपरस्टार्स के साथ काम करने के लिए तैयार हैं। वहीं, इस बीच अब उनकी सफलता के आसमान पर एक और सितारा चमकने वाला है। साउथ सिनेमा के अलावा श्रीलीला अब जल्द ही हिंदी सिनेमा में भी अपनी अदाकारी का जलवा बिखेरने वाली हैं। रिपोर्ट्स के अनुसार, श्रीलीला जल्द ही हिंदी सिनेमा में डेब्यू करेंगी। खबर है कि श्रीलीला सैफ अली खान के बेटे इब्राहिम अली खान के साथ फिल्म दिलेर में नजर आएंगी, जिसका निर्देशन कुणाल देशमुख करेंगे। कहा जा रहा है कि दिलेर के निर्माता तेलुगु सनसनी के साथ बातचीत कर रहे हैं। हालांकि, उनकी इस परियोजना पर आधिकारिक बयान का अभी भी इंतजार है, लेकिन इंडस्ट्री पहले से ही यह अनुमान लगा रही है कि यह डेब्यू बॉलीवुड में अगले बड़े स्टार की लॉन्चिंग हो सकती है।

इंडस्ट्री में 20 साल से टिकी हैं मोना बोलीं- इस प्यार के लिए आभार

टीवी इंडस्ट्री की मशहूर अभिनेत्री मोना सिंह इन दिनों सुर्खियां बटोर रही हैं। वे आने वाले दिनों में कॉमेडी-हॉरर फिल्म मुंजा में अहम भूमिका निभाती नजर आने वाली हैं। मोना पहली बार किसी हॉरर फिल्म में नजर आने वाली हैं। अपनी फिल्म के प्रमोशन के दौरान अभिनेत्री अपने लंबे करियर के बारे में भी खुलकर बातें करती नजर आईं।

20 साल बाद भी इंडस्ट्री में हूं

मोना सिंह ने टीवी के मशहूर शो जस्सी जैसी कोई नहीं से अपने करियर की शुरुआत की थी। इस शो की वजह से वे रातों-रात स्टार बन गईं। मोना को आज भी उनके फैंस जस्सी के नाम से ही जानते हैं। हाल ही में एक इंटरव्यू के दौरान मोना बोलीं, मैं इसी बात से काफी खुश हूं कि बीस साल बाद भी मुझे काम मिल रहा है और मैं इंडस्ट्री में बनी हुई हूं। इस बात के लिए मैं खुद को सौभाग्यशाली मानती हूं।

अतीत को बदला नहीं जा सकता

मोना सिंह अपनी बात जारी रखते हुए कहती हैं, मैं हमेशा से वर्तमान में जीती आई हूं। मैं बीती बातों को सोचकर उदास नहीं होती हूं। इंडस्ट्री ने मुझे कितना कुछ दिया है। साल 2023 मेरे लिए काफी खास रहा है। इस साल मैं कई शानदार शो का हिस्सा रही। मेरा हर किरदार मेरे पिछले किरदार से अलग और चैलेंजिंग रहा है। सच कहूं तो मुझे काफी मजा आ रहा है। मैं अपने करियर के इस फेज को काफी एंजॉय कर रही हूं।

मुंजा को लेकर उत्साहित

मोना सिंह आदित्य सरपोतदार द्वारा फिल्म मुंजा को लेकर काफी उत्साहित हैं। उन्होंने कहा कि मैं पहली बार पुणे और कोंकण क्षेत्र पर आधारित फिल्म में काम कर रही हूं। इस फिल्म के दौरान मुझे काफी कुछ सीखने को मिला है। मुझे अलग-अलग विषयों पर काम करना काफी पसंद है। इस फिल्म की शूटिंग हमने कोंकण क्षेत्र के कुछ बहुत ही खूबसूरत और प्राचीन स्थानों पर किया है। यह एक लाजवाब फिल्म है।

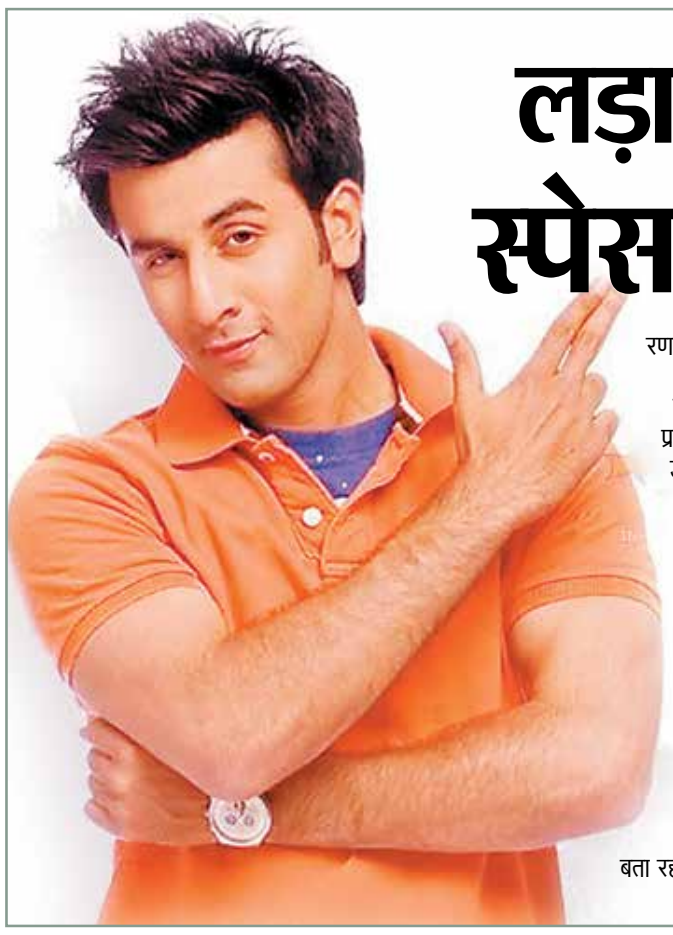

लड़ाई हो तो भी थोड़ा स्पेस मिलना चाहिए

रणबीर कपूर को आखिरी बार फिल्म एनिमल में देखा गया था। बॉक्स ऑफिस पर ये ब्लॉकबस्टर फिल्म रही थी। इस फिल्म के प्रमोशन्स के दौरान रणबीर ने बताया था कि उनकी भी पत्नी आलिया भट्ट के साथ लड़ाई होती है। बहस भी होती है। आलिया तब तक रणबीर को कहीं नहीं जाने देती हैं, जब तक वो अपना प्वॉइंट प्रूव न कर लें। वहीं, रणबीर का मानना होता है कि वो दोनों ही कुछ समय के लिए स्पेस ले लें, जिससे बाद में शांत दिमाग से चीजों को सॉल्व किया जा सके। करीना संग बातचीत में रणबीर ने कहा था- अगर लड़ाई होती है तो मैं चाहता हूं कि मुझे थोड़ा स्पेस मिले। वहीं, आलिया खुद को उस समय वकील समझने लगती हैं। उन्हें अगर लगता है कि कोई उन्हें बेवजह गलत बता रहा है तो वो खुद का बिना प्वॉइंट प्रूव किए उस इंसान को वहां से जाने नहीं देतीं। जैसे की मैं। वो अपना प्वॉइंट क्लियर करती हैं। मेरे अंदर बिल्कुल भी ईगो नहीं। सेल्फ रिस्पेक्ट भी नहीं। मैं सॉरी बोलने में यकीन रखता हूं। फिर मैं गलत हूं या सही. पर मुझे स्पेस देने का कॉन्सेप्ट पसंद है। कई बारी चीजें गरमा-गर्मी में कह दी जाती हैं। जब भी कपल के बीच लड़ाई हो रही होती है तो कुछ चीजें हम लोग एक-दूसरे को ऐसी कह देते हैं जो नहीं कहनी चाहिए और आपका वो मतलब भी नहीं होता है जो आप कह देते हैं। ऐसे में वो 3-4 शब्द किसी इंसान के साथ रह जाते हैं जो उसको याद आते हैं तो हर्ट करते हैं। ऐसे में कपल को बैठकर आराम से बात करनी चाहिए और गलतफहमी दूर करनी चाहिए।

बता दें कि रणबीर कपूर और आलिया भट्ट की लव स्टोरी की शुरुआत ब्रह्मास्त्र के सेट पर हुई थी। जब दोनों की पहली मुलाकात हुई। साल 2022 में दोनों ने इंटीमेट वेडिंग की, जिसमें घर के लोग और करीबी दोस्त ही शामिल हुए थे। इसी साल दोनों ने नवंबर 2022 में बेटी राहा कपूर का स्वागत किया था। राहा डेढ़ साल की हो गई हैं और इनकी क्यूटनेस पर हर कोई फिदा नजर आता है। स्पेशली इनकी आंखों के रंग को देखकर हर कोई इन पर प्यार लुटाता दिखता है।

बिग बॉस ओटीटी 3 में धमाल मचाएंगे भव्य गांधी

तारक मेहता का उल्टा चश्मा के टप्पू अका भव्य गांधी शो छोड़ने के बाद छोटे पर्दे से गायब हैं। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक, भव्य गांधी जल्द ही छोटे पर्दे पर अपनी वापसी कर सकते हैं। रिपोर्ट्स के अनुसार, भव्य गांधी बिग बॉस ओटीटी 3 में नजर आ सकते हैं। बताया जा रहा है कि भव्य को बिग बॉस ओटीटी 3 के निर्माताओं द्वारा संपर्क किया गया है। बिग बॉस ओटीटी के अगले सीजन को अनिल कपूर होस्ट करेंगे। भव्य गांधी को कॉमेडी शो तारक मेहता... से टप्पू के किरदार से खूब पहचान मिली।

संक्षिप्त खबरें

प्रचंड गर्मी में बिजली की अव्यवस्था से उपभोक्ता हो रहें हैं परेशान

सदर मुंगेर ।सदर प्रखंड अंतर्गत नौवागढ़ी क्षेत्र में इन दिनों बिजली की कुख व्यवस्था देखने को मिल रही है।बिजली रानी कभी दिन तो कभी रात में घंटा घंटा गुम हो जाती है। जिससे उपभोक्ता काफी इस भीषण गर्मी में परेशान दिखते हैं।वहीं नौवागढी क्षेत्र के उपभोक्ता अरुण शर्मा, अनिल वर्मा, डॉ संजय कुमार, शैलेंद्र कुमार द्वारा बताया गया कि बढ़ते ही गर्मी बिजली की व्यवस्था बिल्कुल खराब हो जाती है। बिजली विभाग की उदासीनता देखकर हम लोग काफी परेशान रहते हैं।इस प्रचंड गर्मी में बिजली नहीं रहने से लोगों के स्वास्थ्य के ऊपर काफी हद तक प्रभाव पड़ता है।एक ओर आसमान से सूर्य देव आग उगल रही है तो दूसरी ओर कभी रात तो कभी दिन में घंटा घंटा बिजली गुम रहती है।ऐसी व्यवस्था रही तो हम लोग इस गर्मी में कैसे जी पाएंगे। दूसरे और सरकार 24 घंटे बिजली की बात करती है सरकार द्वारा किए जा रही वादे इस गर्मी में विफल दिख रहा है। बिजली नहीं रहने से इस भीषण गर्मी में लोग पानी के लिए भी त्राहिमाम हो जाते हैं।

दिघवारा में अंग्रेजी शराब के साथ दो धंधेबाज गिरफ्तार

दिघवारा नगर ।थाना क्षेत्र के राईपट्टी से रविवार को पुलिस ने गुप्त सूचना के आधार पर छापेमारी कर लगभग 30.270 लीटर अंग्रेजी शराब को बरामद कर लिया इस दौरान पुलिस ने दो धंधेबाज को भी मौके से गिरफ्तार कर लिया।गिरफ्तार धंधेबाज की पहचान दिघवारा थाना क्षेत्र के राईपट्टी निवासी शत्रुघ्न सिंह के पुत्र गोपाल सिंह उर्फ अमरेश कुमार तथा संतोष प्रसाद के पुत्र विष्णु कुमार के रूप में हुई है।थानाध्यक्ष रविशंकर कुमार ने बताया कि गुप्त सूचना के आधार पर छापेमारी की गई जिसमें गिरफ्तार धंधेबाज द्वारा अपने घर के समीप स्थित कुआँ के पास कार्टून में शराब छिपा कर रखा गया था।बरामद शराब में रॉयल स्टैग ब्रांड के 750 एमएल के उन्नीस बोतल तथा ऑफिसर चॉइस ब्रांड के 180 एमएल के 89 बोतल पाया गया।गिरफ्तार दोनों धंधेबाज को जेल भेज दिया गया।

मारवाड़ी युवा मंच ने उपलब्ध कराया शीतल पेयजल

बगहा।लगातार बढ़ रही उमस एवं गर्मी से राहगीर परेशान हैं स्टेशन चौक बगहा जहां से बस पकड़ने के लिए प्रतिदिन सैकड़ो की संख्या में यात्री आते जाते हैं लोक लाज के कारण प्यास से तड़पते यात्री होटल में नहीं जाते एवंइधर-उधर चापाकल की तलाश करते दिखते हैं इसको देखते हुए मारवाड़ी युवा मंच बगहा के तत्वाधान में रविवार से शीतल पेयजल उपलब्ध कराया जा रहा है मंच के सदस्यों ने बताया कि स्टेशन चौक बैंक चौराहा के समीप अजय मेडिकल स्टोर के सामने शीतल जल उपलब्ध कराया गया है ताकि इस गर्मी में आने जाने वाले यात्रियों की प्यास बुझाई जा सके इस कार्य को यात्री प्रशंसा कर रहे हैं।

वाहन जांच के दौरान 58,500 रुपए का लगाया गया जुर्माना

बगहा पुलिस जिला के सभी थाना तथा पुलिस केंद्र परिसर में पुलिस पदाधिकारियों व पुलिस कर्मियों के द्वारा किया गया साफ-सफाई। बगहा ।बगहा पुलस जिला में शनिवार को विगत 24 घंटा में 03 अभियुक्त की गिरफ्तारी की गई है ।कुल-03 वारंट का निष्पादन किया गया है। जिसमें जमानतीय 01 अजमानतीय 02 है ।उक्त जानकारी पुलिस अधीक्षक,बगहा सुशांत कुमार सरोज ने प्रेस रिलीज जारी करके दिया ।उन्होंने बताया कि धनहाँ थाना, नौरंगिया थाना द्वारा शराब के काण्ड तथा अन्य काण्ड में 03 अभियुक्त को गिरफ्तार कर जेल भेजा गया।एसपी ने बताया कि बगहा पुलिस द्वारा अपराध नियंत्रण हेतु वाहन जॉच किया गया। जॉच के क्रम में रामनगर थाना द्वारा-23,000, यातायात थाना द्वारा-13,500, चौतरवा थाना द्वारा-12,000, धनहा थाना द्वारा-7,000, पटखौली थाना द्वारा-3,000 इस प्रकार कुल-58,500 रुपए का जुमार्ना लगाया गया।

नवनिर्मित हॉस्पिटल के मकान पर से गिरने से एक मजदूर की हालत गंभीर

घैलाढ़ (मधेपुरा)।प्रखंड मुख्यालय स्थित नवनिर्मित हॉस्पिटल के तीन ताला मकान पर काम कर रहे मजदूर की गिरने से हालत गंभीर हो गई है जहां आनन- फानन में घायल मजदूर को अन्य मजदूरों के द्वारा प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र घैलाढ़ में भर्ती कराया गया।जहां डॉ. रितेश कुमार सिंह के द्वारा उपचार करने के बाद स्थिति गंभीर होते देख बेहतर इलाज के लिए जननायक कपूर्री ठाकुर मेडिकल कॉलेज रेफर कर दिया गया।मिली जानकारी अनुसार बता दे की नवनिर्मित अस्पताल के तीन ताला पर प्लास्टर के लिए मजदूर शटरिंग लगा रहे थे कि अचानक शटरिंग लगाने के दौरान एक मजदूर गिरकर बुरी तरह जख्मी हो गया।घायल मजदूर श्रीनगर गांव के वार्ड नंबर 8 निवासी देवो यादव का पुत्र सुनील यादव है।

एसपी द्वारा मासिक अपराध गोष्टी का किया गया आयोजन एसपी ने सभी थानाध्यक्ष को दिया आवश्यक दिशा- निर्देश

एसपी ने अगामी बकरीद पर्व को लेकर बगहा पुलिस जिला में विधि व्यवस्था को लेकर सभी थानाध्यक्ष को दिया आवश्यक निर्देश

प्रात : किरण संवाददाता

बगहा।पुलिस अधीक्षक,बगहा सुशांत कुमार सरोज की अध्यक्षता में बगहा पुलिस जिला के पुलिस सभागार में जिला स्तरीय मासिक अपराध गोष्टी का आयोजन किया गया ।जिसमें अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी बगहा,रामनगर और सभी अंचल पुलिस निरीक्षक एवं थानाध्यक्ष शामिल हुए।गोष्ठी में एसपी ने सभी थानाध्यक्ष को बकरीद पर्व 2024 को लेकर आवश्यक निर्देश दिशा-निर्देश दिया।उन्होंने कहा कि बगहा पुलिस जिला अंतर्गत सभी थाना के थानाध्यक्ष शांति समिति बैठक करना सुनिश्चित करेंगे और अगामी बकरीद पर्व में विधि व्यवस्था,आसामाजिक तत्वों द्वारा विघ्न उत्पन्न करने वाले के विरुद्ध विशेष चौकसी बरती जानी चाहिए। एसपी ने कहा कि स्थानीय प्रबुद्ध लोगों को बकरीद पर्व के दौरान शांतिपूर्ण माहौल स्थापित रखने में अपनी सहभागिता सुनिश्चित निभाएंगे और भाईचारा के साथ पर्व को मनाएंगे ।एसपी ने कहा की तीन बने नये कानून से संबंधित प्रशिक्षण हेतु दिशा-निर्देश, मिशन @75 के अनुरूप काण्डों का ससमय निष्पादन,गश्ती समीक्षा,वाहन जॉच निरोधात्मक कार्रवाई,अवैध शराब,खनन कारोबारियों के विरूद्ध कड़ी कार्रवाई,डायल-112/सीसीटीएनएस से संबधित आवश्यक दिशा निर्देश दिया ।उन्होंने कहा कि बगहा पुलिस जिला में मद्यनिषेध अभियान के अन्तर्गत निरंतर छापामारी करने तथा अन्य विधिक विषयों पर निर्देश दिया साथ ही लोकसभा चुनाव 2024 को शांतिपूर्ण संपन्न कराने को लेकर एसपी द्वारा अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी बगहा/रामनगर,कुमार देवेंद्र,पुलिस उपाधीक्षक(रक्षित),पुलिस उपाधीक्षक यातायात, पुलिस उपाधीक्षक (मुख्यालय), पुलिस उपाधीक्षक साइबर थाना एवं सभी थानाध्यक्ष को उत्कृष्ट कार्य के लिए प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया।

मौके पर सभी पुलिस निरीक्षक,पटखौली थानाध्यक्ष अनिष कुमार,बगहा थानाध्यक्ष अनिल कुमार,भैरोगंज थानाध्यक्ष भरत कुमार,लौकरिया थानाध्यक्ष,नौरंगिया थानाध्यक्ष,वाल्मीकिनगर थानाध्यक्ष,रामनगर थानाध्यक्ष,चौतरवा थानाध्यक्ष,धनहा थानाध्यक्ष सहित सभी थानाध्यक्ष,पुलिस पदाधिकारी मौजूद थे।

जिला अधिकारी के निर्देश पर अवैध बालू खनन के खिलाफ चलाया गया छापेमारी अभियान

प्रात : किरण ब्यूरो

मुंगेर। जिलाधिकारी अवनीश कुमार सिंह के आदेश पर जिला प्रशासन के नेतृत्व में रविवार को अवैध बालू उत्खनन के खिलाफ सघन छापेमारी अभियान चलाया गया। इस दौरान जहां 30 बड़े वाहनों को जब्त किया गया वहीं लगभग 40 लाख से अधिक के चालान काटे गए। इस अवसर पर जिलाधिकारी स्वयं उपस्थित रह कर सभी वाहनों के कागजातों की जांच कर कार्रवाई की। छापेमारी में विशेष कार्य पदाधिकारी अभिषेक कुमार, एसडीपीओ सदर राजेश कुमार, एसडीपीओ तारापुर सहित खनन एवं परिवहन विभाग की टीम मौजूद थी।

जिलाधिकारी ने कहा कि जिला प्रशासन अवैध बालू खनन पर लगाम लगाने के लिए कृत संकल्पित है। आज उसी के तहत मिली सूचना के आधार पर औचक छापेमारी अभियान चलाया गया है जिसमें कई ऐसे वाहनों को भी जब्त किया गया है जिसमें गलत नंबर का प्रयोग कर खनन किया जा रहा था, वहीं लगभग 30 बड़े वाहनों को छापेमारी के दौरान जब्त कर 40 लाख रुपए के चालान काटे गए हैं। समाचार प्रेषण तक छापेमारी जारी थी। उन्होंने कहा कि जिले में अवैध बालू खनन के खिलाफ लगातार सूचना मिल रही थी, जिसके आधार पर आज ये कार्रवाई की गई है। उन्होंने कहा कि इसके पूर्व भी अवैध बालू खनन के खिलाफ कार्रवाई करते हुए कई वाहनों से जुमार्ना वसूला गया था। गलत नंबर प्लेट प्रयोग करने वाले वाहन चालकों एवं उनके ऑनर को चिन्हित करते हुए उनके विरुद्ध प्राथमिकी दर्ज की गई है। जिलाधिकारी ने कहा कि जिला प्रशासन द्वारा अवैध बालू खनन को रोकने के लिए लगातार छापेमारी अभियान चलाया जाएगा।

बकरीद को लेकर ओपी में आयोजित हुई शांति समिति की बैठक

प्रात : किरण संवाददाता

घैलाढ़ (मधेपुरा)। घैलाढ़ ओपी परिसर में बकरीद पर्व को लेकर रविवार को शांति समिति की बैठक आयोजित की गई। बैठक में प्रखंड क्षेत्र के जनप्रतिनिधि व गणमान्य लोग शामिल हुए। ओपी अध्यक्ष अवधेश प्रसाद के अध्यक्षता में बैठक की गई। इस दौरान ओपी अध्यक्ष अवधेश प्रसाद ने जनप्रतिनिधि एवं गणमान्य लोगों से बकरीद पर्व को शांतिपूर्ण और भाईचारे के माहौल में मनाने की अपील की। इस दौरान ओपी अध्यक्ष ने कहा कि थाना क्षेत्र के सभी संवेदनशील जगहों पर बकरीद पर्व को लेकर मजिस्ट्रेट के नेतृत्व में पुलिस बल तैनात की जाएगी। पूरे क्षेत्र में पुलिस गश्ती भी जारी रहेगी। असामाजिक तत्वों पर विशेष नजर रखी जायेगी। ऐसे में कहीं भी कोई अफवाह फैले तो इसकी तुरंत सूचना प्रशासन को दें।मौके पर मुखिया राहुल कुमार, पंचायत समिति सदस्य वीरेंद्र कुमार, सरपंच नरेश यादव, सचिंदर यादव, पैक्स अध्यक्ष राजू सिंह, राजेश कुमार आदि कई लोग उपस्थित थे।

खनन विभाग द्वारा चिरांद के ट्रक चालक की पिटाई से मौत, सड़क जाम

प्रात : किरण संवाददाता,

डोरीगंज। भोजपुर जिले के कोईलवर थाना क्षेत्र मे खनन विभाग द्वारा एक ट्रक चालक की पिटाई किए जाने से पटना पीएमसीएच मे इलाज के क्रम मे मौत हो गई।

मृतक की पहचान डोरीगंज थाना क्षेत्र के लोदीपुर चिरांद गाँव निवासी कुलराज राय के 24 वर्षीय पुत्र हरिदर्शन राय के रुप मे हुई है।

इस संबंध मे मृतक हरिदर्शन राय के छोटे भाई 20 वर्षीय रामदर्शन कुमार ने पीएमसीएच पटना मे अपने फर्द ब्यान मे बताया कि मै अपने भाई हरिदर्शन कुमार के साथ अपना ट्रक लेकर भोजपुर जिले के कोईलवर बालु घाट से बालु लादकर सिवान जा रहा था तभी रात्रि दो बजे कोईलवर थाना क्षेत्र के भुलखु नगर सड़क पर पहुँचा को वहाँ खनन विभाग के पदाधिकारी ट्रक ओवर लोड की जाँच कर रहे थे। ट्रक एवं बालु चालान की जाँच के बाद वे लोग जाने को बोल दिए उसके बाद कुछ दुर आगे जाने के बाद एक जगह और बोलेरो संख्या इफ्ड3ढइ-1029से खनन विभाग के पदाधिकारी द्वारा जाँच कि जा रही थी । बोलेरो के चालक द्वारा दो लाख रुपए की माँग की गयी और पैसा नही देने पर गाड़ी नही जाने देने की बात कही गयी जिस बात को लेकर मेरे भाई से तु तु मै मै होने लगी तभी खनन विभाग के गार्ड द्वारा मेरे भाई को राईफल के बट ले मार जाने लगा जिससे मेरे भाई का नाक का नस फट गया और रक्त स्त्राव ज्यादा होने लगा लहुलुहान होकर बेहोश हो गया । उसके बाद वे लोग वहाँ से चले गए ।

जिसके बाद मैने इसकी सुचना अपने परिजनों को दी (सुचना पर पहुँचे अपने परिजनों के सहयोग से इलाज के लिए पीएमसीएच पटना ले जाया गया जहाँ जाँचोपरांत डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया ।

संध्या पाँच बजे के करीब शव घर पहुँचने पर आक्रोशित स्थानीय लोगों ने झंगा चौक के पास मुख्य पथ को जाम कर दिया है । आक्रोशित लोग मौके पर भोजपुर एस पी एवं डीएम को बुलाने की माँग कर रहे है साथ ही दोषी लोगों के खिलाफ प्राथप्राथमिकी दर्ज कर कार्यवाई करने एवं उचित मुआवजे की माँग पर अड़े हुए है । स्थानीय थानाध्यक्ष एवं सदर बीडीओ बिनोद आनंद द्वारा समझाने का प्रयास किया जा रहा है पर लोग मानने को तैयार नही है । मृतक तीन भाईयों मे सबसे बड़ा था उसके दो छोटे छोटे बच्चे है । मृतक के पिता कुलराज राय ने बताया मेरे तीन पुत्रों मे सबसे बड़ा लड़का तथा एकमात्र कमाऊ पुत्र था जिससे परिवार चलता था अभी 20-21 दिन पहले ही फाइनेंस द्वारा ट्रक लिया था और अपने चलाता था।

वहीं स्थानीय लोग पुलिस प्रशासन खनन की कार्यशैली पर सवाल उठा रहे थे लोगों ने कहा पुलिस प्रशासन सड़को पर ट्रक चालकों के साथ आए दिन ज्यादती कर रही है और पदाधीकारी मौन हैं।

चिरांद में गंगा महाआरती की तैयारियां अंतिम चरण में

डोरीगंज। ज्येष्ठ पूर्णिमा के दिन शनिवार को चिरांद विकास परिषद व गंगासमग्र द्वारा गंगा, सरयू और सोन नदियों के संगम तीर्थ चिरांद में होने वाली वार्षिक गंगा महाआरती की तैयारियां पूरी कर ली गई है। गंगा महाआरती के साथ शुरू होने वाले गंगा गरिमा रक्षा संकल्प व चिरांद चेतना महोत्सव में कई संत महात्मा भी भाग लेंगे। जिनमे लक्ष्मण किलाधीश व अयोध्या मंदिर के महंथ मैथिलीरमण शरण जी महाराज,हनुमत निवास पीठाधीश्वर मिथिलेश नंनदनी जी महाराज,श्री श्री 1008 कृष्ण गिरी नागा बाबा, सहित वाराणसी ,मथुरा वृन्दावन,चित्रकूट आदि के संत महात्मा शामिल होंगे। इस संबंध मे परिषद के सचिव श्रीराम तिवारी ने बताया कि कार्यक्रम मे अतिथियों,विशिष्ट अतिथियों को निमंत्रण दिया जा रहा है।

हीरो राजन कुमार द्वारा लिखित चार्ली की पांच कविताएं का अंग नाट्य मंच के द्वारा लोकार्पण

प्रात : किरण ब्यूरो

मुंगेर । चार्ली चैपलिन द्वितीय के रूप में विश्व भर में चर्चित रहे और गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड होल्डर हीरो राजन कुमार मल्टी टैलेंटेड पर्सनालिटी हैं। वह एक शानदार अदाकार, बेहतरीन कॉमेडियन, एनर्जी से भरपूर एंकर, फिल्म निमार्ता, समाजसेवी होने के साथ साथ अच्छे लेखक और कवि भी हैं।

ताजा कृति "चार्ली की पांच कविताएं (कविता संग्रह) बहुत ही महत्वपूर्ण सीरीज है जो एक अंतरराष्ट्रीय कलाकार हीरो राजन कुमार ने अपने अनुभवों से लिखी हैं। इसमें अभिनेता वाली कविता हाल ही में भूटान यात्रा के दौरान लिखी गई है। सबसे बड़ी बात यह है कि अंग नाट्य मंच ट्रस्ट के द्वारा इसके लोकार्पण का कार्यक्रम आज 9 जून को मुंगेर के बरियारपुर में रखा गया। यह बहुत पुरानी संस्था है जिसके संस्थापक अभय जी और संजय जी हैं। इसका 25 वां साल पूरा हुआ है। जल्द ही इसका सिल्वर जुबली होना है जिसमे देश भर के रंगकर्मी, कलाकार इकट्ठे होंगे।ऐसे में चार्ली की पांच कविताओं का लोकार्पण अंग नाट्य मंच के बैनर तले बहुत कुछ कहता है। बता दें कि चार्ली चैपलिन भी अपने 25 वें वर्ष में हैं। वह पिछले 25 साल से लगातार दुनिया को हंसाते आ रहे हैं।

इन कविताओं में खास बात यह है कि इनमें जीवन जीने की कला प्रस्तुत की गई है। और एक कलाकार, एक लेखक यही तो करता है लोगों को प्रोत्साहित, प्रेरित करता है ताकि लोग सुचारू रूप से अपना जीवन यापन कर सकें। यह राजन कुमार द्वारा कलमबद्ध बहुत सुलझी हुई कविताएं हैं जिनमे जिंदगी के तमाम रंग हैं। जिसे पढ़ कर लोग भावविभोर होंगें।

बलवंत जी के शब्दो में "राजन कुमार तमाम ललित कलाओं में निपुण कलाकार हैं। मैं चाहता हूं कि उनकी लिखी और भी कविताएं, पुस्तकें पाठकों तक पहुंचे।" हीरो राजन कुमार की फिल्म नमस्ते बिहार की ऑनलाइन रिलीज को भी अद्भुत रेस्पोंस मिल रहा है। शहर मसीहा नहीं के हीरो राजन कुमार उत्साहित हैं। उनका कहना है कि वह अपनी तमाम व्यस्तता के बावजूद कविता लेखन जारी रखते हैं। सिनेमा से मुझे जितना प्रेम है साहित्य से भी उतना ही गहरा लगाव है। एक कविता को जन्म देने से जो प्रसन्नता और रचनात्मक संतुष्टि मिलती है वह अद्वितीय होती है।"

आमने-सामने की टक्कर में बाइक सवार गंभीर रूप से जख्मी

मधेपुरा। मधेपुरा में एक बार फिर तेज रफ्तार का कहर देखने को मिला है। दरअसल जिला मुख्यालय के बस स्टैंड के समीप दो बाईक की आमने-सामने की टक्कर में दोनों ही बाइक पर सवार युवक गंभीर रूप से जख्मी हो गए, जिनका इलाज फिलहाल जननायक कपूर्री ठाकुर मेडिकल कॉलेज अस्पताल मधेपुरा में जारी है। घटना के बारे में मिली जानकारी के अनुसार मधेपुरा नगर परिषद क्षेत्र के नवटोलिया वार्ड नं. 1 निवासी स्व. बमबम यादव के पुत्र सिंकु यादव बाइक से बस स्टैंड की तरफ जा रहे थे वहीं सदर प्रखंड के तुलसीबारी, गोसाई टोला, वार्ड नं. 4 निवासी मो. हिदायत अली के पुत्र मो. एजाज बाइक से कॉलेज चौक की तरफ जा रहे थे। इसी दौरान यादव लाइन होटल के सामने दोनों ही बाइक की आमने-सामने की टक्कर हो गई जिसमें दोनों गंभीर रूप से जख्मी हो गए।

बरियारपुर फ्रेंड्स क्लब के साथ विकेट के अंतर से हराकर केसीसी टीम ने जीता फाइनल कप

प्रात : किरण संवाददाता

मुंगेर । आजाद सपोर्टिंग क्रिकेट क्लब गांधी पुर की ओर से एकदिवसीय शॉर्ट बाउंड्री नाइट क्रिकेट टूनार्मेंट का आयोजन किया गया। जिसका उद्घाटन बरियारपुर दक्षिणी पंचायत के मुखिया पति सह लोजपा नेता विनय कुमार गुड्डू के द्वारा किया गया। इस दौरान विशिष्ट अतिथि के रूप में मनोहर दास, अशोक शर्मा उपस्थित थे। मुख्य अतिथि श्री गुड्डू ने कहा कि इस तरह के खेल के आयोजन से युवाओं के प्रतिभा में निखार होता है। छोटे से मैदान में भी इस तरह का आयोजन शॉर्ट वनडे नाइट टूनार्मेंट की तरह किया जा सकता है यह युवाओं की अच्छी सोच का नतीजा है। आयोजन समिति के सदस्य धनंजय कुमार ने बताया कि शॉर्ट बाउंड्री नाइट टूनार्मेंट का आयोजन पहली बार गांधी पुर में आयोजित किया गया। जिसमें कूल 16 टीमों ने भाग लिया। टूनार्मेंट के सभी मैच पांच ओवर के खेले गए। जबकि फाइनल मैच 8 ओवर का खेला गया। पहला सेमीफाइनल पी इलेवन बरियारपुर बस्ती बनाम केसीसी बलराम अस्पताल टोला के बीच खेला गया।

जिसमें केसीसी बलराम ने पी इलेवन को 7 विकेट से हराकर फाइनल में अपनी जगह बनाई। जबकि दूसरा सेमीफाइनल मैच सौरभ इलेवन बस्ती बनाम फ्रेंड्स क्लब हरिजन कल्याण टोला के बीच खेला गया। जिसमें फ्रेंड्स क्लब हरिजन कल्याण टोला ने सौरभ इलेवन को 6 विकेट से हराकर फाइनल में अपनी जगह बनाई। फाइनल मैच केसीसी बलराम बना फ्रेंड्स क्लब हरिजन कल्याण टोला के बीच खेला गया। जिसमें फ्रेंड्स क्लब हरिजन कल्याण टोला ने पहले बल्लेबाजी करते हुए निर्धारित आठ ओवर में तीन विकेट गंवाकर 82 रन की पारी खेली। जिसके जवाब में उतरी केसीसी बलराम की टीम मात्र 7 ओवर में ही तीन विकेट गंवाकर 83 रन बनाकर टूनार्मेंट को अपने नाम किया। केसीसी बलराम टीम की ओर से दीपक कुमार को मैन ऑफ द सीरीज दिया गया। टूनार्मेंट में अंपायर के रूप में साहिल कुमार एवं राकेश कुमार थे। स्कोर में सुमित कुमार जबकि कमेंटेटर में चंदन कुमार मौजूद थे। शॉर्ट बॉडी नाइट टूनार्मेंट का देर रात्रि तक बड़ी संख्या में दर्शक मौजूद होकर आनंद उठाया। आयोजन समिति के सदस्य धनंजय कुमार, विनीत कुमार, आजाद कुमार, सत्यम कुमार, साकेत कुमार उपस्थित थे।

बहादुरपुर पंचायत सरकार भवन पर किया गया विधिक जागरूकता शिविर

प्रात : किरण

दरभंगा। जिला एवं सत्र न्यायाधीश सह अध्यक्ष जिला विधिक सेवा प्राधिकार विनोद कुमार तिवारी के निर्देश पर एवं सचिव जिला विधिक सेवा प्राधिकार रंजन देव के मार्गदर्शन में विधिक जागरूकता शिविर का आयोजन बहादुरपुर पंचायत सरकार भवन पर किया गया।

शिविर का संचालन करते हुए अधिवक्ता रामकुमार झा ने कहा कि आज कल विवादों के निपटारे के लिए न्यायालय के इतर वैकल्पिक विवाद निपटारा के माध्यमों को अधिक पसंद किया जा रहा है। लोग लम्बी व जटिल न्यायिक प्रक्रिया के जगह लोक अदालत व मध्यस्थता के जरिए अपने मुकदमों को सुलह समझौता के आधार पर निपटाना चाहते हैं। इससे लोगों को समय और धन की बचत होती है तथा पक्षकारों के आपसी संबंध भी अच्छे होते हैं।

उन्होंने सुप्रीम कोर्ट में दिनांक 29 जुलाई से 03 अगस्त 2024 तक आयोजित होनेवाले विशेष लोक अदालत एवं व्यवहार न्यायालय दरभंगा में दिनांक 13 जुलाई को आयोजित होने वाले राष्ट्रीय लोक अदालत के बारे में भी बताया। मौके पर पीएलवी त्रिपुरारी झा सहित कई गणमान्य उपस्थित थे।

छात्र राजद के जिला प्रभारी को 6 वर्षों के लिए पार्टी से निकाला, अनुशासनहीनता का आरोप

प्रात : किरण संवाददाता, मधेपुरा

राष्ट्रीय जनता दल ने मधेपुरा के छात्र राजद प्रभारी अरुण कुमार को अनुशासनहीनता के आरोप में पार्टी के पद एवं प्राथमिक सदस्यता से 6 वर्षो के लिए निष्कासित कर दिया है। इसे लेकर प्रदेश अध्यक्ष जगदानंद सिंह ने शुक्रवार को पत्र जारी किया है। जारी पत्र में कहा गया है कि छात्र राजद के जिला प्रभारी अरुण कुमार द्वारा सोशल मीडिया के माध्यम से अमर्यादित तथ्यों का प्रयोग कर पार्टी एवं नेता के छवि को धूमिल करने का कार्य किया गया है। दलीय अनुशासन के विपरीत कार्य करने के कारण उन्हें पार्टी के पद एवं प्राथमिक सदस्यता से 6 वर्षो के लिए निष्कासित किया गया है। इसकी प्रतिलिपि राजद जिला अध्यक्ष और छात्र राजद के प्रदेश अध्यक्ष को भेजा गया है। पार्टी से निष्कासित होने पर अरुण ने कहा कि उनकी बढ़ती लोकप्रियता और बढ़ते कद को देखते हुए कुछ कुतार्धारी नेता को घबराहट थी। साजिश और षड्यंत्र करके प्रदेश नेतृत्व को गुमराह कर उन लोगों ने मुझे पार्टी से निष्कासित करवाया है। उन्होंने कहा कि वह पार्टी के लिए हमेशा समर्पित कार्यकर्ता के रूप में काम किए हैं।

जेईई एडवांस 2024 कि परीक्षा में उत्कृष्ट प्रदर्शन किया : सुमीत

हाजीपुर। "सामर्थ्य क्लासेज" हाजीपुर के छात्रों ने जेईई० एडवांस 2024 कि परीक्षा में उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए एक बार पुनः शिक्षा जगत के पटल पर सूबे का नाम रौशन किया है। इस वर्ष सामर्थ्य क्लासेज के कुल बारह छात्रों ने जेईई० मेंस 2024 तथा एक छात्र ने जेईई० एडवांस 2024 की परीक्षा में उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए आईआईटी० कॉलेज में अध्ययन के सपने को साकार किया इस वर्ष सामर्थ्य क्लासेज से उत्तीर्ण छात्र दीवाकर कुमार सिंह ञ्रील्ल एध्२ (2910) अपने कोटि में रैंक लाकर जेईई० एडवांस 2024 में सफलता प्राप्त की। इस्से पहले मेंस 2024 मे 99.3 परसेंटाइल लाकर 1773 रैंक लाया था । सामर्थ्य प्रमुख सुमित सिंह ने सफल छात्र को अशेष शुभकामनाएं दीं। सफल छात्र ने सफलता के लिए अपने शिक्षकों एवं अभिभावक गण का धन्यवाद करते हुए अन्य जूनियर छात्रों को अधिक परिश्रम एवं परीक्षा में मानसिक शांति बनाएं रखने की सीख दी।

उत्तर भारत एवं रामलला दर्शन सहित विभिन्न पर्यटन और धार्मिक स्थलों के लिए भारत गौरव ट्रेन का बुकिंग शुरू

प्रात : किरण संवाददाता, मधेपुरा

आईआरसीटीसी ने उत्तर भारत एवं रामलला दर्शन सहित विभिन्न पर्यटन और धार्मिक स्थलों के लिए भारत गौरव ट्रेन का यात्रा पैकेज जारी किया है। यह ट्रेन न्यू जलपाईगुड़ी से 24 जून को खुलेगी एवं 2 जुलाई को वापस लौटेगी। आईआरसीटीसी की ओर से चलाई जा रही इस ट्रेन में 24 जून को न्यू जलपाईगुड़ी- किशनगंज-मालदा टाउन-बरहरवा-साहिबगंज-कहलगांव-भागलपुर- जमालपुर-किऊल-पटना स्टेशन पर तीर्थ यात्रियों को ट्रेन में सवार होने के लिए रुकेगी। यात्रा पैकेज के तहत बुकिंग करा कर श्रद्धालु उत्तर भारत एवं अयोध्या के रामलला के दर्शन के अलावे माता वैष्णो देवी, हरिद्वार, ऋषिकेश, मथुरा, वृंदावन एवं अयोध्या में श्री राम लला के दर्शन कर सकेंगे। इकोनॉमी श्रेणी में यात्रा के लिए प्रति यात्री 17 हजार 9 सौ रुपए किराया लगेगा। वहीं गर्मी को देखते हुए कंफर्ट कैटेगरी के पैकेज के तहत 29 हजार 5 सौ रुपए प्रति व्यक्ति किराया लगेगा। इस ट्रेन में शाकाहारी भोजन, एसी और नॉन एसी होटल एवं बस की सुविधा दी जाएगी।

अलीगंज में अग्निपीड़ित परिजनो के लिए आर्थिक मदद के लिए प्रतिनिधि एवं समाजसेवी ने की बैठक

जमुई/ई०अलीगंजः- अलीगंज बाजार स्थित अर्पित साड़ी शो रूम में गुरुवार की रात्रि में अचानक भीषण आग लगने से दो मंजिला मकान सहित श्रृंगार दुकान एवं कपड़ा शोरूम का कीमती कपड़ा,घर में रखे सारा समान,कीमती फर्नीचर, बर्तन पहनने वाला कपड़ा,गहना,नगदी रुपया,अनाज सहित कई कीमती सामान जलकर राख हो गया था। इस अनहोनी घटना में पूरा परिवार सदमे में गुजर रहा था। पूरा बाजार के दुकानदार स्तब्ध है ।इस घटना में लाखो की संपत्ति जलकर राख हो गया है। इसी को लेकर स्थानीय मुखिया प्रतिनिधि,सरपंच प्रतिनिधि एवं समाज सेवी सहित हितैषी ने अलीगंज बाजार के श्रवण मेहता के आवास पर एक बैठक आयोजित की। जिसमें उपस्थित अलीगंज मुखिया प्रतिनिधि वाईपी सुमन,सरपंच प्रतिनिधि दिनेश कुमार,श्रवण मेहता,सतेंद्र महतो,दिलीप महतो, सहित दर्जनों लोग उपस्थित होकर पीड़ित परिजनो के सहायता के लिए चर्चा की गई। वहीं उपस्थित लोगों की मौजूदगी में सभी लोग अपने इच्छा अनुसार बीस हजार चंदा इक्ट्ठा किया। वहीं बीते शुक्रवार को भी पीड़ित परिवार के संकट की स्थिति को देखते लोगों ने अलीगंज बाजार के सभी दुकानदार भाइयों से एक लाख तेईश हजार चंदा इक्ट्ठा कर पीड़ित परिजनो को सौंपा था ।कुल मिलाकर लगभग एक लाख पैतालीस हजार रुपया पीड़ित परिजनो को सौंपा गया।,कुछ लोगों के द्वारा अनाज भी दिया गया,इस बुरे स्थिति में सभी को आगे आकर पीड़ित को मदद करनी चाहिए ।अनहोनी किसी के साथ भी हो सकती है ।वहीं बैठक में उपस्थित लोगों ने कहा की पीड़ित परिजनो के सहायता मिल सके। इसके लिए पीड़ित के द्वारा अंचलाधिकारी एवं थाने सहित जिलाधिकारी को भी अवगत कराया गया ।वहीं उपस्थित सभी लोगों ने कहा की हमलोग से जहां तक हो सकेगा आर्थिक मदद किया जायेगा। साथ ही जमुई जिलाधिकारी से मिलकर बात को रखेंगे और पीड़ित परिवार को लाभ दिलाने की बातें कहीं जायेगी।

जहानाबाद सांसद सुरेंद्र यादव की जीत पर राजद नेता ने दिया बधाई

अरवल। जहानाबाद संसदीय क्षेत्र से महागठबंधन के प्रत्याशी सुरेंद्र यादव की जीत पर राजद नेताओं ने बधाई दिया है. बधाई देने वालों में राजद के वरिष्ठ छात्र नेता रवि रंजन कुमार समेत दर्जनों नेताओं ने जीत पर हर्ष व्यक्त करते हुए कहा कि सांसद के नेतृत्व में इस क्षेत्र का चहुंमुखी विकास होगा. अपने पूर्व के कार्यकाल में करपी-तेरा पथ समेत अन्य कई पथों का निर्माण कार्य कराया गया था. उनके सांसद बनने से लोगों में या उम्मीद जगी है कि हमीद नगर पुनपुन परियोजना एवं अरवल में रेलवे लाइन समेत कई अन्य लंबित पड़े कार्यो को उनके द्वारा पूरा करवाया जाएगा. इस चुनाव में क्षेत्र के लोगों ने जाति एवं धर्म से उठकर इन्हें अपना बहुमूल्य मत देकर सांसद बनाया है. इनकी जीत से क्षेत्र के लोगों में भी हर्ष व्याप्त है. राजद नेताओं ने कहा कि क्षेत्र की समस्याओं को दूर करवाने में सांसद के साथ मिलकर हम लोग सक्रिय रूप से भूमिका का निर्वहन करेंगे।

प्रधानमंत्री पद का तीसरी बार नरेंद्र मोदी ने ली शपथ

प्रात : किरण संवाददाता,

शेरघाटी। देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र दमोदर दास मोदी के तीसरी बार शपथ ग्रहण समारोह होते ही शेरघाटी के कार्यकताओं एवं शहर वासियों ने बम पटाके छोड़कर खुशियां मनाई वही अप दौरान भाजपा कार्यकताओं एवं एनडीए कार्यकताओं ने भी खुशी के माहौल में एक दूसरे को मिठाई खिलाकर देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी व एनडीए को बधाई दिया। साथ ही देश के प्रचंड बहुमत के सरकार बनते ही लोगों में खुशी का माहौल पूर्व से ही था इसके बाद तीसरी बार प्रधानमंत्री बनते ही शहरवासी बम पटाखे फोड़ते हुए एक दूसरे को मिठाई खिलाकर बधाई दिया। उक्त दौरान भाजपा कार्यकताओं में अरुण चंद्रवंशी, सुशील गुप्ता, पशुपतिनाथ पाठक, दीनानाथ पांडे समेत कई लोगों ने एक दूसरे को बधाई देते हुए नजर आए।

आज बांग्लादेश के खिलाफ विजय अभियान जारी रखने उतरेगा दक्षिण अफ्रीका

न्यूयॉर्क (एजेंसी)। अपने पहले दो मैच में जीत दर्ज करके ग्रुप डी में शीर्ष पर काबिज दक्षिण अफ्रीका को अगर टी20 विश्व कप में अपना विजय अभियान जारी रखना है तो बांग्लादेश के खिलाफ सोमवार को यहां होने वाले मैच में उसके बल्लेबाजों को अच्छा प्रदर्शन करना होगा। दोनों टीम के लिए नासाउ काउंटी इंटरनेशनल क्रिकेट स्टेडियम की अप्रत्याशित व्यवहार कर रही पिच से सामंजस्य से बिठाना आसान नहीं होगा।

दक्षिण अफ्रीका ने हालांकि अपने पहले दो मैच इसी मैदान पर खेले हैं इसलिए वह थोड़ा फायदे में रहेगा। बांग्लादेश ने भी भारत के खिलाफ यहां अभ्यास मैच खेला था। दक्षिण अफ्रीका ने भले ही नीदरलैंड और श्रीलंका पर जीत दर्ज की है लेकिन उसके बल्लेबाज इन दोनों मैच में छोटे लक्ष्य का पीछा करते हुए संघर्ष करते हुए नजर आए। दक्षिण अफ्रीका के गेंदबाजों ने हालांकि अभी तक अच्छा प्रदर्शन किया है और इसलिए उसके गेंदबाजी आक्रमण

में बदलाव की संभावना नहीं है जिसमें एनरिक नोर्किया, कैगिसो रबाडा, मार्को यानसन और ओटनील बार्टमेन जैसे तेज गेंदबाज और केशव महाराज जैसा अनुभवी स्पिनर शामिल है। दक्षिण अफ्रीका की चिंता हालांकि शीर्ष क्रम के बल्लेबाजों का लचर प्रदर्शन होगा। नीदरलैंड के खिलाफ उसकी टीम पहले 10 ओवर में केवल 33 रन बना पाई थी। अगर ट्रिस्टन स्टब्स और डेविड मिलर ने मोर्चा नहीं संभाल होता तो उसकी टीम को हार का सामना करना पड़ सकता था। दक्षिण अफ्रीका के अभी दो मैच में चार अंक हैं और बांग्लादेश के खिलाफ जीत से सुपर 8 में जगह बनाने के लिए उसकी स्थिति मजबूत हो जाएगी।

रिकॉर्ड भी दक्षिण अफ्रीका के पक्ष में है। उसने अभी तक टी20 अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में बांग्लादेश से कोई मैच नहीं गंवाया है। बांग्लादेश ने श्रीलंका को हराकर अपने अभियान की शुरुआत की थी जिससे उसका मनोबल बढ़ा होगा, लेकिन दक्षिण अफ्रीका की तरह उसके बल्लेबाजों को भी अच्छा प्रदर्शन करना होगा। भारत के खिलाफ अभ्यास मैच और श्रीलंका के खिलाफ ग्रुप चरण के मैच में उसके बल्लेबाज संघर्ष करते हुए नजर आए थे। बांग्लादेश के मुख्य बल्लेबाजों में केवल लिटन दास ही कुछ रन बना पाए थे। बांग्लादेश को अगर दक्षिण अफ्रीका पर टी20 में अपनी पहली जीत दर्ज करनी है तो उसके बाकी बल्लेबाजों को भी अच्छा प्रदर्शन करना होगा। ऑलराउंडर शाकिब अल हसन भी अभी तक बल्ले और गेंद दोनों से प्रभाव नहीं छोड़ पाए हैं जो बांग्लादेश के लिए चिंता का विषय होगा।

टीम इस प्रकार हैं

दक्षिण अफ्रीका – एडेन मार्कराम (कप्तान), ओटनील बार्टमैन, गेराल्ड कोएट्जी, क्विंटन डी कॉक, ब्योर्न फोर्टुइन, रीजा हेंड्रिक्स, मार्को यानसन, हेनरिक क्लासेन, केशव महाराज, डेविड मिलर, एनरिक नोर्किया, कैगिसो रबाडा, रयान रिकेल्टन, तबरेज शम्सी, ट्रिस्टन स्टब्स।

बांग्लादेश – नजमुल हुसैन शंटो (कप्तान), तस्कीन अहमद, लिटन दास, सौम्या सरकार, तंजीद हसन तमीम, शाकिब अल हसन, तौहीद हृदय, महमूद उल्लाह रियाद, जैकर अली अनिक, तनवीर इस्लाम, शाक महेदी हसन, रिशाद हुसैन, मुस्तफिजुर रहमान, शोरीफुल इस्लाम, तंजीम हसन साकिब। यात्रा करने वाले रिजर्व- अफीफ हुसैन, हसन महमूद।

समय –भारतीय समयानुसार रात 8 बजे।

रोहित शर्मा ने पाकिस्तानी फैन को लगाया गले!

न्यूयार्क (एजेंसी)। भारत और पाकिस्तान के बीच आईसीसी टी20 विश्व कप के तहत महा मुकाबला न्यूयॉर्क के नासाउ काउंटी इंटरनेशनल क्रिकेट स्टेडियम में आज रात 8 बजे खेला जाएगा। इससे पहले भारतीय कप्तान रोहित शर्मा का एक वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है जिसमें वह एक पाकिस्तानी फैन को फैंसिंग के बीच में से गले लगाते हुए नजर आए। सोशल मीडिया पर वायरल हो रहे वीडियो में मैदान में खड़े रोहित मैदान की बाहर आते हुए फैंस से मिलने पहुंचते हैं जो फैंसिंग के पीछे खड़े उनका इंतजार कर रहे होते हैं। इस दौरान एक पाकिस्तानी फैन फैंसिंग से ही रोहित को गले लगाने के लिए कहता है जिसके बाद रोहित उनकी इच्छा भी पूरी करते हैं। वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है और सवा लाख से ज्यादा लोगों ने इसे देखा है।

आईपीएल से हटने का फैसला सही साबित हुआ, इंग्लैंड को हराने के बाद बोले एडम जम्पा

ब्रिजटाउन (बारबाडोस) (एजेंसी)। ऑस्ट्रेलिया के स्पिनर एडम जंपा ने कहा कि आईपीएल 2024 से हटने का उनका फैसला सही रहा क्योंकि इससे उन्हें टी20 विश्व कप की तैयारी करने में मदद मिली और साथ ही उन्होंने अपने परिवार के साथ अच्छा समय बिताया। जम्पा ने टी20 विश्व कप में ऑस्ट्रेलिया की इंग्लैंड पर 36 रन से जीत में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। जम्पा ने मैच के बाद कहा, 'निश्चित तौर पर विश्व कप को ध्यान में रखते हुए आईपीएल से हटने का मेरा फैसला सही रहा। मैं काफी थका हुआ महसूस कर रहा था तथा मैं पूरी तरह से फिट भी नहीं था। इसके अलावा मैं पारिवारिक व्यक्ति भी हूं और कई बार इन्हें काम से अधिक प्राथमिकता देना महत्वपूर्ण होता है। उन्होंने कहा, 'मैं थोड़ा धीमी शुरुआत करने वाला व्यक्ति हूं और मुझे थोड़ा अधिक कड़ी मेहनत करनी पड़ी। मैं अब पूरी तरह से फिट हूं और मैंने काफी गेंदबाजी की जैसा कि इस तरह के टूर्नामेंट से पहले मैं हमेशा करता रहा हूं। अब सब कुछ मेरे साथ अच्छा हो रहा है।

अर्जेंटीना कोपा अमेरिका का दावेदार है :मेसी

ब्यूनस आयर्स, एजेंसी। अर्जेंटीना के कप्तान लियोनल मेसी ने अमेरिका में होने वाले कोपा अमेरिका कप के लिए अर्जेंटीना को प्रबल दावेदार बताया है। मौजूदा विश्व कप और कोपा अमेरिका चैंपियन अपने खिताब बचाओ अभियान की शुरुआत 20 जून को कनाडा के खिलाफ मैच से करेगा। इसके बाद ग्रुप चरण में उसे चिली और पेरू से खेलना होगा। मेसी ने अर्जेंटीना न्यूज सर्विस इन्फोबे से कहा, मुझे लगता है कि अर्जेंटीना हमेशा दावेदार रहा है। सफलता की मौजूदा अवधि से पहले भी अर्जेंटीना ब्राजील की तरह दावेदार था। यह कोपा अमेरिका भी अपवाद नहीं होगा। 36 वर्षीय इंटर मियामी फॉरवर्ड ने कहा, मुझे लगता है कि सभी दक्षिण अमेरिकी टीमें इस समय काफी ताकतवर हैं। उरुग्वे, कोलंबिया, इक्वाडोर सभी बहुत अच्छी हैं। हर मैच एक कड़ा मुकाबला होगा और यह एक मुश्किल टूर्नामेंट होगा।

पूजा तोमर ने रचा इतिहास, यूएफसी में जीत दर्ज करने वाली पहली भारतीय बनी

केंटकी (एजेंसी)। पूजा तोमर अल्टीमेट फाइटिंग चैंपियनशिप (यूएफसी) में जीत दर्ज करने वाली भारत की पहली मिश्रित मार्शल आर्ट फाइटर बन गई है। पहली बार इस तरह की प्रतियोगिता में भाग ले रही पूजा ने यूएफसी लुइसविले में स्ट्रॉवेट (52 किग्रा) मुकाबले में ब्राजील की रेयान डॉस सैंटोस पर 30-27, 27-30, 29-28 से विभाजित निर्णय से जीत हासिल की।

पूजा ने मुकाबले के बाद कहा, 'यह केवल मेरी जीत नहीं है। यह भारत के सभी प्रशंसकों और भारतीय फाइटर की जीत है। इससे पहले सभी सोचा करते थे कि भारतीय फाइटर चुनौती पेश नहीं कर सकते हैं। मैं केवल जीत के बारे में सोच रही थी और मैंने दिखाया कि भारतीय फाइटर हारने वालों में शामिल नहीं हैं।

'साइक्लोन' के नाम से मशहूर 30 वर्षीय पूजा ने पिछले साल अक्टूबर में यूएफसी के साथ अनुबंध किया था और इस तरह से वह मिश्रित मार्शल आर्ट्स की सबसे बड़ी प्रतियोगिताओं में भाग लेने वाली भारत की पहली महिला बन गईं। अंशुल जुबली और भरत कंडारे ने यूएफसी

में विश्व मंच पर भारत का प्रतिनिधित्व किया है।

उत्तर प्रदेश के मुजफ्फरनगर के बुधाना गांव में जन्मी पूजा पांच बार की राष्ट्रीय वुशु चैंपियन हैं और कराटे और ताइक्वांडो में भी भाग लेती रही है। पूजा ने कहा, 'मुझे जीत की पूरी उम्मीद थी और मैंने काफी आक्रमण किया लेकिन मैं अपना शत प्रतिशत प्रदर्शन नहीं कर पाई। दूसरे राउंड में मैं दबाव महसूस कर रही थी। मुझे अभी काफी सुधार करने की जरूरत है।

ऑस्ट्रेलिया का शानदार प्रदर्शन, इंग्लैंड को 36 रन से हराया

ब्रिजटाउन (बारबाडोस) (एजेंसी)। ऑस्ट्रेलिया ने शीर्ष क्रम के बल्लेबाजों के उपयोगी योगदान और गेंदबाजों के अनुशासित प्रदर्शन के दम पर टी20 विश्व कप में अपने चिर प्रतिद्वंदी इंग्लैंड को 36 रन से हराया। ऑस्ट्रेलिया ने पहले बल्लेबाजी करते हुए सात विकेट पर 201 रन बनाए जो वर्तमान विश्व कप में किसी टीम का अभी तक सर्वोच्च स्कोर है। इंग्लैंड की टीम इसके जवाब में 6 विकेट पर 165 रन ही बना पाई। ऑस्ट्रेलिया की यह लगातार दूसरी जीत है जिससे वह ग्रुप बी में शीर्ष पर पहुंच गया है।

इंग्लैंड को अभी पहली जीत का इंतजार है। उसे अब ओमान और नामीबिया का सामना करना है जबकि स्कॉटलैंड के खिलाफ मैच बारिश की भेंट चढ़ जाने के कारण उसे अंक बांटने पड़े थे। पहले बल्लेबाजी के लिए आमंत्रित किए जाने के बाद डेविड वार्नर (16 गेंद पर दो चौकों और चार छक्कों की मदद से 39 रन) और ट्रेविस हेड (18 गेंद पर 34 रन, दो चौके, तीन छक्के) ने पहले 5 ओवर में 70 रन जोड़कर ऑस्ट्रेलिया को आक्रामक शुरूआत दिलाई। इन दोनों के चार रन के अंदर पवेलियन लौट जाने के बाद कप्तान मिशेल मार्श और ग्लेन मैक्सवेल ने जिम्मेदारी संभाली।

मार्श ने 25 गेंद पर 35 रन बनाए जिसमें दो चौके और इतने ही छक्के शामिल हैं।

मैक्सवेल ने 25 गेंद पर तीन चौकों और एक छक्के की मदद से 28 रन बनाए। इसके बाद मार्कस स्टोइनिस ने 17 गेंद पर 30 और पैट कमिंस ने 10 गेंद पर नाबाद 17 रन बनाकर उपयोगी योगदान दिया। टिम डेविड ने 11 रन की पारी खेली। स्टोइनिस ने अपनी पारी में दो चौके और इतने ही छक्के लगाए। इंग्लैंड की तरफ से क्रिस जॉर्डन सबसे सफल गेंदबाज रहे। उन्होंने 44 रन देकर 2 विकेट हासिल किए।

इसके बाद फिल साल्ट और कप्तान जोस बटलर ने पावर प्ले में 54 रन जोड़े और फिर मिशेल स्टार्क के अगले ओवर में 19 रन बनाकर पहले विकेट के लिए 73 रन की साझेदारी करके इंग्लैंड को अच्छी शुरुआत दिलाई। एडम जंपा (28 रन देकर दो विकेट) ने साल्ट को बोल्ड करके ऑस्ट्रेलिया को मैच में वापसी दिलाई। साल्ट ने 23 गेंद पर 37 रन बनाए, जिसमें चार चौके और दो छक्के शामिल हैं। जंपा ने इसके बाद बटलर को बैकवर्ड प्वाइंट पर कैच कराया जिन्होंने 28 दिन पर पांच चौकों और दो छक्कों की मदद से 42 रन बनाए।

इंग्लैंड का स्कोर 10 ओवर के बाद दो विकेट पर 92 रन था लेकिन इसके बाद ऑस्ट्रेलिया ने कसी गेंदबाजी की और उसका क्षेत्ररक्षण भी शानदार रहा। इंग्लैंड के बाद के बल्लेबाजों में मोईन अली (25), हैरी ब्रूक (नाबाद 20) और लियम लिविंगस्टोन (15) अपेक्षित तेजी से रन नहीं बना पाए। ऑस्ट्रेलिया की तरफ से जंपा के अलावा कमिंस ने चार ओवर में 23 रन देकर दो विकेट लिए। स्टार्क महंगे साबित हुए। उन्होंने तीन ओवर में 37 रन लुटाए।

इगा स्वियातेक ने लगातार तीसरी बार जीता फ्रेंच ओपन

पेरिस (एजेंसी)। विश्व की नंबर एक खिलाड़ी इगा स्वियातेक ने अपना शानदार प्रदर्शन जारी रखते हुए शनिवार को यहां फाइनल में जैस्मीन पाओलिनी को सीधे सेटों में हराकर फ्रेंच ओपन टेनिस टूर्नामेंट में लगातार तीसरी बार महिला एकल का खिताब जीता। पोलैंड की स्वियातेक ने पहली बार किसी ग्रैंड स्लैम टूर्नामेंट के फाइनल में जगह बनाने वाली पाओलिनी को आसानी से 6-2, 6-1 से पराजित किया। स्वियातेक पहले सेट में एक समय 1-2 से पीछे चल रही थी लेकिन इसके बाद उन्होंने लगातार 10 गेम जीते। इससे वह दूसरे सेट में 5-0 से आगे हो गई।

पाओलिनी ने दूसरे सेट के छठे गेम में अपनी सर्विस बचाई लेकिन स्वियातेक ने इसके बाद अपनी सर्विस पर आसानी से मैच अपने नाम किया। शीर्ष वरीयता प्राप्त स्वियातेक ने इस तरह से फ्रेंच ओपन में अपने विजय अभियान को 21 मैच तक पहुंचा दिया है। रोला गैरां में अब उनका रिकॉर्ड 35-2 हो गया है। जस्टिन हेनिन के बाद पोलैंड की 23 वर्षीय स्वियातेक पहली ऐसी खिलाड़ी हैं जिन्होंने फ्रेंच ओपन में लगातार तीन खिताब जीते। हेनिन ने 2005 से 2007 तक यह कारनामा किया था। स्वियातेक ने 2020 में भी फ्रेंच ओपन का खिताब जीता था। इसके अलावा उन्होंने 2022 में अमेरिकी ओपन में भी जीत हासिल की थी।

दक्षिण अफ्रीका को जीत दिलाने के बाद मिलर ने दिया बड़ा बयान

न्यूयॉर्क, एजेंसी। नीदरलैंड ने दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ नौ विकेट पर 103 रन बनाए थे, लेकिन जवाब में दक्षिण अफ्रीका की शुरुआत अच्छी नहीं रही थी और उसने 12 रन पर चार विकेट गंवा दिए थे। नीदरलैंड के खिलाफ दक्षिण अफ्रीका को टी20 विश्व कप मैच में उलटफेर से बचाने वाले डेविड मिलर ने टीम की जीत के बाद बड़ा बयान दिया है। मिलर ने कहा कि भले ही हम जीत दर्ज करने में सफल रहे लेकिन नीदरलैंड ने शानदार गेंदबाजी की। नीदरलैंड ने दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ नौ विकेट पर 103 रन बनाए थे, लेकिन जवाब में दक्षिण अफ्रीका की शुरुआत अच्छी नहीं रही थी और उसने 12 रन पर चार विकेट गंवा दिए थे।

मिलर ने दिलाई जीत

खराब शुरुआत के बाद दक्षिण अफ्रीका को अनुभवी बल्लेबाज डेविड मिलर ने संभाला और 51 गेंद में 59 रन की अहम पारी खेल कर दक्षिण अफ्रीका को चार विकेट से जीत दिलाई। मिलर ने ट्रिस्टन स्टब्स के साथ पांचवें विकेट के लिए 65 रन की साझेदारी कर मैच में टीम की वापसी कराई जिससे टीम ने सात गेंद शेष रहते लक्ष्य हासिल किया। मिलर ने अपनी पारी में तीन चौके और चार छक्के लगाए।

संजीवनी ने पोर्टलैंड में महिलाओं की 10,000 मीटर दौड़ में हासिल किया पहला स्थान

पोर्टलैंड (अमेरिका) (एजेंसी)। एशियाई चैंपियनशिप की कांस्य पदक विजेता धाविका संजीवनी जाधव ने पोर्टलैंड ट्रैक फेस्टिवल हाई परफॉर्मेंस प्रतियोगिता में महिलाओं की 10,000 मीटर दौड़ 32 मिनट 22.77 सेकंड में पूरी करके पहला स्थान हासिल किया।

इस 27 वर्षीय धाविका ने इससे पहले भी पोर्टलैंड में अच्छा प्रदर्शन किया है। वह पिछले साल यहां दूसरे स्थान पर रही थी। इस स्पर्धा में भाग ले रही एक अन्य भारतीय सीमा 32 मिनट 55.91 सेकंड का समय लेकर पांचवें स्थान पर रही। राष्ट्रमंडल और एशियाई खेलों के पदक विजेता अविनाश साबले ने पुरुषों की 3000 मीटर स्टीपलचेज में 8 मिनट 21.85 सेकंड का समय लेकर दूसरा स्थान हासिल किया।

उन्होंने राष्ट्रमंडल खेल 2022 में 8 मिनट 11.20 का समय लेकर राष्ट्रीय रिकॉर्ड बनाते हुए रजत पदक जीता था लेकिन यहां वह इस प्रदर्शन को नहीं दोहरा पाए। महिला वर्ग में पिछले साल एशियाई खेलों में स्वर्ण (5000 मीटर) और रजत (3000 मीटर स्टीपलचेज) जीतने वाली पारुल चौधरी स्टीपलचेज में तीसरे स्थान पर रही।

उन्होंने नौ मिनट 31.38 सेकंड का समय निकाला, जो पिछले साल बुडापेस्ट में बनाए गए उनके नौ मिनट 15.31 के राष्ट्रीय रिकॉर्ड से लगभग 16 सेकंड अधिक था। इस स्पर्धा में भाग ले रही एक अन्य भारतीय प्रीति 10 मिनट 12.88 सेकंड का समय लेकर 20वें स्थान पर रही। कोलराडो में अभ्यास कर रहे भारत के कई एथलीट पोर्टलैंड ट्रैक फेस्टिवल में भाग ले रहे हैं।

युगांडा ने टी-20 वर्ल्डकप के लोवेस्ट स्कोर की बराबरी की

39 रन पर ऑलआउट, वेस्टइंडीज ने 134 से हराया

न्यूयार्क (एजेंसी)। टी-20 वर्ल्ड कप 2024 के 18वें मैच में वेस्टइंडीज ने एकतरफा मुकाबले में युंगाडा को 134 से हरा दिया। गेंदबाज अकील होसेन की शानदार गेंदबाजी के सामने युगांडा के बल्लेबाज टिक नहीं पाए और संयुक्त रूप से सबसे छोटे टीम टोटल 39 रन पर ऑलआउट हो गए। युगांडा के रियाजत अली शाह ने वेस्टइंडीज के टॉप स्कोरर जॉनसन चार्ल्स का कैच छोड़ा। वहीं, ?????? युंगाडा की इनिंग की दूसरी ही बॉल पर रोजर मुकासा डक गए।

रियाजत ने छोड़ा चार्ल्स का कैच – वेस्टइंडीज की इनिंग्स के चौथे ओवर की चौथी गेंद कुवेता ने जॉनसन चार्ल्स को लेग साइड के बाहर फेंकी। चार्ल्स जल्दी पीछे हट गए और उन्होंने मिड ऑफ की दिशा में शॉट मारा। हालांकि, शॉट में ज्यादा ताकत न होने के कारण गेंद पहले ही फ्लाइट नहीं कर पाई। मिडऑफ पर लगे फील्डर रियाजत अली गेंद की ओर दौड़े और कैच करने की कोशिश की। लेकिन, गेंद उनके हाथों के बीच में से निकल गई। चार्ल्स उस समय अपने 22 रन के स्कोर पर थे। कैच छूटने के बाद उन्होंने 44 रन की पारी खेली।

ओबुया ने छलांग लगाकर किया कप्तान पॉवेल को आउट – युगांडा के कप्तान ब्रायन मसाबा ने 16वें ओवर की तीसरी गेंद शॉर्ट फेंकी। वेस्टइंडीज के कप्तान पॉवेल ने एक्ट्रा कवर पर शॉट खेला। हालांकि, बल्ले पर सही से न आने के कारण गेंद ज्यादा ऊंची नहीं गई। फील्डर रॉबिंसन ओबुया ने छलांग लगाई और कैच लपक लिया। रोवमैन पॉवेल 23 रन बनाकर आउट हुए।

कुवेता ने रदरफोर्ड को किया क्लीन बोल्ड – युगांडा के गेंदबाज कुवेता ने 18वें ओवर की तीसरी गेंद शरफेन रदरफोर्ड को यॉर्कर की। रदरफोर्ड सटीक

यॉर्कर को पढ़ नहीं पाए और शॉट खेलने में देरी कर दी। गेंद बल्ले के नीचे से निकलती हुई स्टंप्स में जा घुसी। रदरफोर्ड 22 पर आउट हुए।

मैच में बने रिकॉर्ड्स...

युगांडा ने टी-20 वर्ल्ड कप का सबसे छोटा टोटल बनाया – टी-20 वर्ल्ड कप के इतिहास में युगांडा ने संयुक्त रूप से सबसे छोटा टोटल बनाया है। टीम वेस्टइंडीज के खिलाफ महज 39 रन पर ऑलआउट हो गई। इससे पहले 2014 में नीदरलैंड की टीम ने श्रीलंका के खिलाफ 39 रन बनाए थे। वहीं, 2021 में नीदरलैंड श्रीलंका के खिलाफ ही 44 पर ऑलआउट हो गई थी।

टी-20 वर्ल्ड कप में 5 विकेट लेने वाले पहले विंडीज खिलाड़ी बने अकील – टी-20 वर्ल्ड कप में युगांडा के खिलाफ वेस्टइंडीज के अकील होसेन ने 4 ओवर में 11 रन देकर 5 विकेट लिए। वह वर्ल्ड कप में 5 विकेट लेने वाले पहले कैरिबियन खिलाड़ी बने। वहीं, ओवरऑल टी-20 इंटरनेशनल में अकील टीम के दूसरे सबसे सफल गेंदबाज बने। उनसे पहले ओबेद मेकॉय ने 2022 में भारत के खिलाफ 6 विकेट लिए थे।

वेस्टइंडीज की टी-20 वर्ल्ड कप में सबसे बड़ी जीत – वेस्टइंडीज ने युगांडा को 134 रन से हराया यह उनकी टी-20 वर्ल्ड कप में रनों के अंतर से सबसे बड़ी जीत है। वहीं, टी-20 इतिहास में यह दूसरी सबसे बड़ी जीत रही। इससे पहले श्रीलंका ने केन्या के खिलाफ 2007 वर्ल्ड कप में 172 रन से मैच जीता था।

युगांडा की ओर से सबसे ज्यादा डक होने वाले खिलाड़ी बने मुकासा – सलामी बल्लेबाजी करने आए युगांडा के सलामी बल्लेबाज रोजर मुकासा को इनिंग की दूसरी ही बॉल पर अकील होसेन ने एलबीडब्ल्यू किया। इसके साथ ही वह युगांडा की ओर से सबसे ज्यादा 8 बार डक पर आउट होने वाले खिलाड़ी बन गए हैं।

महाराणा प्रताप ने संघर्ष की प्रेरणा दी, बोले राज्यवर्धन सिंह राठौड़

जयपुर, एजेंसी। राजस्थान के कैबिनेट मंत्री कर्नल राज्यवर्धन सिंह राठौड़ ने कहा कि महाराणा का जीवन, उनका संघर्ष व उनके संकल्प ने पूरे देश को स्वाधीनता और स्वाभिमान के लिए संघर्ष की प्रेरणा दी है।महाराणा प्रताप जयंती पर महाराणा प्रताप समारोह समिति की ओर से आयोजित समारोह में बतौर मुख्य अतिथि राठौड़ ने कहा कि आज का यह अवसर विशिष्ट है। आज हम भारतीय शौर्य और वीरता के पर्याय रहे एक महान नायक को याद कर रहे हैं। महाराणा ने हमारे लोक संस्कार में गौरव के जो बीज डाले, वह आज पूरे देश के लोकमानस में सामाजिक-सांस्कृतिक बोध और संस्कार के रूप में दिखाई देते हैं। ऐसे महान वीरों के प्रति कृतज्ञता का भाव सही मायनों में हमारी ऊर्जा का स्रोत है।

विजयी होने की महान प्रेरणा मिलती है: राठौड़ ने कहा कि ऐसे महावीरों से हमें देश और समाज के लिए संघर्ष करने और विजयी होने की महान प्रेरणा मिलती है। हमें आगे बढ़ने का साहस मिलता है। हमें विपरीत स्थितियों में अपने मूल्य और आदर्श की रक्षा करने की शक्ति मिलती है। हम हर परिस्थिति में निर्भीक बने रहते हैं। राठौड़ ने कहा कि महाराणा की प्रेरक स्मृति और उनकी अदम्य वीरता के वर्णन के साथ जब हम इतिहास की तरफ लौटते हैं तो हम इस बात को समझ पाते हैं कि हमारे नायकों की यशस्विता, उनकी स्मृति कैसे शताब्दियों बाद भी जीवित है।राठौड़ ने कहा कि सैकड़ों वर्षों से महाराणा प्रताप अगर हमारे लिए लगातार श्रद्धेय बने हुए हैं, उनकी वीरता और साहस के प्रति हम सम्मान का भाव रखते हैं तो यह कोई साधारण बात नहीं है।

युवा पीढ़ी को बता रहे असली इतिहास : बनवासा : कार्यक्रम संयोजक प्रेम सिंह बनवासा ने बताया कि 13 वर्षों से महाराणा प्रताप जयंती पर इस समारोह का आयोजन किया जा रहा है। समारोह का उद्देश्य युवा पीढ़ी को महाराणा प्रताप के सिद्धांतों से परिचित कराना है। असली इतिहास बताना है, क्योंकि आजादी के बाद पाठ्यपुस्तकों में महाराणा प्रताप को नहीं, बल्कि अकबर को महान बताया जा रहा है। हमें इस पाठ्यक्रम को भी बदलना है। समारोह को श्री क्षत्रिय युवक संघ के केंद्रीय कार्यकारी गजेंद्र सिंह आऊ, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के पदाधिकारी संजीव

भार्गव, टोंक के पूर्व जिला प्रमुख सत्यनारायण चौधरी, राजपूत सभा के अध्यक्ष राम सिंह चंदलाई ने भी संबोधित किया। राष्ट्रवादी कवि उमेश उत्साई ने काव्य पाठ किया।

महाराणा प्रताप की प्रतिमा पर 484 किलो चूरमे के लड्डू का भोग लगाया: राजस्थान में महाराणा प्रताप की 485वीं जयंती के अवसर पर प्रदेशभर में विशेष आयोजन किए गए। उदयपुर में रविवार सुबह 7.30 बजे महाराणा प्रताप गौरव केंद्र स्थित 57 फीट की प्रतिमा का फायर ब्रिगेड से जलाभिषेक किया गया। महाराणा प्रताप जयंती के अवसर पर प्रदेश के मुख्यमंत्री भजनलाल ने उदयपुर में प्रताप गौरव केंद्र में आयोजित समारोह का उद्घाटन करते हुए कहा कि महाराणा प्रताप के संदेश को पूरी दुनिया तक पहुंचाना हमारा लक्ष्य है और इसके लिए 100 करोड़ रुपयों की लागत से एक टूरिस्ट सर्किट विकसित किया जा रहा है।मुख्यमंत्री ने कहा कि हम महाराणा प्रताप के संदेश को पूरी दुनिया में पहुंचाना चाहते हैं। प्रदेश में जो भी पर्यटक आए, वह अपने साथ महाराणा प्रताप की शौर्य की गाथा साथ लेकर जाए। इसे ध्यान में रखते हुए सरकार महाराणा प्रताप के जीवन से जुड़े विभिन्न स्थलों चावंड-हल्दीघाटी-गोगुंदा-कुंभलगढ़-दिवेर-उदयपुर आदि को सम्मिलित करते हुए महाराणा प्रताप टूरिस्ट सर्किट विकसित करने पर 100 करोड़ रुपये खर्च करेगी।

उल्लेखनीय है कि मेवाड़ के 13वें राजा महाराणा प्रताप की जयंती हर साल बड़ी धूमधाम के साथ मनाई जाती हैं, जो कि आज 9 जून 2024 को मनाई जा रही हैं। साल 1540 में इसी दिन मेवाड़ के महान राजपूत शासक महाराणा प्रताप का जन्म हुआ था, उनके पिता महाराणा उदय सिंह द्वितीय थे, जो मेवाड़ राज्य के शासक थे जिनकी राजधानी चित्तौड़ थी। मुगल शासन के दौरान राजा महाराणा प्रताप को उनके साहस के लिए याद किया जाता है।

संक्षिप्त समाचार

भारत सेवाश्रम के साधु कार्तिक महाराज को केंद्रीय सुरक्षा मिली

कोलकाता, एजेंसी। भारत सेवाश्रम संघ की मुर्शिदाबाद जिले में बेंदांगा इकाई से जुड़े साधु कार्तिक महाराज को अब केंद्र सरकार ने केंद्रीय सुरक्षा कवर दिया है। कार्तिक महाराज पर पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने भाजपा के लिए काम करने का आरोप लगाया था। सीएम ममता बनर्जी ने पिछले महीने एक चुनावी रैली में कार्तिक महाराज पर भाजपा की ओर से काम कर मतदाताओं को पार्टी के पक्ष में वोट देने के लिए प्रभावित करने का आरोप लगाया था। सूत्रों के अनुसार, कार्तिक महाराज की सुरक्षा के लिए केंद्रीय सशस्त्र पुलिस बल (सीएपीएफ) के चार जवानों को तैनात किया गया है। कार्तिक महाराज पर हमले की आशंका के बाद उन्हें केंद्रीय सुरक्षा मुहैया कराने का फैसला लिया गया। पिछले महीने कार्तिक महाराज ने अपने आश्रम पर संभावित हमले के खिलाफ सुरक्षा की मांग करते हुए कलकत्ता हाईकोर्ट का दरवाजा खटखटाया था। उन्होंने जनसभा को संबोधित करने के दौरान मुख्यमंत्री की टिप्पणियों को लेकर उन्हें कानूनी नोटिस भी भेजा था। अदालत में याचिका दायर करने के बाद कार्तिक महाराज ने मीडियाकर्मियों के सामने दावा किया था, उन्हें एक फोन कॉल आया था। फोन करने वाले ने बेलडांगा स्थित भारत सेवाश्रम संघ इकाई को ध्वस्त करने की धमकी दी थी।

मराठा आरक्षण नहीं दिया तो जरांगे ने शुरू किया आमरण अनशन, बढ़ेंगी शिंदे सरकार की मुश्किलें?

मुंबई, एजेंसी। मराठा आरक्षण कार्यकर्ता मनोज जरांगे पाटिल ने आज अपना आमरण अनशन शुरू कर दिया। इसको लेकर उन्होंने इस साल अप्रैल में ही संकेत दिया था। अधिकारियों के अनुसार, पुलिस ने उन्हें अनिश्चितकालीन अनशन की अनुमति नहीं दी है। पाटिल ने कहा कि अगर इस बार मराठा आरक्षण नहीं दिया गया तो वह महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव लड़ेंगे, जो इस साल के अंत में अक्टूबर में होने की उम्मीद है। मनोज जरांगे ने मराठा समुदाय के लोगों के सभी रक्त संबंधियों को कुनबी के रूप में मान्यता देने संबंधी मसौदा अधिसूचना के क्रियान्वयन की मांग को लेकर शनिवार को अनिश्चितकालीन अनशन शुरू किया। जरांगे ने कुनबी को मराठा के रूप में मान्यता देने के लिए कानून बनाने की भी मांग की और चेतावनी दी कि अगर उनकी मांगें स्वीकार नहीं की गईं तो वह आगामी विधानसभा चुनाव में महाराष्ट्र की सभी 288 सीट पर उम्मीदवार उतारेंगे। जरांगे ने महाराष्ट्र के जालना जिले की अंबड़ तहसील में अपने पैतृक गांव अंतरवाली सरती में सुबह करीब 10.30 बजे आंदोलन शुरू किया, जबकि जिला प्रशासन और पुलिस अधिकारियों ने इसके लिए अनुमति देने से इनकार किया था। वह मराठों के लिए अन्य पिछड़ा समुदाय (ओबीसी) का दर्जा और पात्र कुनबी मराठों के रक्त संबंधियों को प्रमाणपत्र जारी करने के लिए राज्य सरकार द्वारा इस साल की शुरुआत में जारी मसौदा अधिसूचना के कार्यान्वयन की मांग कर रहे हैं। कुनबी एक कृषि समूह है जो अन्य पिछड़ा वर्ग (ओबीसी) श्रेणी में आता है। जरांगे मांग कर रहे हैं कि सभी मराठों को कुनबी प्रमाणपत्र जारी किए जाएं ताकि वे आरक्षण के लाभ के लिए पात्र बन सकें। जरांगे ने मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे और उपमुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस से मराठा आरक्षण के मुद्दे पर ध्यान देने का आग्रह किया। मैदान में उतारूंगा। मुख्यमंत्री शिंदे और उपमुख्यमंत्री फडणवीस पर मराठा आरक्षण प्रक्रिया में बाधा डालने का आरोप लगाते हुए जरांगे ने कहा कि फडणवीस ने मराठा समुदाय के खिलाफ साजिश रची।

हरियाणा वालों के लिए खुशखबरी, राज्य में होगी 50 हजार पदों पर भर्ती, सीएम नायब सैनी का ऐलान

चंडीगढ़, एजेंसी। हरियाणा के मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने शनिवार को राज्य के युवाओं के लिए महत्वपूर्ण घोषणा की। उन्होंने कहा कि शीघ्र ही विभिन्न श्रेणियों में 50,000 पदों के लिए भर्ती प्रक्रिया शुरू की जाएगी। इसके अलावा, युवाओं को ग्रुप-डी की नौकरियां भी दी जाएंगी। मुख्यमंत्री की यह घोषणा हरियाणा में रोजगार के अवसर प्रदान करने और युवा पीढ़ी की आकांक्षाओं को पूरा करने के लिए सरकार द्वारा किए जा रहे प्रयासों का हिस्सा है। नायब सिंह हरियाणा कर्मचारी चयन आयोग के नए चेयरमैन हिम्मत सिंह को हरियाणा निवास में शपथ दिलवाने के बाद मीडिया से बातचीत कर रहे थे। मुख्यमंत्री ने कहा कि सरकारी नौकरियों के लिए पारदर्शी भर्ती प्रक्रिया की प्रणाली को जारी रखा जाएगा।

मुख्यमंत्री ने कहा कि वर्तमान राज्य सरकार युवाओं को पूरा मान-सम्मान दे रही है और जल्द ही सरकार 50,000 नए रोजगार के अवसर उपलब्ध करवाने जा रही है। उन्होंने इस बात पर बल देते हुए कहा कि सरकार ने अपने कार्यकाल के दौरान बिना किसी भेदभाव के पूरी तरह से योग्यता के आधार पर नौकरियां दी हैं और यह पारदर्शी भर्ती प्रक्रिया भविष्य में भी जारी रहेगी। उन्होंने कहा, 'यह गर्व की बात

है कि युवाओं का सरकार की कार्यप्रणाली में विश्वास बढ़ा है क्योंकि वे बिना किसी 'खर्ची-पर्ची' (रिश्वत और पक्षपात) के सरकारी नौकरियां हासिल कर रहे हैं, जो पिछली सरकारों में चलती थी।'

ग्रुप सी और ग्रुप डी श्रेणी के पदों के लिए सामाजिक-आर्थिक मानदंड के तहत अतिरिक्त 5 अंक देने पर पंजाब व हरियाणा हाई कोर्ट के फैसले को लेकर सवाल पूछा गया। इसके बारे में पूछे जाने पर मुख्यमंत्री ने कहा कि न्यायालय की पहली पीठ ने गरीब परिवारों के लोगों को लाभ पहुंचाने के उद्देश्य से इस मानदंड को सही ठहराया था। हालांकि, अगली पीठ का दृष्टिकोण अलग हो सकता है। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार उम्मीदवारों के हितों की रक्षा के लिए प्रतिबद्ध है। हम जल्द ही इस मामले को सुप्रीम कोर्ट में पेश करेंगे और युवाओं को न्याय सुनिश्चित करने के लिए इसकी पुरजोर वकालत करेंगे।

उद्धव की शिवसेना में फिर सेंध लगाएंगे शिंदे? 6 सांसदों के संपर्क में होने का दावा

मुंबई, एजेंसी। शिवसेना ने शनिवार को दावा किया कि शिवसेना (यूबीटी) के दो नवनिर्वाचित सांसद मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे के संपर्क में हैं। यहां एक संवाददाता सम्मेलन को संबोधित करते हुए शिवसेना के प्रवक्ता नरेश म्हस्के ने दलबदल रोधी कानून का हवाला देते हुए दोनों लोकसभा सदस्यों का नाम बताने से इनकार किया, लेकिन साथ ही यह भी कहा कि चार अन्य सांसद भी जल्द ही इन दोनों के साथ मिलकर शिंदे के नेतृत्व वाली पार्टी में शामिल हो जाएंगे।

ठाणे से नवनिर्वाचित सांसद म्हस्के ने कहा, जिस तरह से उद्धव ठाकरे ने एक विशेष समुदाय से वोट मांगे हैं, उससे लोकसभा के दोनों सदस्य नाखुश हैं। म्हस्के ने कहा कि उद्धव ठाकरे की शिवसेना के दो नवनिर्वाचित सांसद संपर्क में हैं तथा चार अन्य सांसद उनके साथ जुड़ेंगे और मनोनीत प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का समर्थन करेंगे। उनकी टिप्पणी शिवसेना नेता संजय राउत के इस दावे की पृष्ठभूमि में आई है कि

शिंदे गुट के कुछ विधायक और सांसद ठाकरे के साथ फिर से जुड़ने के इच्छुक हैं। एकनाथ शिंदे के नेतृत्व वाली शिवसेना ने राज्य की सात लोकसभा सीट जीतीं, जबकि ठाकरे गुट नौ सीट पर विजयी रहा। शिवसेना (यूबीटी) के नेता हमारी पार्टी में हो सकते हैं शामिलः एकनाथ शिंदे के समर्थक इससे पहले शिवसेना के विधायक संजय शिरसाट ने शुक्रवार को दावा किया कि अगले कुछ दिनों में प्रतिद्वंद्वी शिवसेना (यूबीटी) के कुछ नेता उनकी पार्टी में शामिल होंगे। उन्होंने शिवसेना (यूबीटी) के सांसद संजय राउत को उद्धव ठाकरे के इस धड़े में गिरावट की वजह भी बताया। शिरसाट ने पत्रकारों से कहा, ''शिवसेना (यूबीटी) के कुछ महत्वपूर्ण लोग 10 जून से पहले हमारी पार्टी में शामिल होंगे।'' लोकसभा चुनाव के बाद शिवसेना (यूबीटी) के कुछ नेताओं ने दावा किया था कि मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे की शिवसेना के पांच-सात विधायक शीघ्र ही पाला बदल लेंगे। इस चुनाव में महाराष्ट्र में विपक्षी गठबंधन ने सत्तारूढ़ गठबंधन से अच्छा प्रदर्शन किया है। शिरसाट ने उन्हें (शिवसेना यूबीटी के नेताओं को) उन विधायकों के नामों का खुलासा करने की चुनौती दी। उन्होंने कहा, '' यह खबर बस अपने विधायकों को पार्टी छोड़ने से रोकने के लिए फैलायी गयी थी।'' शिरसाट के दावे पर प्रतिक्रिया देते हुए शिवसेना (यूबीटी) के नेता सचिन अहीर ने कहा कि लोकसभा चुनाव आगे आने वाली चीजों का बस एक 'ट्रेलर' है।

अहीर ने कहा कि चुनाव के बाद न केवल शिंदे की अगुवाई वाली शिवसेना के, बल्कि अजित पवार के नेतृत्व वाली राकांपा के भी कुछ विधायक शिवसेना (यूबीटी) के संपर्क में हैं लेकिन उनकी पार्टी शायद ऐसे लोगों पर विचार नहीं करेगी। उन्होंने कहा, ''उन्हें (शिरसाट को) अपनी पार्टी के विषयों को देखना चाहिए। विधानसभा चुनाव जल्द होने वाले हैं और आपने (सत्तारूढ़ गठबंधन को) (शिवसेना में विभाजन) के परिणाम भुगते हैं।''

पाकिस्तानी मूल के व्यवसायी बोले- प्रधानमंत्री मोदी भारत ही नहीं, पूरे दक्षिण एशिया के लिए बेहतर नेता

वाशिंगटन, एजेंसी। पाकिस्तानी मूल के एक अमेरिकी व्यवसायी ने दुनिया की सबसे बड़ी लोकतांत्रिक प्रक्रिया के शांतिपूर्ण और सफल संचालन पर भारत के लोगों को बधाई दी और कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी सिर्फ भारत में ही नहीं बल्कि पूरे दक्षिण एशिया क्षेत्र में स्थिरता की गारंटी हैं।

पाकिस्तानी मूल के अमेरिकी व्यवसायी ने कहा, मोदी का नेतृत्व भारत की स्थिरता और भारत के भविष्य की गारंटी है। साजिद तरार ने कहा, मोदी के तीसरी बार सत्ता में आने से पाकिस्तान के लोगों को उम्मीद है कि भारत के साथ उनके रिश्ते बेहतर होंगे। भारत में आम चुनावों के सफल समापन पर बधाई देते हुए साजिद तरार ने कहा, यह भारतीय लोकतंत्र की ताकत और लचीलेपन का प्रमाण है। उन्होंने कहा, भारत का लोकतंत्र अमेरिका से भी ज्यादा मजबूत है। उधर पाकिस्तान के पूर्व सूचना व प्रसारण मंत्री फवाद चौधरी ने भी दोनों देशों के बीच अच्छे संबंधों की इच्छा जताई है और बिना वीजा यात्रा सुविधा शुरू होने की वकालत की है।

मोदी को चीन की बधाई पर विदेश मंत्रालय ने सधे शब्दों में कहा, शुक्रियाः देश के लोकसभा चुनावों के बाद नई सरकार के गठन की प्रक्रिया शुरू होने पर चीन ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को बधाई दी है। इसका विदेश मंत्रालय ने भी नपे-तुले शब्दों में शुक्रिया अदा किया है। प्रवक्ता रणधीर जायसवाल ने कहा, पीएम को बधाई देने के लिए चीन को धन्यवाद। आपसी सम्मान, हित, संवेदनशीलता के आधार पर भारत-चीन संबंधों को सामान्य बनाने का प्रयास करेंगे।

उड़ान भरते ही एयर कनाडा के विमान में से निकलने लगीं आग की लपटें

वॉशिंगटन, एजेंसी। अमेरिका के लॉस एंजेलिस में एक बड़ी घटना होते-होते बच गई। पेरिस जा रहे एयर कनाडा के एक विमान में उड़ान भरने के कुछ देर बाद ही आग लग गई। जैसे ही चालक दल को आग का पता लगा तो आनन-फानन में इमरजेंसी लैंडिंग कराई। इसका एक वीडियो सोशल मीडिया पर खूब वायरल हो रहा है।

बता दें, विमान में 389 यात्री और 13 क्रू मेंबर मौजूद थे। चालक दल की सतर्कता की वजह से एक बड़ी घटना को टाला जा सका। विमान बिना किसी नुकसान या हताहत के हवाईअड्डे पर वापस लौट आया।

कैसे हुई घटना?: बोइंग 777 वाइड-बॉडी विमान ने रात 12:17 बजे (टोरंटो समयानुसार) उड़ान भरनी शुरू की। उड़ान भरने के कुछ ही देर बाद देर रात 12 बजकर 39 मिनट विमान ने उड़ान भरना शुरू ही किया था कि हवाई यातायात नियंत्रक (एटीसी) ने विमान के दाहिने इंजन से चिंगारी निकलती देखी और तुरंत चालक दल के सदस्यों को इसकी

जानकारी दी। वहीं, लोगों ने इंजन से आग की चिंगारी निकलते हुए वीडियो बना लिया। इस घटना के बाद फ्लाइट के पायलट ने तत्काल पैन-पैन संकट का संकेत दिया, जिससे ग्राउंड पर इमरजेंसी टीम को संकेत मिला। पायलट ने तुरंत विमान को वापस लॉस एंजेलिस हवाईअड्डे की तरफ मोड़ दिया और सुरक्षित लैंडिंग कराई।

कब का मामला?: यह चौंका देने वाली घटना पांच जून की है। विमान में 389 यात्री और 13 क्रू मेंबर सवार थे। सभी यात्री और चालक दल के सदस्य सुरक्षित हैं। विमान के वापस आते ही आग बुझाई गई और एहतियाती कदम उठाए गए। विमान के इंजन में आग लगने की वजह अभी सामने नहीं आ सकी है। हादसे का कारण जानने के लिए जांच टीम बनाई गई है।

पहले भी सामने आ चुकी है ऐसी घटनाः इंजन में खराबी का कारण पता लगाने के लिए जांच की जा रही है। प्रभावित यात्रियों को दूसरी फ्लाइट में भेजने का इंतजाम किया गया। विमान की जांच की जाएगी और फिलहाल इसे सेवा से हटा दिया गया है। गौर करने वाली बात यह है कि पिछले दो हफ्तों में यह दूसरी घटना है, जहां एयर कनाडा के विमान को इंजन की समस्या के कारण वापस लौटना पड़ा है।

पीएम मेटे फ्रेडरिक्सन बोलीं- हमले से काफी दुखी हूं, राजनीति से प्रेरित अटैक का शक

वाशिंगटन, एजेंसी। डेनमार्क की प्रधानमंत्री मेटे फ्रेडरिक्सन पर हमला हो गया। डेनमार्क यूरोपीय देश है। हमले के बाद प्रधानमंत्री ने कहा कि वह इससे सदमें में जरूर हैं पर ठीक हैं। हमला राजनीति से प्रेरित बताया जा रहा है। डेनमार्क की मीडिया के अनुसार, हमला शुक्रवार को हुआ था। आरोपी को गिरफ्तार कर लिया गया है। अदालत ने आरोपी को 20 जून तक के लिए हिरासत में भेज दिया है। अभियोक्ता तारुह सेकेरोग्लू ने शनिवार को बताया कि हमला राजनीति से प्रेरित है और यह सिर्फ कल्पना मात्र नहीं है। पुलिस इसकी जांच कर रही है। फ्रेडरिकसन ने सोशल मीडिया पर कहा कि यह समय शांति बनाए रखने का है। कल की घटना से मैं काफी दुखी हूं और हैरान भी हूं। हालांकि, उनका कहना है कि वे ठीक हैं। उन्होंने अपने समर्थकों और चिंतकों को मुश्किल वक्त में साथ देने के लिए धन्यवाद कहा। उन्होंने कहा कि अभी वे परिवार के साथ रहना चाहती हैं। मीडिया के अनुसार, प्रधानमंत्री को मामूली चोट आई है। आरोपी मानसिक रूप से असंतुलित है और घटना के वक्त वह नशे में था। फ्रांस के राष्ट्रपति इमैनुएल मैक्रों ने यूरोपीय नेताओं के साथ मिलकर शनिवार को हमले की निंदा की। उन्होंने इसे अस्वीकार्य कहा।

व्हाइट हाउस के सामने 30 हजार फिलिस्तीन समर्थकों का प्रदर्शन

बाइडेन का खून से सना मुखौटा लेकर बोले- गाजा में मरे बच्चों की चीख इन्हें डराएगी

गाजा, एजेंसी। गाजा में इजराइल के हमलों के बीच शनिवार को अमेरिका में राष्ट्रपति के आधिकारिक निवास व्हाइट हाउस के बाहर 30 हजार फिलिस्तीन समर्थकों ने प्रदर्शन किया। लोग सिर पर हमास का पट्टा बांधकर फिलिस्तीन का झंडा लहराते नजर आए। इस दौरान प्रदर्शन कर रहे एक शख्स के हाथ में राष्ट्रपति बाइडेन का मुखौटा भी था, जो खून से सना हुआ था। प्रदर्शन कर रहे लोगों ने अमेरिका के झंडे में आग भी लगाई। लोगों के हाथ में कई बैनर और पोस्टर भी थे। इसमें बाइडेन पर इतिहास के गलत पक्ष में होने का आरोप लगाया गया। प्रदर्शनकारियों ने आजाद फिलिस्तीन के नारे लगाए। उन्होंने कहा कि गाजा पर बमबारी में जितने बच्चों की जान गई है, उनकी चीख आपको हमेशा डराती रहेगी। प्रदर्शनकारियों ने नेशनल पार्क के सर्विस रेंजर्स पर सामान भी फेंके। इसके अलावा वहां लगे स्टैच्यू को भी खंडित किया। उन्होंने इजराइल के लिए अमेरिका के समर्थन को खत्म करने की मांग की। विरोध प्रदर्शन को देखते हुए व्हाइट के पास सुरक्षा बढ़ा दी गई।

प्रदर्शनकारियों ने व्हाइट हाउस के सामने फिलिस्तीन का झंडा लहराया।

जहां एक तरफ व्हाइट हाउस के बाहर प्रदर्शन हो रहे हैं, वहीं दूसरी तरफ बाइडेन पिछले 4 दिन से फ्रांस की स्टेट विजिट पर हैं। दूसरे विश्व युद्ध के ऐतिहासिक दिन डी-डे की 80वीं सालगिरह से जुड़े कार्यक्रमों के लिए बाइडेन के अलावा सुनक और जिनपिंग भी फ्रांस पहुंचे थे। इजराइल और हमास में 8 महीने से जारी जंग के बीच प्रदर्शनकारी अमेरिका के अलग-अलग जगहों पर युद्ध को लेकर विरोध जताते नजर आते रहे हैं। अप्रैल में अमेरिका की 50 यूनिवर्सिटीज में महीने भर तक स्टूडेंट्स ने प्रोटेस्ट किया था। इस दौरान उन्होंने कैलिफोर्निया यूनिवर्सिटी की हैमिल्टन बिल्डिंग को भी कब्जे में ले लिया था। हालांकि, पुलिस ने 2 घंटे के अंदर इमारत को प्रदर्शनकारियों से छुड़ा लिया था। इस प्रदर्शन में

पुलिस ने 2 हजार से ज्यादा लोगों को गिरफ्तार किया था। इसके बाद करीब 1 हफ्ते पहले फिलिस्तीन समर्थकों ने न्यूयॉर्क के एक म्यूजियम पर कब्जा कर लिया था। इजराइल का समर्थन करना बंद करे। इसके अलावा यूनिवर्सिटीज उन कंपनियों से अलग हो जाएं, जो इजराइल से लाभ कमाती हैं। न्यूयॉर्क यूनिवर्सिटी के छात्रों की मांग थी कि यूनिवर्सिटी का तेल अवीव कैंपस बंद किया जाए, क्योंकि यहां फिलिस्तीनी छात्रों को एडमिशन नहीं दिया जाता है।

मुद्रक तथा प्रकाशक रंजीत राय द्वारा स्वामी आर.डी. प्रिंटर एंड पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड, प्लॉट नं. सी-16 एवं 17, रोड नं. 9, पाटलिपुत्रा इंडस्ट्रीयल एरिया, पटना-800013 के पक्ष में आर.डी. प्रिंटर एंड पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड प्रेस से मुद्रित एवं सी-20, एस.के. पुरी, नियर बसावन पार्क, पटना, बिहार-800013 से प्रकाशित संपादक- देवन प्रसाद

(नोटः प्रकाशित सभी लेखों आदि से संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं और किसी भी कानूनी वाद-विवाद का निपटारा पटना न्यायालय में ही किया जाएगा।) RNI. No. BIHHIN/2013/49676, Email: news@pratahkiran.com, patna@pratahkiran.com, 9212228045, 8130691216, 9971557129, 9430990555